राग-विराग

सम्पादक
रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

प्रकाशक
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

१९५३] [मूल्य ढाई रुपया

प्रथम संस्करण १९५३

मुद्रक और प्रकाशक

ज० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

भूमिका

'राग-विराग' नामी इस संग्रहमें उर्दूके कुछ ऐसे शृंखलाबद्ध या प्रबन्ध-काव्योंका संकलन किया गया है जो लाखों उर्दू पढ़नेवालोंमें मशहूर हो चुके हैं। प्रबन्ध-काव्य आम तौरसे मसनवीके रूपमें लिखे जाते हैं जिसमें हर दो पंक्तियाँ तुकान्त होती हैं। जब मुसलमान भारतमें आये तो फ़ारसी साहित्यकी चर्चा देशभरमें फैली। फ़ारसीमें मसनवी फ़िरदौसीके समयसे ही छन्द-रचनाका एक बहुत प्रिय और सुसंकृत अथवा अलंकृत माध्यम रही है। मलिक मुहम्मद जायसीके पद्मावतका साँचा और रूप फ़ारसी मसनवीके अनुसार है। पद्मावतने तुलसीदासके रामचरितमानसको भी प्रभावित किया। निबन्ध काव्य ही नहीं, हिन्दीमें तुकान्त कविता-की परम्पराको मज़बूत बनानेमें फ़ारसी कविताका बहुत बड़ा हाथ रहा है क्योंकि संस्कृत, पाली या चन्दबरदाईके रासोमें हमें तुकान्त कविता-नहीं मिलती या न मिलनेके बराबर है। फ़ारसी भाषा और उसका शब्द-कोष तुकान्त शब्दों या हमक़ाफ़िया अल्फ़ाज़से मालामाल है। सैकड़ों शेरके क़सीदे एक ही तुकमें कहे गये और एक-एक क़सीदेमें सौसे भी अधिक एक ही तुकके शब्द लाये गये। उर्दूमें फ़ारसी अरबीके हज़ारों तुकान्त शब्द तो आ ही गये अनेक हिन्दी शब्द भी जो फ़ारसी अरबी तुकान्त शब्दोंसे मेल खाते थे वे भी आ गये—जैसे आसमाँ-माँ-कहाँ,-जहाँ-गुलसिताँ-बाग़बाँ इत्यादि इत्यादि। इसी तरह ज़मीं, कहीं, जबीं, तुम्हीं, उठीं, इत्यादि।

मसनवीमें क्रम या सिलसिलेका कायम रहना बहुत ज़रूरी है, कभी-कभी यह इतना ज़रूरी है कि सैकड़ों पंक्तियोंमें अगर एक शेर बीचसे काट दिया जाय तो मतलब खब्त हो जाता है। मसनवीका विषय आम

तौरसे कोई कथा या कहानी होता है। कभी-कभी कथा या कहानी न होकर यह विषय नैतिक, अध्यात्मिक या प्रकृति-वर्णन तथा दृश्य-चित्रण होता है। इस संग्रहमें जो कविताएँ शामिल की गई हैं वे प्रायः छन्दबद्ध कहानियाँ हैं जिनकी शैली और शब्दावलीकी नर्मी, स्वाभाविकता, प्रवाह या रवानी, बयानकी सफ़ाई, बन्दिशकी चुस्ती, वर्णन-शक्ति और जिनका कथा-रस सबके सब बहुत रोचक हैं। कथा और वर्णनके सूक्ष्म अंशोंको बेलाग हल्के-फुल्के ढंगसे गूँथते चले जाना या बुनते चले जाना इन कवि-ताओंकी एक रोचक विशेषता है। जैसे भर्तृहरिने एक ही पुस्तकमें श्रृंगार, नीति, और वैराग्यके विषयोंपर श्लोकोंकी रचना की है इसी तरह 'राग-विराग'में प्रेम, रूप, वैराग्य, नीति, दृश्य-चित्रण, भाव और रसकी धूप-छाँह सब चीज़ें आपको मिलेंगी। मनोरंजन, उपदेश, कहानी और सोच-विचार सब कुछ इन कविताओंमें अनेक रंगों और प्रकारोंसे आपको नज़र आयेंगे।

—'फ़िराक़'

ये कवितायें कैसे पढ़ी जायं ?

जब इनमेंसे कोई कविता पढ़ना शुरू करें तो उसके छन्दके ताल-सम एवं झनकार और छन्दकी लयको पकड़िये। इसका ध्यान रखिये कि छन्दकी मात्राओं और छन्दके खटकोंके अनुसार निम्नलिखित मात्रायें कभी बढ़ाकर (दीर्घ स्वरसे) कभी घटाकर (लघु या ह्रस्व स्वरसे) पढ़ना ज़रूरी है:—

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

जहाँ इन्हें छोटा करके पढ़ना छन्दके अनुसार आवश्यक है वहाँ इनकी अलगसे मात्रा गिनी नहीं जाती जैसे—'दोहरा' में 'ओ' की मात्रा गिनी नहीं जाती यानी यह शब्द पाँच मात्राओंका नहीं बल्कि चार मात्राओंका माना जाता है। 'द' के उच्चारणमें ही 'ओ' का उच्चारण मिला दिया जाता है। ऐसा ही 'तेहरा' के उच्चारणमें भी करना पड़ता है। मिसालके तौरपर उर्दूकी निम्नलिखित पंक्तियोंको देखिये:—

न कुछ हम हँसके सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं
जो कुछ थोड़ा-सा सीखे हैं किसीके होके सीखे हैं

पहली पंक्तिमें दो बार 'के' शब्द आया है और दोनों स्थानोंपर यह शब्द एक मात्राका है यानी 'ए' की मात्राको ह्रस्व करके पढ़ना चाहिये। दूसरी पंक्तिमें 'सा' में 'आ' की मात्रा ह्रस्व है और 'थोड़ा-सा' बराबर है 'थोड़ा-स'के। लेकिन पहली और दूसरी दोनों पंक्तियोंमें 'सीखे' में 'ए' की मात्रा दीर्घ है और दूसरी पंक्तिमें 'होके' में 'के' की मात्रा ह्रस्व है।

तुम्हारी तहज़ीब अपने हाथोंसे आप ही ख़ुदकुशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक पं आशियाना बनेगा नापायदार होगा

पहली पंक्तिमें 'तुम्हारी' की 'ई' ह्रस्व, 'अपने' में 'ए' ह्रस्व, 'से' में 'ए' ह्रस्व, 'ख़ुदकुशी' और 'करेगी' में 'ई' और 'ए' दीर्घ। दूसरी पंक्ति

में 'जो' में 'ओ' ह्रस्व, 'शाखे' में 'ए' ह्रस्व, 'पै' में 'ऐ' ह्रस्व, 'बनेगा' में 'आ' ह्रस्व, 'ए' दीर्घ, बाक़ी शब्दोंमें हर स्वर दीर्घ।

'औ' की मात्रा कहाँ दीर्घ और कहाँ ह्रस्व करके पढ़नी चाहिये? ग़ालिबके इस मिसरेके :—

क्या खूब क़यामतका है गोया कोई दिन और

'और' शब्दमें 'औ' की मात्रा दीर्घ है लेकिन ग़ालिबके इस शेरके :—

तू और आराइशे-खमे-काकुल
मैं और अन्देशहाय दूर-ओ-दराज़

दोनों मिसरोंके 'और' शब्दमें 'औ' को ह्रस्व करके पढ़ना पड़ेगा। यहाँ और दो मात्राका शब्द हो जाता है और 'आ' या 'का' के बराबर हो जाता है। 'ऊ' की मात्रा दीर्घ है लेकिन ग़ालिबके इस मिसरेके :—

मैं हूं और अफ़सुर्दगीकी आरज़ू ग़ालिब कि दिल

'और' में 'औ' की मात्रा ह्रस्व है और 'हूँ' में 'ऊ' की मात्रा ह्रस्व है जिसे 'हुँ' पढ़ना चाहिये। 'ऐ' की मात्रा :—

कन्या अब कामिनी है होने वाली
आँखोंको नयन बनाने वाले दिन हैं

पहली पंक्तिमें 'है' में 'ऐ' की मात्रा ह्रस्व है दूसरी पंक्तिमें 'हैं' में दीर्घ है। 'बनाने' में 'ए' की मात्रा ह्रस्व है 'वाले' में दीर्घ। 'दिन हैं' में 'ऐ' की मात्रा दीर्घ है।

'यह' और 'वह' के शब्द जब उर्दू कवितामें आते हैं तो प्रायः 'ह' का उच्चारण नहीं किया जाता और ये शब्द बोले जाते हैं—'ये' और 'वो'। 'ये' में 'ए' की मात्रा कभी ह्रस्व होती है कभी दीर्घ, और 'वो' में भी 'ओ' की मात्रा कभी ह्रस्व कभी दीर्घ।

हिन्दीके जितने छन्द हैं उन सबमें उर्दू शायरी हो सकती है और एकाध छन्द छोड़कर सबमें सुन्दरसे सुन्दर उर्दू शायरी हो चुकी है।

इन छन्दोंके अतिरिक्त उर्दूमें अनेक ऐसे छन्दोंका भी प्रयोग किया गया है जिनमें खड़ी बोली बहुत सुगम और स्वाभाविक रूपसे ढल गई है। हिन्दी कवि यदि इन छन्दोंकी ओर ध्यान दें तो हिन्दी और उर्दू एक दूसरेके बहुत निकट आ जायँगी।

आजकल प्रयोगवादकी एक फुलझड़ी हिन्दी कवितामें कुछ लोगोंने छोड़ रखी है। इन लोगोंने प्रयोगवादकी जैसी मिसालें पेश की हैं उसे मैं "झखमारवाद" कहता हूँ। 'ज़ंजीरें टूटती हैं'[1] नामक पुस्तकमें आपको सच्चे प्रयोगवादकी कई एक सफलतम मिसालें मिलेंगी।

अत्फ़ और इज़ाफ़त

हमारी बोलीमें अधिकसे अधिक शब्द तद्भव और देशज हैं। इन शब्दोंके बाद जो शब्द सबसे अधिक हमारी बोलीमें घुल-मिल गये हैं वे फ़ारसीके शब्द हैं। फ़ारसी भी आर्यभाषा है और फ़ारसीके शब्द भी तत्सम् संस्कृत शब्दोंके तद्भव रूप हैं। फ़ारसीके बाद हमारी बोलीमें लगभग एक हज़ार सरल और सुगम अरबी शब्द घुल-मिल गये हैं। तत्सम् संस्कृत शब्द हमारी बोलीमें सबसे कम हैं। उर्दूमें फ़ारसी-अरबी शब्द अधिकतर फुटकर रूपमें आते हैं। कुछ शब्दोंके जोड़े होते हैं। संस्कृत और हिन्दीमें ये जोड़े शब्द विना किसी संयोजकके, समासके रूपमें आते हैं जैसे:—धन-धान्य, मान-मर्यादा। यहाँ तक कि जब एक शब्द संस्कृत या हिन्दीका हो और दूसरा फ़ारसी या अरबीका हो तब भी ये शब्द बिना किसी संयोजकके साथ-साथ आते हैं जैसे:—धन-दौलत, इज़्ज़त-पानी, रंग-रूप, खेल-तमाशा, बाल-बच्चे, शादी-ब्याह। लेकिन जब जोड़े शब्दोंमें या समासके रूपमें साथ लाये जानेवाले दोनों शब्द फ़ारसी या अरबीके हों तो 'ओ' का संयोजक बीचमें लाया जाता है 'ओ' का अर्थ है 'और'। हम गंगा-जमुना कहते हैं लेकिन फ़ारसीमें इसे 'गंग-ओ-जमन' कहते हैं, हम 'आग-पानी' कहते हैं, फ़ारसीमें इसे 'आतिश-ओ-आब' कहते

[1] यह पुस्तक भी इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेससे प्रकाशित हुई है।

हैं, इस 'ओ' के संयोजकको 'अत्फ़' कहते हैं यानी संज्ञाओंको मिलानेवाला। इन कविताओंमें अनेक स्थानोंपर 'अत्फ़' का प्रयोग किया गया है। 'अत्फ़'-को 'ओ' कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है यह बात छन्दपर निर्भर है।

यों तो समास आठ तरहके होते हैं और इन सबमें जो विभक्तियाँ छिपी हुई हैं वह आठ तरहकी होती हैं। समासके स्थानपर उर्दू कवि अक्सर 'इज़ाफ़त' का प्रयोग करते हैं जिसका सूचक 'ए' का अक्षर है जो कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है। इज़ाफ़तमें शब्दक्रम बदल जाता है जैसे हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिल कहेंगे, प्रेमीके हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिले-आशिक़ कहेंगे। हिन्दीमें इज़ाफ़तोंके अर्थ करनेका सीधा ढंग यह है कि पहले अन्तिम शब्दका अर्थ किया जाय और उसके बाद 'का' या 'के' लगाकर पहले आनेवाले शब्दका अर्थ किया जाय। इस तरह दर्दे-दिले-आशिक़का अर्थ हुआ आशिक़के दिलका दर्द। ग़ालिबके इस शेरकी पहली पंक्तिमें इज़ाफ़त और अत्फ़ दोनोंकी मिसालें साथ ही मिल जायँगी :—

क़ैदे-हयात-ओ-बन्दे-ग़म, अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों

"अर्थात् जीवनका बन्धन और ग़मका बन्धन वास्तवमें दोनों एक हैं इसलिए मौतसे पहले आदमीको ग़मसे मुक्ति या छुटकारा कैसे मिले।" पहली पंक्तिमें "क़ैदे और बन्दे" में 'ए' की मात्राएँ इज़ाफ़त हैं और दोनोंको ह्रस्व पढ़ना चाहिये। 'ओ' का शब्द 'अत्फ़' है जिसका अर्थ है और। अत्फ़को व करके न कभी लिखना चाहिये न कभी पढ़ना चाहिये। उपरोक्त पंक्तिमें 'ओ' को भी ह्रस्व पढ़ना चाहिये। लेकिन छन्दके अनुसार इज़ाफ़त में 'ए' की मात्रा और अत्फ़में 'ओ' की मात्रा दीर्घ करके भी पढ़ी जा सकती है।

विषय-सूची

	पृष्ठ
१. मुनाजाते-बेवा—मौलाना अलताफ़ हुसेन 'हाली'	१
२. जोगी—चौधरी ख़ुशीमुहम्मद 'नाज़िर'	४२
३. जोगन—'अख़्तर' शीरानी	५२
४. सुहागन बेवा—'जोश' मलीहाबादी	५८
५. आलमे-ख़याल—अहमद अली 'शौक़' क़िदवाई	६८
६. ज़हरे इश्क़—'शौक़' लखनवी	९७
७. हुस्ने-फ़ितरत—मुंशी गोरखप्रसाद 'इबरत'	१५२
८. गोरे ग़रीबाँ—अल्लामा तबातबाई	१९३

मुनाजाते-बेवा

ख़्वाजा अलताफ़ हुसैन 'हाली' पानीपती

यह मसनवी कोई कथानक नहीं है बल्कि एक विलाप और बन्दना है। जिसकी मिसाल उर्दू-हिन्दी साहित्यमें ढूँढनेसे भी नहीं मिलती। सफल उर्दू कविता प्राय: हमारी बोलचालको साँचेमें ढालकर रख देती है। इतनी सहज कविता करना बहुत कठिन काम है। हमारे देशमें विधवाओंका जीवन कितना दु:खमय होता है और उसकी कल्पना कितनी करुण होती है इसकी मिसाल इस कवितामें देखिए।

एक बात सोचनेकी है। पूरे भारतमें हज़ारों बरससे विधवाओंका जीवन कितना दु:खपूर्ण रहा है यह एक खुली हुई बात है। हमारी संस्कृतिकी, हमारे सामाजिक जीवनकी, हमारी सभ्यताकी यह कितनी बड़ी कमज़ोरी है कि संस्कृत साहित्यमें, पाली साहित्यमें अन्य प्राकृत साहित्योंमें हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली, मैथिल और दक्षिणी साहित्योंमें दो-चार सौ पंक्तियोंकी भी कोई कविता विधवा जीवनपर नहीं मिलती। 'हाली' पानीपतीने हमारी संस्कृतिपर कितना बड़ा एहसान इस कविताको लिखकर किया है, हमारी चेतनाको उसके दायित्वका कैसा ज्ञान कराया है इसका अन्दाज़ा इस मसनवीको बार-बार पढ़कर ही हो सकता है।

मैंने अभी यह कहा है कि उर्दूकी सफल कविताएँ प्राय: साँचेमें ढली हुई टकसाली बोलीका नमूना होती हैं। इस बातपर बहुत कम लोगोंका ध्यान गया है कि सरल भाषा और सहज शब्दावली मरियल भाषा नहीं होती, बड़ी सप्राण भाषा होती है। सहज भाषामें, अनेक शैलियोंकी सम्भावनाएँ छुपी हुई हैं। यह भी याद रहे कि सहज भाषामें अनेक सिलपट, फुसफुसी, बेजान, भदेस, नीरस, शैलियोंकी सम्भावनाएँ भी छुपी रहती हैं। नवटंकी, भारत भारती, मधुशाला, इत्यादिकी भाषाएँ भी सरल हैं

और यही हाल है चोखे चौपदोंका भी, लेकिन सरल भाषाके दोषमें शैलियोंकी जिन और जैसी सम्भावनाओंकी ओर मैंने इशारा किया है उनमें किन और कैसी सम्भावनाओंकी पूर्ति हो सकी है इसका फ़ैसला साहित्यके ज्ञानी ही कर सकते हैं और इसका भी फ़ैसला कि 'हाली' की इस कविता और 'शौक़' की मसनवी 'ज़हरेइश्क़' या इस संकलनकी दूसरी उर्दू कविताओंमें शैलीकी कैसी सम्भावनाएँ पूरी हो रही हैं। मैं इतना ही कहकर चुप हो जाऊँगा कि सहज भाषाको प्रभावशील भाषा बनाना सबका काम नहीं है। जबतक एक खड़ी बोलीकी आत्मा, कविकी वाक्य-क्षमतामें घुल-मिल न जाय तब तक सरल भाषा गँवारू भाषा होकर रहेगी।

'हाली' की यह कविता आप पढ़ते जाइये और इस बातका अन्दाज़ा लगाते जाइये या इस रहस्यको सोचते जाइये कि 'हाली' के सीनेमें कितना शरीफ़ दिल धड़क रहा है। 'हाली' की आत्मा कितनी निर्मल आत्मा है। 'हाली' के व्यक्तित्वमें मनुष्यता और भारतीयता किस तरह कूट-कूटकर भरी हुई है। 'हाली' की चेतनाकी लहरोंने 'मुनाजाते-बेवा' को एक गंगाजली बना दिया है। किस रुद्धकंठसे यह पंक्तियाँ 'हाली' गुनगुनाते चले जा रहे हैं। बेवापर ग़मका पहाड़ टूट पड़ता है लेकिन किस लिये-दिये हुए अन्दाज़में, किस रोक-थामके साथ, किस धीरजके साथ, किस कलात्मक साधनाका सबूत देते हुए यह कविता आगे बढ़ती है। हर शेर आँसू पी-पीकर कहा गया है। उर्दूकी किसी कवितामें भी स्वरकी ऐसी नर्मी, ध्वनिकी इतनी सरलता और मृदुलता, आवाज़का इतना धीमापन हमें नहीं मिलता। यह कविता क्या है विधवाके दिलकी धड़कनें हैं। विधवाके आँसू कितने पाक होते हैं, इसका पता 'हाली' की इस मसनवीसे चलता है। मालूम होता है कि शबनमकी तरह आँसूकी कई हज़ार बूँदें इस कवितामें बिखेरी हुई हैं और छन्दकी कोमल हवाओं या नर्म झोंकोंसे वे बूँदें किस तरह थरथरा-थरथरा और जगमगा-जगमगा उठती हैं। वैधव्यकी मूक करुणा किस नर्मीसे इस कवितामें झंकृत हुई है।

मुनाजाते-बेवा

(एक विधवाकी प्रार्थना)

ए सबसे अव्वल और आख़िर
जहाँ-तहाँ हाज़िर[1] और नाज़िर[2]
ए सब दानाओंसे[3] दाना[4]
सारे तवानाओंसे[5] तवाना[6]

ए समझे बूझे बिन सूझे
जाने पहचाने बिन बूझे
हवासे ऊँचे और परबतसे
चाँदसे और इस नीली छतसे

सबसे अनोखे सबसे निराले
आँखसे ओझल दिलके उजाले
ए अन्धोंकी आँखके तारे
ए लँगड़े लोगोंके सहारे

नातियोंसे छोटोंके नाती
साथियोंसे बिछुड़ोंके साथी
नाव जहाँकी खेनेवाले
दुखमें तसल्ली देनेवाले

[1]उपस्थित • [2]देखनेवाले [3]विद्वानोंसे [4]विद्वान [5]बलशालियोंसे [6]बलशाली

जब, अब, तब, तुझसा नहीं कोई
तुझसे हैं सब तुझसा नहीं कोई
जोत है तेरी जल और थलमें
बास है तेरी फूल और फलमें

हर दिलमें है तेरा बसेरा
तू पास और घर दूर है तेरा
राह तेरी दुशवार[1] और सकड़ी[2]
नाम तेरा रहगीरकी[3] लकड़ी

तू है ठिकाना मिसकीनोंका[4]
तू है सहारा ग़मगीनोंका[5]
तू है अकेलोंका रखवाला
तू है अँधेरे घरका उजाला

लागू[6] अच्छे और बुरेका
ख़्वाहाँ[7] खोटे और खरेका
ब्योपारी टोटे मारोंका
गाहक मन्दे बाज़ारोंका

सोचमें दिल बहलानेवाला
बिपतामें याद आनेवाला

ए बेवारिस[8] घरोंके वारिस!
बेबाज़ू बेपरोंके वारिस
बेआसोंकी आस है तू ही
जागते सोते पास है तू ही

[1]कठिन, दुर्गम [2]संकीर्ण [3]पथिककी [4]ग़रीबों, दुर्बलोंका
[5]दुखियोंका [6]साथी [7]चाहनेवाला [8]अनाथ

बसवाले हैं या बेबस हैं
तू नहीं जिनका वो बेकस हैं
साथी जिनका ध्यान है तेरा
दुसरायतकी[1] वाँ नहीं परवा

दिलमें है जिनके तेरी बड़ाई
गुनते हैं वह परबतको राई
बेकसका ग़मख़्वार[2] है तू ही
बुरी बनीका यार है तू ही

दुनिया दुखी यतीम और बेवा
तेरे ही हाथ इन सबका खेवा
तू ही डुबोये तू ही तिराये
तू ही यह बेड़े पार लँघाये

तू ही मरज़ दे तू ही दवा दे
तू ही दवा-दारूमें शफ़ा[3] दे
तू ही पिलाये ज़हरके प्याले
तू ही फिर अमरित ज़हरमें डाले

तू ही दिलोंमें आग लगाये
तू ही दिलोंकी लगी बुझाये
प्यारका तेरे पूछना क्या है
मारमें भी इक तेरी मज़ा है

ए रहमत[4] और हैबतवाले[5]
शफ़क़त[6] और दबाग़तवाले[7]

---

[1] किसी दूसरेके साथ की [2] दुख बटानेवाला [3] लाभ पहुँचाये, स्वास्थ्य प्रदान करे [4] दया [5] प्रताप [6] स्नेह [7] दबानेवाले

ए अटकल और ध्यानसे बाहर
जानसे और पहचानसे बाहर
अक़लसे कोई पा नहीं सकता
भेद तेरे हुक्मोंमें क्या-क्या
एकको तूने शाद[1] किया है
एकके दिलको दाग़[2] दिया है
उससे न तेरा प्यार कुछ ऐसा
इससे न तू बेज़ार[3] कुछ ऐसा
हर दम तेरी आन नई है
जब देखो तब शान नई है
याँ पछुवा है वाँ पुरवा है
घर घर तेरा हुकम नया है
फूल कहीं कुम्हलाये हुए हैं
और कहीं फल आये हुए हैं
खेती एककी है लहराती
एकका हरदम ख़ून सुखाती
एक पड़े हैं धनको डुबोये
एक हैं घोड़े बेचके सोये
एकने जबसे होश सँभाला
पड़ा न उसको रंजसे पाला
एकने इस जंजालमें आकर
चैन न देखा आँख उठाकर
मेंह कहीं दौलतका है बरसता
है कोई पानीतकको तरसता

[1] प्रसन्न [2] दुखका दाग़ [3] विरक्त

एकको मरने तक नहीं देते
एक उकता गया लेते-लेते
हाल ग़रज़ दुनियाका यही है
ग़म पहले और बाद ख़ुशी है
रंजका है दुनियाके गिला[१] क्या
तोहफ़ा[२] यही ले देके है याँका
याँ नहीं बनती रंज सहे बिन
रंज नहीं सब एकसे लेकिन
एकसे याँ रंज एक है बाला
एकसे है दर्द एक निराला
घाव है गो नासूरकी[३] सूरत
पर उसे क्या नासूरसे निस्बत
तप[४] वही दिक़की[५] शकल है लेकिन
दिक़ नहीं रहती जान लिये बिन
दिक़ हो वह नासूर हो—कुछ हो
दे न जो अब उम्मीद किसीको
रोज़का ग़म सहे क्योंकर कोई
आस न जब बाक़ी रहे कोई
तू ही कर इन्साफ़ ए मौला
कौन है जो बेआस है जीता
गो कि बहुत बन्दे हैं पुरअरमाँ[६]
कम हैं मगर मायूस हैं जो याँ
ख़्वाह दुखी है ख़्वाह सुखी है
जो है इक उम्मीद उसको बनी है

[१] शिकायत [२] उपहार [३] पुराना घाव [४] ज्वर [५] क्षय [६] अरमानवाले

खेतियाँ जिनकी खड़ी हैं सूखी
आस वो बाँधे बैठे हैं मेंहकी
घाटा जिनका असाढ़ हीमें है
सावनकी उम्मीद उन्हें है
डूब चुकी है जिनकी अगैती
देती है ढारस उनको पिछैती
एक है इस उम्मीद पै जीता
अब हुई बेटी अब हुआ बेटा
एकको जो औलाद मिली है
उसको उमंग अब शादियोंकी है
रंज है या क़िस्मतमें ख़ुशी है
कुछ है मगर इक आस बँधी है
ग़म नहीं उनको गो ग़मगीं हैं
जो दिल नाउम्मीद नहीं हैं
कालमें कुछ सख़्ती नहीं ऐसी
कालमें है जब आस समयकी
सहल है मौजोंसे छुटकारा
जब कि नज़र आता है किनारा
पर नहीं उठ सकती वो मुसीबत
आयेगी जिसके बाद न राहत[१]
शाद हो उस रहगीरका क्या दिल
मरके कटेगी जिसकी मंज़िल
उन उजड़ोंको कल पड़े क्योंकर
घर न बसेगा जिनका जनम भर

---

[१] सुख

उन बिछुड़ोंका क्या है ठिकाना
जिनको न मिलने देगा ज़माना
अब यह बला टलती नहीं टाली
मुझ पै है जो तक़दीरने डाली
आई बहुत दुनियामें बहारें
ऐश[1] की घर घर पड़ी पुकारें
पड़े बहुत बागोंमें झूले
ढाक बहुत जंगलमें फूले
गई और आई चाँदनी रातें
बरसीं खुलीं बहुत बरसातें
पर न खिली हरगिज़ न खिलेगी
वह जो कली मुरझाई थी दिलकी
आस हीका याँ नाम है दुनिया
जब न रही यह ही तो, रहा क्या
ऐसे बिदेसीका नहीं ग़म कुछ
जिसको न हो मिलनेकी क़सम कुछ
रोना उन बनवासियोंका है
देस-निकाला जिनको मिला है
हुक्मसे तेरे पर नहीं चारा
कड़वी मीठी सब है गवारा[2]
ज़ोर है क्या पत्तेका हवापर
चाहे जिधर ले जाय उड़ाकर
तिनका एक और सात समन्दर
जाय कहाँ मौजोंसे निकलकर

[1] आनन्द [2] मंज़ूर

क़िस्मत हीमें जब थी जुदाई
फिर टलती किस तरह यह आई
आजकी बिगड़ी हो तो बने भी
अज़लकी[1] बिगड़ी ख़ाक बनेगी
तू जो चाहे वह नहीं टलता
बन्देका याँ बस नहीं चलता
मारे और न दे तू रोने
थपके और न दे तू सोने
ठहरे बन आती है न भागे
तेरी ज़बरदस्तीके आगे
तुझसे कहीं गर भागना चाहें
बन्द हैं चारों खूँटकी राहें
तू मारे और ख़्वाह नवाज़े[2]
पड़ी हूँ मैं तेरे दरवाज़े
तुझीको अपना जानती हूँ मैं
तुझसे नहीं तो किससे कहूँ मैं
माँ ही सदा बच्चेको मारे
और बच्चा माँ-माँ ही पुकारे

ए मेरे ज़ोर और क़ुदरतवाले[3]
हिकमत[4] और हुकूमतवाले
मैं लौंडी तेरी दुखियारी
दरवाज़ेकी तेरे भिखारी

[1] अज़ल=वह समय जब सृष्टिका आरम्भ हुआ और लोगोंके भाग्य लिखे गये [2] सुख पहुँचाये [3] अधिकारवाले [4] विद्वत्ता

मौतकी ख़्वाहाँ[1], जानकी दुश्मन
जान पै अपने आप अजीरन
अपने परायेकी दुखियारी
मैके और ससुराल पै भारी

सहके बहुत आज़ार[2] चली हूँ
दुनियासे बेज़ार चली हूँ
दिलपर मेरे दाग़ हैं जितने
मुँहमें बोल नहीं हैं उतने

दुख दिलका कुछ कह नहीं सकती
इसके सिवा कुछ कह नहीं सकती
तुझ पै है रोशन सब दुख दिलका
तुझसे हक़ीक़त[3] अपनी कहूँ क्या

ब्याहके दम पाई थी न लेने
लेनेके याँ पड़ गये देने
ख़ुशीमें भी सुख पास न आया
ग़मके सिवा कुछ रास न आया

एक ख़ुशीने ग़म ये दिखाये
एक हँसीने गुल ये खिलाये
कैसा था यह ब्याह निनावाँ[4]
ज्योंही पड़ा उसका परछावाँ

चैनसे रहने दिया न जीको
कर दिया मलियामेट[5] ख़ुशीको
रो नहीं सकती तंग हूँ याँ तक
और रोऊँ तो रोऊँ कहाँ तक

[1] इच्छुक [2] कष्ट दुख [3] वास्तविकता [4] मनहूस [5] मटियामेट

हँसीसे दिल बहलाऊँ क्योंकर
ओसों प्यास बुझाऊँ क्योंकर
एकका कुछ जीना नहीं होता
एक न हँसता भला न रोता

लेटिये गर सोनेके बहाने
पाँयती कल है और न सिरहाने
जागिये तो भी बन नहीं पड़ती
जागनेकी आख़िर कोई हद भी

अब कल हमको पड़ेगी मरकर
गोर[१] है सूनी सेजसे बेहतर
बातसे नफ़रत कामसे दहशत[२]
टूटी आस और बुझी तबीअत

आबादी जंगलका नमूना
दुनिया सूनी और घर सूना
दिन भयानक और रात डरानी
यों गुज़री सारी ये जवानी

बहनें और बहनेलियाँ[३] मेरी
साथकी थीं जो खेलियाँ[४] मेरी
मिल न सकीं जी खोलके मुझसे
ख़ुश न हुईं हँस बोलके मुझसे

जब आईं रो धोके गईं वो
जब गईं बेकल होके गईं वो

[१] क़ब्र [२] भय घबराहट [३] सखियाँ, बहनोंके समान [४] खेलनेवाली

कोई नहीं दिलका बहलावा
आ नहीं चुकता मेरा बुलावा[1]
आठ पहरका ये है जलापा[2]
काटूँगी किस तरह रँडापा
थक गई मैं दुख सहते-सहते
थम गये आँसू बहते-बहते
खुली न दिलकी आग किसीपर
घुल गई जान अन्दर ही अन्दर
देखके जब जाना न किसीने
जानको फूँका दिलकी लगीने
दबी थी भूबलमें[3] चिनगारी
ली न किसीने ख़बर हमारी
क़ौममें वो ख़ुशियाँ ब्याहोंकी
शहरमें वो धूमें साहोंकी[4]
त्योहारोंका आये दिन आना
और सबका त्यौहार मनाना
वह चैत और फागुनकी हवाएँ
वो सावन भादोंकी घटाएँ
वह गर्मीकी चाँदनी रातें
वह अरमान भरी बरसातें
किससे कहूँ किस तरहसे काटीं
ख़ैर कटीं जिस तौरसे काटीं
चावके और ख़ुशियोंके समय सब
आते हैं ख़ुश कल जानको है जब

[1] ईश्वरके यहाँ बुलावा [2] जलना [3] राख [4] साहूकारों

रंजमें हैं सामान ख़ुशीके
और जलानेवाले जीके
घर बरखा और पिया बिदेसी
आइयो बरखा कहीं न ऐसी
दिन ये जवानीके कटे ऐसे
बाग़में पंछी क़ैद हो जैसे
रुत गई सारी सर टकराते
उड़ न सकी पर होते साते[१]
किसीने होगी कुछ कल पाई
मुझे तो शादी रास[२] न आई
आस बँधी लेकिन न मिला कुछ
फूल आया और फल न लगा कुछ
रह गया देकर चाँद दिखाई
चाँद हुआ पर ईद न आई
रुत बदली पर हुई न बरखा
बादल गरजा और न बरसा
फलकी ख़ातिर बरछी खाई
फल न मिला और जान गँवाई
रेतमें जर्रे देख चमकते
दौड़ पड़ी मैं भील समझके
चारों खूँट नजर दौड़ाई
पर पानीकी बूँद न पाई
ए दीन[३] और दुनियाके मालिक
राजा और परजाके मालिक

[१] पर होते हुए भी [२] शुभ सिद्ध न हुई [३] धर्म

बेपर और परदारके वाली[1]
ए सारे संसारके वाली

पूरब, पच्छिम, दक्खिन, उत्तर
बख़शिश[2] तेरी आम है घर-घर
प्यास लगी है सबके लिये याँ
ख़्वाह हो हिन्दू ख़्वाह मुसलमाँ

हो न अगर क़िस्मतने कमीकी
की नहीं बन्दी[3] तूने किसीकी
च्यूँटा, कीड़ा, मच्छर, भुनगा
कछुआ, मेंडक, सीप, और घोंघा

सारे पंछी और पखेरू
मोर, पपीहा, सारस, पेरू
भेड़ और बकरी, शेर और चीते
तेरे जिलाये हैं सब जीते

खुला है सबपर दर रहमतका
बरस रहा है मेंह नेमतका[4]
ख़ाकसे तूने बीज उगाये
फिर पौदे परवान[5] चढ़ाये

सीपको बख़्शी तूने दौलत
और बख़्शा मक्खीको अमरत[6]
लकड़ीमें फल तूने लगाये
और कूड़ेपर फूल खिलाये

[1] मालिक, स्वामी [2] देन [3] बन्द [4] नियामत, देन
[5] विकसित किये [6] अमृत, मधु

हीरा बख़्शा कानको तूने
मुश्क[१] दिया हैवानको तूने
जुगनूको बिजलीकी चमक दी
ज़र्रेको कुन्दनकी दमक दी

दरसे तेरे ए मेरे मौला
सब हैं निहाल[२] अदना और आला[३]
आम[४] है सबपर तेरी रहमत
हैं महरूम[५] मगर बदक़िस्मत

पेड़ हों छोटे या कि बड़े याँ
फ़ैज़[६] हवाका सब पै है यकसाँ[७]
जलते हैं जो हैं जलनेवाले
फलते हैं जो हैं फलनेवाले

जब हो अपनी ज़मीन ही कल्लर[८]
फिर इलज़ाम[९] नहीं कुछ मेंहपर
सबको तेरे इनआम[१०] थे शामिल
मैं ही न थी इनआमके क़ाबिल

गर कुछ आता बाँटमें मेरी
सब कुछ था सरकारमें तेरी
थी न कमी कुछ तेरे घरमें
नोनको तरसी मैं साँभर[११]में

राजाके घर पली हूँ भूकी
सदाबरतसे चली हूँ भूकी

[१] कस्तूरी [२] खुश [३] छोटे और बड़े [४] सबके लिये, सर्व साधारणके लिये [५] वंचित [६] लाभ पहुँचानेकी प्रवृत्ति [७] एकसा [८] बंजर [९] आरोप दोष [१०] इनाम पुरस्कार [११] सांभर झील जहाँसे नमक निकलता है

पहरों सोचती हूँ ये जीमें
आई थी क्यों मैं इस नगरीमें

होनेसे मेरे फ़ायदा क्या था
किस लिये पैदा मुझको किया था
आनके आख़िर मैंने लिया क्या
मुझको मेरी क़िस्मतने दिया क्या

नयन दिये और कुछ न दिखाया
दाँत दिये और कुछ न चखाया
जंदड़ी[१] दी और ख़ुशी न बख़्शी
दिल बख़्शा दिल-लगी[२] न बख़्शी

रही अकेली भरी सभामें
प्यासी रही भरी गंगामें
चैनसे जागी और न सोई
मैं न हँसी जी भरके न रोई

आके ख़ुशीसी चीज़ न पाई
जैसी आई वैसी न आई
खाया तो कुछ मज़ा न आया
सोई तो कुछ चैन न आया

फूल हमेशा आँखमें खटके
और सदाफल गलेमें अटके
हो न सकी कुछ दिलसे इबादत[३]
और न जमी कामों पै तबीयत

काम सँवारा कोई न याँका
और न किया धंधा कोई बाँका

[१] आत्मा [२] प्रेम [३] पूजा

काम आया याँ कोई न मेरे
और न मैं काम आई किसीके
क़िस्मतने जबसे मुँह मोड़ा
आदमियोंका हो गया तोड़ा
बाप और भाई, चचा-भतीजे
सब रखती हूँ तेरे करमसे
पर नहीं पाती एक भी ऐसा
जिसको हो मेरी जानकी परवा
नातियोंमें[१] शफ़क़त नहीं पाती
अपनोंमें अपनायत[२] नहीं पाती
घर है यह एक हैरतका नमूना
सौ घरवाले और घर सूना
जिसने ख़ुदाका ख़ौफ़[३] किया कुछ
आके कभी याँ पूछ लिया कुछ
सो ये ख़ुशीका दिलका है सौदा
ज़ोर किसीपर अब नहीं अपना
पर नहीं कुछ तक़सीर[४] पराई
अपनी ही क़िस्मतकी है बुराई
चैन गर अपनी बाँटमें आता
क्यों तू औरत ज़ात बनाता
क्यों पड़ते यह ग़मके पाले
क्यों होते औरोंके हवाले
आठ पहर दुःख क्यों ये उठाते
जीते ही जी क्यों हम मर जाते

[१] नातेदारों [२] अपनत्व [३] भय [४] क़सूर, अपराध

दुखमें नहीं याँ कोई किसीका
बाप न माँ भाई न भतीजा
सच ये किसी साईंकी सदा थी
"सुख सम्पतका हर कोई साथी"

तेरे सिवा ए रह्मके बानी[१]
कौन सुने यह रामकहानी
एक कहानी हो तो कहूं मैं
एक मुसीबत हो तो सहूँ मैं
हाल न हो दुश्मनका ऐसा
मेरा नाज़ुक हाल है जैसा
कोई नहीं लागू[२] अब मेरा
बाप न भाई, सास न ससुरा
आँखमें एक-एकके हूँ खलती
पर अपने बस मर नहीं सकती
माँ और बाप अजीज़[३] और प्यारे
बेकल हैं जीनेसे हमारे
रोके पलक नम[४] कर नहीं सकती
हँसके ग़लत ग़म कर नहीं सकती
रोइये तो सब रोते हैं घरके
रोने नहीं देते जी भरके
हँसिये तो हँसना ऐब है हमको
क्योंकि इलाही[५] काटिये ग़मको

[१] दयाके स्थापक [२] लगाव रखनेवाला [३] रिश्तेदार [४] गीली [५] ईश्वर

गर ससुरालमें जाती हूँ मैं
नहस-क़दम[1] कहलाती हूँ मैं
मैकेमें जिस वक़्त हूँ आती
रो रोकर हूँ सबको रुलाती
जबसे ये दिन क़िस्मतने दिखाया
तकता है जो है अपना-पराया
मेरा सदा हँसना और रोना
बैठना उठना जागना सोना
सोच में मेरे सारा घर है
मेरे चलन पर सब की नज़र है
आपको हूँ हर वक़्त मिटाती
पहनती अच्छा मैं हूँ न खाती
जानती हूँ नाज़ुक है ज़माना
बात है इक याँ ऐब लगाना
मोतीकीसी आब[2] है इज्ज़त
जाके नहीं आती फिर हुरमत[3]
मेंहदी मैंने लगानी छोड़ी
पट्टी मैंने जमानी छोड़ी
कपड़े महीनोंमें हूँ बदलती
इत्र नहीं मैं भूलके मलती
सुरमा नहीं आँखोंमें लगाती
बाल नहीं बरसों गुँधवाती
दो-दो चाँद नहीं सर धोती
अठवाड़ों कंघी नहीं होती

[1] मनहूस क़दमवाली　[2] पानी　[3] लाज इज्ज़त

कानमें पत्ते हाथमें कंगन
पहन चुकी सब जब थी सुहागन
पहुँचियोंका अरमान नहीं अब
चूड़ियोंका कुछ ध्यान नहीं अब
उड़ गईं सब दिलकी वो तरंगें
चाव रहे बाक़ी न उमंगें
आपको[१] याँ तक मैंने मिटाया
पर दुनियाको सब्र न आया
वह्मने[२] है एक-एकको घेरा
जब देखो तब ज़िक्र है मेरा
खींच चुका है मेरा मुक़द्दर
दाग़ बदीका मेरी जबींपर[३]
मिल जाऊँ गर ख़ाकमें भी मैं
बच न सकूँ तानोंसे[४] कभी मैं
सच अगले लोगोंने कहा है
"बद अच्छा बदनाम बुरा है"
जीनेसे घबरा गई हूँ मैं
इस दमसे तंग आ गई हूँ मैं
यूँ न बुरी इस जान पै बनती
माँ मुझको ऐ काश न जनती
रहते हम अनजान बलासे
दुनिया मुझसे मैं दुनियासे
ऐ बेआसरोंके रखवैया!
ए डूबे बेड़ोंके खिवय्या!

[१] अपनेको [२] भ्रम [३] माथे [४] व्यंग-वाणोंसे

कीजियो मेरी कश्ती बानी[१]
आ पहुँचा है डूबाओ पानी
अब तैरेगी तिराई तेरी
डूबी नाव दुहाई तेरी

ए अम्बरके चमकते तारो!
ए घरके दर और दीवारो!
ए जानी पहचानी रातो!
तनहाईकी[२] डरानी रातो!

ए नेक और बदके दरबानो
देखती आँखो, सुनते कानो!
एक दिन इस गन्दी दुनियासे
जाना है मालिकके आगे

बोझ हैं वाँ सब तुलनेवाले
पत्रे सबके हैं खुलनेवाले
जब वाँ पूछ हो मेरी तेरी
तुम सब दीजो गवाही मेरी

मैं नेकीका दम नहीं भरती
पाकी[३]का दावा नहीं करती
क्योंकि ख़तासे बच सकता है
जिसने कच्चा दूध पिया है

ख़्वाह वली[४] हो ख़्वाह रिशी हो
इससे रिहाई नहीं किसीको
गिनूँ अगर मैं अपनी ख़ताएँ
है ये यक़ीं[५] गिनतीमें न आएँ

[१]नाव पार लगानेका काम [२]एकान्त [३]पवित्रता [४]पहुँचे हुए फ़क़ीर [५]विश्वास

पर ये ख़ुदासे डरके हूँ कहती
मुँह पै ये आये बिन नहीं रहती
ख़्वाह बुरी थी ख़्वाह भली मैं
बातसे अपनी नहीं टली मैं

पड़ी थी जिस बेदर्दके पाले
हुई थी जिस बैरीके हवाले
नाम पै धूनी उसके रमाकर
आनको रक्खा जान गँवाकर

साथ न क़ौम और देसका छोड़ा
और न ख़ुदाके अह्दको[1] तोड़ा
आये अगर दुनियाको न बावर[2]
अब मुझे कुछ दुनियाका नहीं डर

मेरा निगहबाँ[3] और रखवाला
सबसे बड़ा है जाननेवाला

ए ईमानके रखनेवाले !
ए नीयतके परखनेवाले !
मैं नहीं रखती काम किसीसे
चाहती हूँ इन्साफ़ तुझीसे

हुक्म पै चलती तेरे अगर मैं
चैनसे करती उम्र बसर मैं
मानती गर मैं अक़्लका कहना
मुझको न पड़ता रंज यह सहना

कुछ न अदालतका था डरावा
और न मज़हबका अटकावा

[1] प्रतिज्ञा [2] विश्वास [3] रक्षक

है दस्तूर यही दुनियाका
आपसे अच्छा नाम ख़ुदाका
लेकिन हठ प्यारोंकी यही थी
मर्ज़ी ग़मख़्वारोंकी[१] यही थी
अपने बड़ोंकी रीत न छूटे
क़ौमकी बाँधी रस्म[२] न टूटे
हो न किसीसे हमको निदामत[३]
नाक रहे कुन्बेमें सलामत[४]
जान किसीकी जाय तो जाये
आनमें अपनी फ़र्क़ न आये
दम पै बने जो उसको सहूँ मैं
लोटती अंगारों पै रहूँ मैं
दर्द न हो दिलका कहीं ज़ाहिर
चुपके ही चुपके काम हो आख़िर
मर मिटूँ और कुछ मुँह पै न लाऊँ
जल बुझूँ और उफ़ करने न पाऊँ
घुट-घुटकर दम अपना गँवाऊँ
जल-जलकर आपेको बुझाऊँ
तुझ पै है रोशन ऐ मेरे मौला
वक़्त ये कैसा मुझ पै पड़ा था
बेड़ा था मँझधारमें मेरा
चार तरफ़ छाया था अँधेरा
थाह थी पानीकी, न किनारा
तेरे सिवा था कुछ न सहारा

[१] दुखमें साथ देनेवालों [२] रीति [३] पश्चाताप [४] बनी रहे

शर्म इधर दुनियाकी मुझे थी
फ़िक्र उधर उक़बाकी[1] मुझे थी
रोकने थे हमले मुझे दिलके
था मुझे जीना ख़ाकमें मिलके
नफ़्ससे[2] थी दिन-रात लड़ाई
दूर थी नेकी[3] पास बुराई
जान थी मेरी आनकी दुश्मन
आन थी मेरी जानकी दुश्मन
आन सँभाले जान थी जाती
जान बचाये आन थी जाती
तै करने थे सात समन्दर
हुक्म ये था, हाँ पाँव न हो तर[4]
कोयला चारों खूँट था फैला
हुकम यह था पल्ला न हो मैला
प्यास थी, लू थी और थी खरसा[5]
और दरियासे गुज़रना प्यासा
धूपकी थी पाले पै चढ़ाई
आग और गन्धककी थी लड़ाई
दर्द अपना किससे कहूँ क्या था
आके पहाड़ एक मुझ पै गिरा था
नफ़्ससे डर था मुझको बदीका
इसलिये हर दम थी यह तमन्ना[6]
मर जाऊँ या जिन्दा रहूँ मैं
तुझसे मगर शर्मिन्दा न हूँ मैं

---

[1] परलोककी [2] इंद्रियों [3] भलाई [4] गीला [5] सूखा, काल [6] कामना

जान बलासे जाये तो जाये
पर कहीं दीनी[१] बात न आये

की न किसीने मेरी ख़ुशी गो[२]
मैंने किया नाख़ुश न किसीको
बात किसीकी मैंने न टाली
अपने ही दमपर सबकी बला[३] ली

जान न समझा जानको अपनी
दिया न जाने आनको अपनी
क़ौल[४] पै अपने जमी रही मैं
हुई न डाँवाँडोल कभी मैं

दिल थामा आपेको सँभाला
साँस तलक मुँहसे न निकाला
और न अगर मैं करती ऐसा
क्योंकर करती और करती क्या

बन नहीं आती देससे भागे
कुछ नहीं चलती देसके आगे
कह गई सच एक राजकुमारी
"लाचारी परबतसे भारी"

ए अच्छे और बुरेके भेदी !
खोटेके और खरेके भेदी !
छिपी ढकीके खोलनेवाले !
बुरी भलीके तोलनेवाले !

[१] धर्मकी [२] यद्यपि [३] विपत्ति [४] वचन

भेद दिलोंके जाननेवाले !
पाप और पुनके जाननेवाले !
ऐब और गुन सब तुझ पै हैं रोशन
पाप और पुन सब तुझ पै हैं रोशन

ऐब न अपना तुझको जताना
है दाईसे पेट छिपाना
मैं नहीं आख़िर पाक बदीसे
बनी हूँ पानी और मिट्टीसे

तूने बनाया था मुझे जैसा
चाहिये था होना मुझे वैसा
बस हमें जितना तूने दिया है
इससे सिवा क़ुदरत हमें क्या है

कान और आँखें हाथ और बाज़ू
जिन-जिनपर था याँ मुझे क़ाबू
सबको बदीसे मैंने बचाया
सबको ख़ुदीसे[1] मैंने हटाया

उठते-बैठते रोका सबको
सोते जागते टोका सबको
हाथको हिलने दिया न बेजा
पाँवको चलने दिया न टेढ़ा

आँखको उठने दिया न इतना
जिससे कि पैदा हो कोई फ़ितना[2]
कानको रक्खा दूर बलासे
ऊपरी आवाज़ोंकी हवासे

[1] अहंकार [2] झगड़ा

रोकके यों और थामके आपा
मैंने यह काटा अपना रँडापा
एक न सँभला मेरा सँभाला
था बेताब[१] जो अन्दरवाला

हाल करूँ मैं दिलका बयाँ क्या
हाल है तुझसे दिलका निहाँ[२] क्या
धूप थी तेज और रेत थी तपती
मछली थी एक उसमें तड़पती

जान न मछलीकी थी निकलती
और न सरसे धूप ही टलती
गो दम भर इस दिलकी लगीने
ठंडा पानी दिया न पीने

तू है मगर इस बातका दाना
मैंने कहा दिलका नहीं माना
जोर था मेरा दिल पै जहाँ तक
मैंने सँभाला दिलको वहाँ तक

थामना दिलका काम था मेरा
और थमाना काम था तेरा
पकड़े अगर तू दिलकी खतापर
मैं राजी हूँ तेरी रजापर[३]

रख तकलीफ़में या राहतमें[४]
डाल जहन्नम या जन्नतमें

[१] व्याकुल [२] निहित, गुप्त [३] मरज़ी, इच्छा
[४] आराम

अब न मुझे जन्नतकी तमन्ना
और न ख़तरा अब दोज़ख़का
आयेगी जन्नत रास[१] कब उसको
जलनेमें जिसकी उम्र कटी हो
डर दोज़ख़का फिर उसे क्या है
जिसने रँडापा झेल लिया है
पर तुझसे एक अर्ज़ है मेरी
रद न हो गर दरगाहमें तेरी
जो क़िस्मतने मुझको दिखाया
ख़ुश नाख़ुश सब मैंने उठाया
मुझ नाचीज़की है क्या ताक़त
जो मुँहपर कुछ लाऊँ शिकायत
उम्र बहुतसी काट चुकी हूँ
यह दिन भी कट जायँगे ज्यूँ त्यूँ
अपने लिये कुछ कह नहीं सकती
पर यह कहे बिन रह नहीं सकती
मैं ही अकेली नहीं हूँ दुखिया
पड़ी है लाखोंपर यही बिपता
बसके बहुत याँ उजड़ गये घर
बनके हज़ारों बिगड़ गये घर
जलीं करोड़ों इसी लपटमें
पद्मों[२] फुँकीं इसी मरघटमें
बालियाँ[३] एक इक ज़ातकी लाखों
ब्याहियाँ एक इक रातकी लाखों

[१] फलेगी [२] सौ खरब [३] बालिकाएँ

हो गईं आख़िर इसी अलममें[1]
काट गईं उमरें इसी ग़ममें

सैकड़ों बेचारी मज़लूमें[2]
भोली, नादानें, मासूमें[3]
ब्याहसे अनजान और मँगनीसे
बनेसे[4] वाक़िफ़ और न बनीसे

माओंसे जो मुँह धुलवाती थीं
रो-रो माँगके जो खाती थीं
थपक-थपक थे जिनको सुलाते
घुड़क-घुड़क थे जिनको खिलाते

जिनको न शादीकी थी तमन्ना
और न मँगनीका था तक़ाज़ा
जिनको न आपेकी थी ख़बर कुछ
और न रँडापेकी थी ख़बर कुछ

भलीसे वाक़िफ़ थीं न बुरीसे
बिदासे मतलब था न बदीसे
रुख़सत चाले[5] और चौथीको[6]
खेल तमाशा जानती थीं जो

होश जिन्हें था रात न दिनका
गुड़ियोंकासा ब्याह था जिनका
दो-दो दिन रह-रहके सुहागन
जनम-जनमको हुई बिरोगन[7]

[1] दुख　[2] पीड़ित　[3] अबोध　[4] दूल्हा　[5] [6] विवाहकी रस्में　[7] वैरागिन

दूल्हाने जाना न दुल्हनको
दुल्हनने पहचाना न सजनको
दिल न तबीयत, शौक़ न चाहत[1]
मुफ़्त लगा ली ब्याहकी तोहमत[2]

शर्तसे पहले बाज़ी हारी
ब्याह हुआ और रहीं कुँआरी
सैलानी जब बाग़में आये
फूल अभी थे खिलने न पाये

फूल खिले जिस वक़्त चमनमें
जा सोये सैलानी बनमें
पीत न थी जब पाया पीतम
जब हुई पीत गँवाया पीतम

होशसे पहले हुई मैं बेवा
कब पहुँचेगा पार यो खेंवा
ख़ैरसे बचपनका है रँडापा
दूर पड़ा है अभी बुढ़ापा

उम्र है मंज़िल तक पहुँचानी
काटनी है भरपूर जवानी
शामके मुर्देका है यह रोना
सारी रात नहीं अब सोना

आई नहीं दुनियामें इलाही
ऐसी किसी बेड़े पै तबाही
आईं बिलकती गईं सिसकती
रहीं तरसती और फड़कती

[1] चाह, प्रेम [2] आरोप

कोई नहीं जो ग़ौर करे अब
नब्ज़पै उनकी हाथ धरे अब
दुख उनका आये और पूछे
रोग उनका समझे और बूझे

चोट न जिनके दिलपै लगी हो
वह क्या जानें दिलकी लगीको
बेदर्दोंसे पड़ा है पाला
तूही अब उनका है रखवाला

अपनी बीती है यह कहानी
अब यह धान रहे बिन पानी
ए ग़मख़्वार हर एक बेकसके[१]
हामी[२] हर आजिज़[३] बेकसके

है अपने आजिज़ बन्दोंपर
प्यार तेरा माँ-बापसे बढ़कर
जिसने लगीमें तुझको पुकारा
सामने तेरे हाथ पसारा

फिरा न ख़ाली इस चौखटसे
गया न प्यासा इस पनघटसे
किसको ज़मानेने है सताया
तू नहीं जिसके आड़े आया

उजड़े खेड़े[४] तूने बसाये
डूबे बेड़े तूने तराये
मज़लूमोंकी दादको[५] पहुँचा
क़ैदियोंकी फ़रियादको पहुँचा

[१] निस्सहाय [२] हिमायती [३] निरीह [४] बस्ती [५] दुख सुननेको

बंजर मुल्क आबाद करायें
और बरवे[1] आज़ाद करायें
आम रीते रह्‌मत जब ठहरी
दूर है फिर रह्‌मतसे तेरी

दाद हर एक मज़लूमको दे तू
और राडोंकी ख़बर न ले तू
औरत ज़ातका तनहा[2] जीना
हर दम ख़ूने-जिगरका पीना

घर बसनेकी आस न रहनी
सारी उम्र जुदाई सहनी
है वह बला जो सही न जाये
बिपता है जो कही न जाये

क़द्र उसकी या तू पहचाने
या जिसपर गुज़री हो वह जाने

ऐ ख़ाविन्द[3] ख़ुदावन्दोंके[4] !
मालिक ख़ाविन्द और बन्दोंके !
वास्ता अपनी ख़ाविन्दीका
सदक़ा अपनी ख़ाविन्दीका

तू ये किसीको दाग़ न दीजो
किसीको बेवारिस मत कीजो
कीजियो जो कुछ तेरी ख़ुशी हो
राँड मगर कीजो न किसीको

[1] बंजर भूमि [2] अकेले [3] मालिक, स्वामी
[4] मालिकों, स्वामियों

मसनद, तकिया, इज्जत, हुरमत
नौकर, चाकर, दौलत, हशमत[१]
चाँदी, सोना, नक़दी, ग़ल्ला
गहना, पाता, टूम[२] और छल्ला
साईं[३] बिन जो चीज़ है घरमें
ख़ाक है सब औरतकी नज़रमें
दिलकी ख़ुशी एक आसपै थी सब
सो वो हज़ारों कोस गई अब
फूल कुछ अब काँटोंसे नहीं कम
जन्नत भी हो तो है जहन्नम
बाग़ नज़रमें उसकी ख़िज़ां[४] है
आँखमें तारीक[५] उसकी जहाँ है
ऐश है उसके वास्ते मातम
ईद है उसके हक़में मुहर्रम[६]
जिस दुखियापै पड़े ये विपता
कर उसे तू पैवन्द ज़मींका
या औरतको पहले बुला ले
या दोनोंको साथ उठा ले
या ये मिटा दे रीत जहाँकी
जिससे गई परतीत यहाँकी
जिससे हुए दिल सैकड़ों बिस्मिल[७]
जिसने हज़ारों किये हैं घायल

[१] वैभव [२] गहना [३] पति, मालिक [४] पतझड़ [५] अँधेरा [६] अरबी महीनोंमें पहला महीना जब मुसलमान करबलाके शहीदोंका शोक मनाते हैं [७] घायल

जिसने कलेजे आगमें भूने
जिसने भरे घर कर दिये सूने
खौफ़ दिलोंसे खो दिये जिसने
शर्मसे दीदे धो दिये जिसने
क़ौमकी जिस बिन आन है जाती
देसकी जिसपर जान है जाती

जिसने किये दिल रह्मसे ख़ाली
रीत है जो दुनियासे निराली
क़ौमसे तू ये रीत छुड़ा दे
बन्दियोंकी बेड़ी ये तुड़ा दे
सह्ल और मुश्किल तुझको है यक्साँ
हमको है मुश्किल तुझको है आँसाँ
रंज और दुख क़ब्ज़ेमें है तेरे
चैन और सुख क़ब्ज़ेमें है तेरे

हिलते हैं पत्ते तेरे हिलाये
खिलते हैं ग़ुंचे तेरे खिलाये
मुट्ठीमें हैं तेरी हवाएँ
क़ाबूमें हैं तेरे घटाएँ
तुझसे है दरियाओंकी रवानी
तेरे बहाये बहते हैं पानी
झील, समन्दर, पर्वत, राई
कहनेमें है सब तेरे ख़ुदाई

नाता, रिश्ता, निस्बत, शादी
सोग, रँडापा, क़ैद, आज़ादी
क़ौमकी रीतें देसकी रस्में
क्या है वो जो तेरे नहीं बसमें

काम कोई मुश्किल नहीं तुझको
एक ये क्या, गर तेरी ख़ुशी हो
सोत लगे पत्थरसे निकलने
नाव लगे रेतीमें चलने

ए इज़्ज़त और अज़मतवाले !
रहमत और अदालतवाले[१] !
दुखड़ा तुझसे ये कहना दिलका
एक बशरीयतका[२] है तक़ाजा
दिलपै है जब बर्छी कोई चलती
आह कलेजेसे है निकलती
जब कोई दुख याद आ जाता है
जी बेसाख़्ता[३] भर आता है

वर्ना है इस दुनियामें धरा क्या
ख़्वाबकासा एक है ये तमाशा
दुखसे है याँके घबराना क्या
सुखपै है यांके इतराना क्या
ऐशकी याँ मुहलत है न ग़मकी
सबपै नुमायश है कोई दमकी
आनी-जानी चीजें हैं खुशियां
चलती फिरती छावँ हैं अरमां

मँगनी, ब्याह, बरात और रुख़सत
मेल मिलाप सुहाग और संगत
हैं दो दिनके सब बहलावे
आगे चलकर हैं पछतावे

[१] न्याय करनेवाले [२] मानवता [३] अनायास

रेतकीसी दीवार है दुनिया
ओछेकासा प्यार है दुनिया
बिजली जैसी चमक है इसकी
पल दो पलकी चमक है उसकी

पानीकासा है ये पुचारा
जुगनूकासा है चमकारा
आज है याँ जंगलमें मंगल
कल सुनसान पड़ा है जंगल

आज है मेला हर दम दूना
और कल गाँव पड़ा है सूना
आज है रखनेकी तैयारी
और है कल चलनेकी बारी

आज है पाना कल है खोना
आज है हँसना कल है रोना
कभी है बाधा कभी है घाटा
कभी ज्वार और कभी है भाटा

हार कभी और जीत कभी है
इस नगरीकी रीत यही है
साथ सुहाग और सोग है याँका
नावकासा संजोग है याँका

ख़ुशीमें ग़म याँ मिला हुआ है
अमरितमें बिस घुला हुआ है
सैरको जो इस बाग़में आयें
दुखके फलको हाथ लगायें

यहाँ हर फल इन्द्रायनका[१] है
देखनेसे चखनेमें बुरा है
ऐश जिन्होंने सदा उड़ाये
वो भी हैं आख़िरको पछताये

रहे हैं गिरकर चढ़े हैं जो यहाँ
घटे हैं आख़िर बढ़े हैं जो यहाँ
जो ब्याहे वो हैं पछताते
बिन ब्याहे हैं ब्याह मनाते

इस फलका है यही परेखा
जो नहीं चक्खा वही है मीठा
ख़ुश न हों ख़ुशियोंके मतवाले
हैं ये नशे सब उड़नेवाले

ग़मकी घटा आती है गरजती
घड़ीमें यहाँ घड़ियाल है बजती
रहगीरोंका बँधा है तांता
एक आता है एक है जाता

जो आये हैं उनको है जाना
जो गये उनको फिर नहीं आना
ख़्वाह हो राँड और ख़्वाह सुहागन
मौत है सबकी जानकी दुश्मन

एक है गो आज एकसे बेहतर
मर गईं जब दोनों हैं बराबर

[१] इन्द्रायन—एक लता जिसका लाल फल देखनेमें सुन्दर पर खानेमें बहुत कड़वा होता है।

और कोई गर इन्साफ़से देखे
मरके उसे निस्बत नहीं इससे
ऐश गई वो छोड़के याँके
क़ैद गई ये काटके याँसे
इसको पड़ी कल उसकी गई कल
ये गई हलकी वो गई बोझल

इसका दिल इस दुनियासे उठाना
है नाख़ुनसे गोश्त छुटाना
जान ये आसां देती है ऐसी
बू है निकलती फूलसे जैसी
ग़म हो ग़रज़ या ऐश हो कुछ हो
है हमें जाना छोड़के सबको
तेरे सिवा याँ ए मेरे मौला
कोई रहा है और न रहेगा

पड़ी थी सूनी जब ये नगरिया
तेरी ही थी याँ खड़ी अटरिया
फिर ये नगरिया उजड़के सारी
तेरी ही रह जायेगी अटारी
था न कुछ आगे तेरे सिवा याँ
और रहेगा कुछ न सदा याँ
याँ कोई दिन दुख पाया तो क्या
और कोई दम सुख पाया तो क्या

अब न मुझे कुछ रंजकी परवा
और न आसाइशकी[१] तमन्ना

[१] आराम

चाहती हूँ एक तेरी मुहब्बत
और नहीं रखती कोई हाजत[१]
घूँट एक ऐसा मुझको पिला दे
तेरे सिवा जो सबको भुला दे
आये किसीका ध्यान न जीमें
कोई रहे अरमान न जीमें
फ़िक्र हो अच्छीकी न बुरीकी
तेरे सिवा धुन हो न किसीकी
कोई जगह इस दिलमें न पाये
याद कोई भूलेसे न आये
सीना ये तुझसे भरा हो सारा
मीत समाये इसमें न प्यारा
दिलने बहुत याँ मुझको सताया
मौतका बरसों मज़ा चखाया
ख़्वाबमें देख एक स्वांग निराला
आगमें जीते जी मुझे डाला
मेरा और अपना चैन गँवाया
आप जला और मुझको जलाया
उठ नहीं सकते मुझसे अब एक दम
ये दुनियाके नाशुदनीग़म[२]
दिलमें लगन बस अपनी लगा दे
सारे ग़म अपने ग़ममें खपा दे
ग़ैरके रिश्ते तोड़ दे सारे
दिलके फफोले फोड़ दे सारे

[१] आवश्यकता
[२] जो न होने चाहिये

जब तूने तनहा किया है पैदा
तू मुझे बंधुवा[1] कर न किसीका
वाँसे अकेली आई हूँ जैसी
वैसी ही याँसे जाऊँ अकेली
साथ कोई ग़म लेके न जाऊँ
तेरे सिवा खो दूँ जिसे पाऊँ

दिल न फिरे दुनियामें भटकता
कोई रहे काँटा न खटकता
जीसे निशाँ प्यारोंका मिटा दूँ
प्यारके मुँहको आग लगा दूँ
तू ही हो दिलमें तू ही ज़बाँपर
मारके जाऊँ लात जहाँपर
पाऊँ तुझे एक-एकको गँवाकर
ख़ाकमें जाऊँ सबको मिलाकर

[1] बँधा हुआ, पराधीन

जोगी

चौधरी ख़ुशीमुहम्मद 'नाज़िर'

इस कविताका लेखक कश्मीरमें बहुत दिनों रहा है। उर्दू कवितामें दृश्य-वर्णन या प्रकृति-वर्णन कितना रंगारंग और भरपूर है इसपर बहुत लोगोंका ध्यान अभी नहीं गया है। इस संबंधमें एक महत्त्वपूर्ण बात केवल उर्दू और संस्कृत कवितापर लागू होती है। जिस तरह संस्कृतके कवि भारतके अनेक प्रान्तों या प्रदेशोंके रहनेवाले थे उसी तरह उर्दू कवि भी केवल उत्तर प्रदेशमें नहीं भारतके अनेक प्रदेशोंमें रहे हैं। और जिस तरह इस विस्तृत भारत देशके अनेक स्थानीय चित्र संस्कृत कविताके प्रकृति-वर्णनमें मिलते हैं कश्मीरसे रासकुमारी तक वैसे ही चित्र उर्दू कवितामें भी मिलते हैं।

इस कवितामें कश्मीरका प्रकृति-चित्रण जिस सफल ढंगसे हुआ है वह एक अद्वितीय वस्तु है। जंगल, पहाड़, गुफ़ाएँ, वनस्पति, आकाश, बादल, बर्फ़िस्तान, पक्षी, जोगीकी कुटी, सभी जीती जागती तस्वीरें आँखोंके सामने फिर जाती हैं। मालूम होता है हमें किसीने उठाकर कश्मीरकी घाटीमें बिठा दिया है। इस कविताकी ये असाधारण सफलता है।

सरल शैली इस कवितामें एक ऐसी छटा दिखाती है जो इस संकलन-की दूसरी कविताओंकी सरल शैलीसे बिल्कुल अलग है। सरलता और स्वाभाविकता प्रसंग और परिस्थितिके अनुसार और अनेक प्रभावसे अनेक रूप धारण कर लेती हैं। इस कवितामें नर्मी, सरलता, ओज, उभार और पंक्तियोंका उमड़ते चले आना, रवाँ-दवाँ बयान, एक ख़ास समा बाँध देता है। कश्मीरकी वादी और उसके वातावरणकी आत्मा छन्दमें घुल

गई है। पूरा दृश्य शब्दोंमें तरलित होकर इस तरह उभरता है जैसे कुहरेपर धूप पड़नेसे कोई दृश्य उभरे या बहते हुए पानीकी लहरोंसे कोई दृश्य ऊपर उठता चला आए। पूरी कविता एक ऐसा दर्पण है जिसमें कश्मीरकी प्राकृतिक छटा झलकियाँ मार रही है। ऐसी स्वाभाविक शैली बड़े सौभाग्यसे हाथ आती है।

जोगीका दुनियाको छोड़कर वैराग्य धारण करना, एक दुनियादारका उससे वार्त्तालाप, प्रेममें डूबी हुई बहस, सांसारिक जीवनकी समालोचना, दुनियामें छल कपटका बाज़ार, झूठ और स्वार्थका बोलबाला, ये सब बातें बहुत बेलाग ढंगसे इस कवितामें आ गई हैं। यह सच है कि वर्त्तमान प्रगतिशील विचारधारा इस कवितामें नहीं मिलेगी जिसके अनुसार दुनिया छोड़कर वैराग्य धारण करनेके बदले दुनिया और दुनियाके जीवनको परिश्रम करके और क्रान्तिकारी सहयोग करके बदला जा सकता है। ऐसा करके दुनियावी जीवन और कश्मीरकी घाटीमें प्रकृति सौन्दर्यका आनन्द लेना दोनों सबके लिए सम्भव बनाए जा सकते हैं। लेकिन ये कविता भी लगभग पचास बरस पहलेकी है। उस समय दुनियाके मायाजालसे भाग निकलना ही मुक्तिका साधन माना जाता था। रूस और चीनकी क्रान्तियोंके बाद ही यह आत्मविश्वास मनुष्यको प्राप्त हुआ कि मायाजालके शेषनागको मनुष्यके हाथ नाथ सकते हैं और सांसारिक जीवन तथा निर्जन प्राकृतिक दृश्य दोनोंको आदमीकी जागीर बनाया जा सकता है।

यह कविता इस बातका जगमगाता हुआ नमूना है कि खड़ी बोलीको सहजतम और सरलतम रखते हुए भी उसके ठेठ-से-ठेठ रूपको भी दृश्य चित्रणमें किस तरह काममें लाया जा सकता है। इस कविताको पढ़ते हुए हम लहरें मारते हुए छन्दके बहावमें बहने लगते हैं। मालूम होता है कि हम कश्मीरकी किसी निर्मल ओर शीतल झीलमें तैरते चले जा रहे हैं।

जोगी

कल सुब्हके मतलए-ताबाँसे[1] जब आलम[2] बुक़्क़ए-नूर[3] हुआ
सब चाँद सितारे माँद हुए ख़ुरशीदका नूर ज़हूर[4] हुआ
मस्ताना हवाए-गुलशन थी जानाना हवाए-गुलबन थी
हर वादी वादिए-ऐमन[5] थी हर कोह पै जलवए-तूर[6] हुआ
जब बादे-सबा[7] मिज़राब[8] बनी हर शाख़े-निहाल[9] रुबाब[10] बनी
शमशाद-ओ-चनार[11] सितार हुए हर सर्वो-समन[12] तम्बूर[13] हुआ
सब तायर[14] मिलकर गाने लगे मस्ताना वो तानें उड़ाने लगे
अश्जार[15] भी वज्दमें[16] आने लगे गुलज़ार भी बज़्मे-सरूर[17] हुआ
सब्ज़ेने बिसात बिछाई थी और बज़्मे-निशात[18] सजाई थी
बनमें गुलशनमें आँगन में फर्शे-संजाब-ओ-समूर[19] हुआ
था दिलकश मंज़रे-बाग़े-जहाँ और चाल सबाकी मस्ताना
इस हालमें एक पहाड़ीपर जा निकला 'नाज़िर' दीवाना
चीलोंने[20] झंडे गाड़े थे परबतपर छावनी छाई थी
थे ख़ेमे डेरे बादलके कोहरेने क़नात लगाई थी

[1] चमकते आकाश [2] दुनिया [3] चमक उठी [4] प्रकट [5] ऐमनकी घाटी, वह स्थान जहाँ मूसाने देववाणी सुनी [6] तूरका जलवा, तूर पहाड़पर मूसाको ईश्वरके दर्शन हुए [7] प्रभात समीर [8] सितारके समान एक बाजा बजानेका यंत्र [9] पेड़की शाखा [10] सितार जैसा बाजा [11] एक पेड़ [12] पहाड़ी पेड़ [13] तंबूरा [14] पक्षी [15] वृक्ष [16] मस्ती [17] ख़ुशीकी महफ़िल [18] आनन्द मंडली [19] बहुत नर्म खालें जो बिछानेके काम आती हैं [20] पहाड़ी वृक्ष, जिसे चीड़ भी कहते हैं

याँ बर्फ़के तूदे[1] गलते थे चाँदीके फ़वारे चलते थे
चश्मे सीमाब[2] उगलते थे नालोंने धूम मचाई थी
एक मस्त क़लन्दर जोगीने परबतपर डेरा डाला था
थी राख जटामें जोगीकी और अंग भभूत रमाई थी
था राखका जोगीका बिस्तर और राखका पैराहन[3] तनपर
थी एक लँगोटी ज़ेबे-कमर जो घुटनों तक लटकाई थी
सब ख़ल्क़े-ख़ुदासे[4] बेगाना वो मस्त क़लन्दर दीवाना
बैठा था जोगी मस्ताना आँखोंमें मस्ती छाई थी
जोगीसे आँखें चार हुईं और झुककर हमने सलाम किया
तीखे चितवनसे जोगीने तब 'नाज़िर' से ये कलाम किया

क्यों बाबा नाहक़ जोगीको तुम किसलिये आके सताते हो
हैं पंख पखेरू बनबासी तुम जालमें इनको फँसाते हो
कोई झगड़ा दाल चपातीका, कोई दावा घोड़े हाथीका
कोई शिकवा संगी साथीका तुम हमको सुनाने आते हो
हम हिर्स-ओ-हवाको[5] छोड़ चुके उस नगरीसे मुँह मोड़ चुके
हम जो ज़ंजीरें तोड़ चुके तुम लाके वही पहनाते हो
तुम पूजा करते हो धनकी हम सेवा करते हैं साजनकी
हम जोत जगाते हैं मनकी तुम उसको आके बुझाते हो
संसारसे याँ मुख फेरा है मनमें साजनका डेरा है
याँ आँख लड़ी है पीतमसे तुम किससे आँख मिलाते हो

यूँ डाँट डपटकर जोगीने जब हमसे ये इर्शाद[6] किया
सर उसके झुकाकर चरनोंपर जोगीको हमने जवाब दिया

[1] ढेर [2] पारा [3] वस्त्र [4] दुनिया और दुनियावालों
[5] माया-मोह [6] कहा

हम हैं परदेसी सैलानी यूँ आँख न हमसे चुरा जोगी !
हम आये हैं तेरे दर्शनको चितवनपर मैल न ला जोगी !
आबादीसे मुँह फेरा क्यों, जंगलमें किया है डेरा क्यों ?
हर महफ़िलमें हर मंज़िलमें हर दिलमें है नूर ख़ुदा जोगी !
क्या मंदिरमें क्या मस्जिदमें सब जलवा है वज्हुल्लाका[१]
परबतमें नगरमें सागरमें हरि उतरा है हर जा जोगी !
जी शह्रमें ख़ूब बहलता है वाँ हुस्न पै इश्क़ मचलता है
वाँ प्रेमका सागर चलता है चल दिलकी प्यास बुझा जोगी !
वाँ दिलका ग़ुंचा खिलता है गलियोंमें मोहन मिलता है
चल शह्रमें शंख बजा जोगी, बाज़ारमें धूनी रमा जोगी !
फिर जोगीजी बेदार हुए इस छेड़ने इतना काम किया
फिर इश्क़के उस मतवालेने ये वहदतका[२] एक जाम दिया

इन चिकनी चुपड़ी बातोंसे मत जोगीको फुसला बाबा !
जो आग बुझाई जतनोंसे फिर इस पै न तेल गिरा बाबा !
है शह्रोंमें ग़ुल शोर बहुत और काम क्रोधका ज़ोर बहुत
बसते हैं नगरमें चोर बहुत साधूकी है बनमें जा बाबा !
है शह्रमें शोरिश नफ़सानी[३] जंगलमें है जलवा रूहानी[४]
है नगरी डगरी कसरतकी बिन वहदतका दरिया बाबा !
हम जंगलके फल खाते हैं चश्मोंसे प्यास बुझाते हैं
राजाके न द्वारे जाते हैं परजाकी नहीं परवा बाबा !
सरपर आकाशका मंडल है धरती पै सुहानी मख़मल है
दिनको सूरजकी महफ़िल है शबको तारोंकी सभा बाबा !

[१] ईश्वर [२] एकता [३] ऐन्द्रिक [४] आध्यात्मिक

जब झूमके याँ घन आते हैं मस्तीका रंग जमाते हैं
चश्मे तम्बूर बजाते हैं गाती है मलार हवा बाबा !
जब पंछी मिलकर गाते हैं पीतमके सन्देस सुनाते हैं
सब बनके बिरिछ झुक जाते हैं थम जाते हैं दरिया बाबा !
है हिर्स-ओ-हवाका ध्यान तुम्हें और याद नहीं भगवान तुम्हें
सिल, पत्थर, ईंट, मकान तुम्हें देते हैं ये राह भुला बाबा !
परमातमाकी वो चाह नहीं और रूहको दिलमें राह नहीं
हर बातमें अपने मतलबके तुम गढ़ लेते हो खुदा बाबा !
तन-मनको धनमें लगाते हो हरि नामको दिलसे भुलाते हो
माटीमें लाल गँवाते हो तुम बन्दए-हिर्स-ओ-हवा बाबा !
धन दौलत आनी जानी है ये दुनिया रामकहानी है
ये आलम आलमे-फ़ानी[१] है बाक़ी है जाते-खुदा बाबा !

(२)

तरानए-वहदत[२]

जबसे मस्ताने जोगीका मशहूरे-जहाँ अफ़साना हुआ
उस रोजसे बन्दए-नाजिर भी फिर बज्ममें[३] नग़मा-सरा न[४] हुआ
कभी मन्सब-ओ-जाहकी[५] चाट रही कभी पेटकी पूजा पाट रही
लेकिन यह दिलका कँवल न खिला और ग़ुंचए-ख़ातिर वा[६] न हुआ
कहीं लाग रही, कहीं पीत रही, कभी हार रही कभी जीत रही
इस कलजुगकी यही रीत रही कोई बन्दसे[७] ग़मकी रिहा न हुआ
यूँ तीस बरस जब तेर[८] हुए हम कारे-जहाँसे[९] सेर[१०] हुए
था अहदे-शबाब[११] सराबे-नजर वो चश्मए-आबे-बक़ा[१२] न हुआ

[१] मृत्यु लोक [२] एकताका तराना [३] सभामें [४] गीत गा न सका [५] पद, पदवी [६] वा=खुलना [७] बन्धनसे [८] पूरे हुए [९] दुनियाके काम [१०] तृप्त होना, अघाना [११] जवानीकी अवस्था [१२] अमृतका स्रोत

फिर शह्लसे जी उकताने लगा फिर शौक़ महार[१] उठाने लगा
फिर जोगीजीके दर्शनको 'नाज़िर' एक रोज़ रवाना हुआ

कुछ रोज़में 'नाज़िर' जा पहुँचा फिर होश-रुबा[२] नज़्ज़ारोंमें
पंजाबके गर्द ग़ुबारोंसे कश्मीरके बाग़ बहारोंमें
फिर बनबासी बैरागीका हर सिम्त सुराग़ लगाने लगा
बन्हालके[३] भयानक ग़ारोंमें पंजालकी[४] काली धारोंमें
अपना तो ज़माना बीत गया सरकारोंमें, दरबारोंमें
पर जोगी मेरा शेर रहा परबतकी सूनी ग़ारोंमें
वो दिनको टहलता फिरता था इन क़ुदरतके गुलज़ारोंमें
और रातको मह्वे-तमाशा[५] था अम्बरके चमकते तारोंमें
बर्फ़ाबका[६] था एक ताल यहाँ या चाँदीका था एक थाल यहाँ
इलमास[७] जड़ा था ज़मुर्रदमें[८] ये ताल न था कुहसारोंमें[९]
तालाबके एक किनारेपर ये बनके राजा बैठा था
थी फ़ौज खड़ी दीवारोंकी हर सिम्त बलन्द हिसारोंमें[१०]
याँ सब्ज़-ओ-गुलका नज़ारा था और मंज़र प्यारा प्यारा था
फूलोंका तख़्त उतारा था परियोंने इन कोहसारोंमें
याँ बादे-सहर जब आती थी भैरवका ठाठ जमाती थी
तालाब रुबाब[११] बजाता था लहरोंके तड़पते तारोंमें
क्या मस्त-उल-मस्त नवाएँ[१२] थीं इन क़ुदरतके निरमानोंमें[१३]
मल्हारका रूप था चश्मोंमें सारंगका रंग फ़व्वारोंमें

[१] नकेल [२] होश उड़ानेवाले [३] कश्मीरकी एक पहाड़ीका नाम [४] कश्मीरकी एक पहाड़ी [५] तमाशेमें लीन [६] हिम-जल [७] पन्ना [८] पन्ना [९] पहाड़ियों [१०] घेरों [११] सितार [१२] मस्तीसे भरी हुई हवाएँ [१३] निर्माणों

जब जोगी जोशे-वह्‌दतमें[1] हरि नामकी जर्ब लगाता था
एक गूँजसी चक्कर खाती थी कोहसारोंकी दीवारोंमें
इस इश्क-ओ-हवाकी मस्तीसे जब जोगी कुछ हुशियार हुआ
उस ख़ाकनशींकी[2] ख़िदमतमें यूँ 'नाजिर' अर्जगुजार हुआ

कल रश्के-चमन[3] थी ख़ाके-वतन है आज वो दश्तेबला[4] जोगी !
वो रिश्तए-उलफ़त[5] टूट गया कोई तस्मा[6] लगा न रहा जोगी !
बर्बाद बहुतसे घराने हुए आबाद हैं बन्दीख़ाने हुए
शहरोंमें है शोर बपा जोगी गाँवोंमें है आह-ओ-बुका[7] जोगी !
वो जोशे-जनूँके जोर हुए इन्सान भी डंगर ढोर हुए
बच्चोंका है क़त्ल रवाँ[8] जोगी, बूढ़ोंका है ख़ून हिबा[9] जोगी !
ये मस्जिदमें और मंदिरमें हर रोज तनाजा[10] कैसा है !
परमेशर है जो हिन्दूका मुस्लिमका वही है ख़ुदा जोगी !
काशीका वो चाहनेवाला है ये मक्केका मतवाला है
छातीसे तो भारतमाताकी दोनोंने है दूध पिया जोगी !
है देसमें ऐसी फूट पड़ी एक क़ह्रकी[11] बिजली टूट पड़ी
रूठे मित्रोंको मना जोगी, बिछुड़े वीरोंको मिला जोगी !
कोई गिरता है कोई चलता है गिरतोंको कोई कुचलता है
सबको एक चाल चला जोगी, और एक डगरपर ला जोगी !
वो मैकदा[12] ही बाक़ी न रहा वो ख़ुम[13] न रहा साक़ी न रहा
फिर इश्क़का जाम पिला जोगी, ये लागकी आग बुझा जोगी !

[1] एक ईश्वरकी पूजाके जोश [2] ख़ाक (मिट्टी)में रहनेवाला [3] जिससे चमनको भी ईर्ष्या हो [4] आपदाओंका जंगल [5] प्रेमका नाता [6] बन्धनकी डोर [7] रोना चिल्लाना [8] उचित [9] तुच्छ [10] झगड़ा [11] विपत्ति [12] शराब [13] सुराही

परबतके न सूखे रूखोंको ये प्रेमके गीत सुना जोगी !
ये मस्त तराना वहदतका चल देसकी धुनमें गा जोगी !
भक्तोंके क़दम जब आते हैं कलजुगके क्लेश मिटाते हैं
थम जाता है सैले-बला[१] जोगी, रुक जाता है तीरे-क़ज़ा[२] जोगी
नाज़िरने जो ये अफ़सानए-ग़म रूदादे-वतनका[३] याद किया
जोगीने ठंडी साँस भरी और नाज़िरसे इरशाद किया

बाबा ! हम जोगी बनबासी जंगलके रहनेवाले हैं
इस बनमें डेरे डाले हैं जब तक ये बन हरियाले हैं
इस काम क्रोधके धारेसे हम नाव बचाकर चलते हैं
जाते याँ मुँहमें मगरमछके[४] दरियाके नहानेवाले हैं
है देसमें शोर पुकार बहुत और झूठका है परचार बहुत
वाँ राह दिखानेवाले भी बेराह चलानेवाले हैं
कुछ लालच लोभके बन्दे हैं कुछ मक्र-ओ-फ़रेबके फन्दे हैं
मूरखको फँसानेवाले हैं ये सब मकड़ीके जाले हैं
जो देसमें आग लगाते हैं फिर उसपर तेल गिराते हैं
ये सब दो रूखके ईंधन हैं और नरकके सब ये निवाले हैं
भारतके प्यारे पूतोंका जो ख़ून बहानेवाले हैं
कल छाँवमें जिसकी बैठेंगे वही पेड़ गिरानेवाले हैं
जो ख़ूनख़राबा करते हैं आपसमें कट-कट मरते हैं
ये बीर बहादुर भारतको ग़ैरोंसे छुड़ानेवाले हैं ?
जो धर्मकी जड़को खोदेंगे भारतकी नाव डबो देंगे
ये देसको डसनेवाले हैं जो साँप बग़लमें पाले हैं

---

[१] बलाओंकी बाढ़ [२] मृत्युका तीर [३] देशकी कहानी
[४] मगर-मच्छ

जो जीवकी रक्षा करते हैं और ख़ौफ़े-ख़ुदासे डरते हैं
भगवानको भानेवाले हैं ईश्वरको रिझानेवाले हैं
दुनियाका है सिरजनहार वही, माबूद[1] वही, मुख़्तार वही
ये काबा,[2] कलीसा,[3] बुतख़ाना[4] सब डौल उसीने डाले हैं
वो सबका पालनहारा है ये कुनबा उसीका सारा है
ये पीले हैं या काले हैं सब प्यारसे उसने पाले हैं
कोई हिन्दी हो, कि हिजाज़ी[5] हो, कोई तुर्की हो या ताज़ी[6] हो
जब नीर पिया एक माताका सब एक घरानेवाले हैं
सब एक ही गतपर नाचेंगे सब एक ही राग अलापेंगे
कल श्याम कन्हैया फिर बनमें मुरलीको बजानेवाले हैं
आकाशके नीले गुम्बदसे ये गूँज सुनाई देती है
अपनोंको मिटानेवालोंको कल ग़ैर मिटानेवाले हैं
ये प्रेमसन्देसा जोगीका पहुँचा दो उन महापुरुषोंको
सौदेमें जो भारतमाताके तन मनको लगानेवाले हैं
परमात्माके वो प्यारे हैं और देसके चाँद-सितारे हैं
अन्धेर नगरमें वहदतकी जो जोत जगानेवाले हैं
'नाज़िर' यहीं तुम भी आ बैठो और बनमें धूनी रमा बैठो
शहरोंमें गुरू फिर चेलोंको कोई नाच नचानेवाले हैं

[1] जिसकी पूजा की जाय, ईश्वर [2] मुसलमानोंका महान तीर्थ [3] गिरजा [4] मंदिर [5] हिजाज़का निवासी, हिजाज़, अरबकी राजधानी है [6] अरबी।

जोगन

'अख़्तर' शीरानी

अख़्तर शीरानीकी कल्पना बहुत जवान कल्पना है—उनकी कवितामें जवानीका पूरा कस बल और जवानीकी तेज़ झनकार मिलती है। उनकी शैली उन भावों और विचारों और एक ऐसी चेतनासे उत्पन्न होती हैं जो बहुत ही सिजिल और रंगीन है। 'अख़्तर' शीरानीको शायरे रोमान अर्थात् रूप रंग, प्रेम और जवानीकी रंगीनियों, मस्तियों और रहस्योंका शायर कहा जाता है। यह कविता भी कथानक नहीं है बल्कि एक ही दृश्यका चित्रण और जोगनके सितारकी झंकारोंकी समालोचना या काव्यात्मक व्याख्या है। उपमाएँ सूक्ष्म और लोच-भरी कल्पनाका सबूत देती हैं। दृश्यकी पूरी आत्मा धीरे-धीरे व्यक्त होती चली जाती है। कविता पढ़ चुकनेके बाद यह दृश्य एक कभी न भूलनेवाला दृश्य बन जाता है। भाषा कोमल, लचकदार और परिमार्जित है। शैलीपर कविका सम्पूर्ण आधिपत्य है। 'अख़्तर' शीरानीकी कलामें जवानीका कस बल और पक्की उम्रकी प्रौढ़ताका बहुत सुन्दर समावेश मिलता है। अफ़सोस कि उर्दूका ये होनहार शायर हमें कुछ अमर कविताएँ देकर जवानी हीमें इस दुनियासे उठ गया।

जोगन

देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है
मूसीक़िये-हज़ीं[1] के दरिया बहा रही है
ग़मगीं नवाइयोंसे[2] बेख़ुद[3] बना रही है
दुनियाके हर असरको दिलसे मिटा रही है
सोई हुई फ़िज़ाका[4] शाना[5] हिला रही है
हर जुम्बिशे-ज़बाँ[6] से मुर्दे जिला रही है
बेदार[7] कर रही है मदहोश घाटियोंको
ख़्वाबीदा[8] साहिलोंकी[9] नींदें उड़ा रही है
हर लरज़िशे-सबामें[10] तूफ़ाँ उमंड रहे हैं
पंचममें क्या रसीली तानें उड़ा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

अठखेलियोंका सिन[11] है हँस बोलनेके दिन हैं
लेकिन न जाने क्यों वो आँसू बहा रही है
आईना रंग सीना कुछ खिल रहा है जिसमें
दोशीज़गीकी[12] गंगा तूफ़ाँ उठा रही है

[1] करुण संगीत [2] दुख भरे बोलों [3] आत्मविस्मृत [4] वायुमंडल
[5] कंधा [6] ज़बान हिलाने [7] जगा रही है [8] सुप्त [9] किनारों, तटों
[10] हवाके कंपन [11] आयु [12] कुंआरपन

एक गेरुआना[1] सारीमें है बदन छिपाये
या हल्की-हल्की बदली सूरज पै छा रही है
एक बह्रे-यासमींपर[2] बल खा रही है नागन
या इसकी जुल्फ़-मुश्कीं[3] सीना पै आ रही है
है एक सितार उसके आग़ोश-नाज़नीमें[4]
दो नाज़ुक उँगलियोंसे जिसको बजा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

सब्ज़े पै चाँदनीके बादल बरस रहे हैं
या कोई हूर बैठी आँसू बहा रही है
है मौजज़न[5] फ़िज़ामें एक आबशारे-सीमीं[6]
या मलकये-परिस्ताँ[7] मोती लुटा रही है
एक गर्दे-मरमरीं[8] है छाई हुई उफ़क़[9] पर
जिसको हवाये-सहरा[10] कोसों उड़ा रही है
एक मौजे-गौहरींसी[11] हर फूलपर है रक़्साँ[12]
नग़मेकी बूए-रंगी[13] जिसमें समा रही है
या दिनके मक़बरेपर दोशीज़ये-शब[14] आकर
गुलहाये-नूरकी[15] एक चादर चढ़ा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

जंगलके जानवर कुछ बैठे हैं उसके आगे
रो-रोके जिनको अपनी बिपता सुना रही है

[1] गेरुए रंग [2] सफ़ेद सागर, चाँदनी [3] मुश्क, कस्तूरीकी भाँति काले केश [4] कोमल और सुन्दर गोद [5] हिलोरें मारता [6] रुपहला झरना [7] परिस्तानकी रानी [8] सफ़ेद धूल [9] क्षितिज [10] जंगलकी हवा [11] मोतियोंकी लहर [12] नाच रही है [13] गीतकी रंगीन सुगंधि [14] कुमारी रात्रि [15] प्रकाश पुष्प

खूँख़्वार शेर भी हैं वहशी ग़ज़ाल[1] भी हैं
लेकिन वो सबके दिल पै सिक्का जमा रही है
कुछ साँप झूमते हैं रह-रहके मस्त होकर
एक मौजे-वज्द परवर[2] उनको नचा रही है
ताऊस[3] नाचता है यूँ बेक़रार होकर
गोया हर एक परमें बिजली समा रही है
ग़मगीं नवाइयोंसे ऐसा समाँ बँधा है
रो-रोके जैसे फ़ितरत[4] तूफ़ाँ उठा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

ये मोहनी बनी है किसकी लगनमें जोगन ?
ये सैले-दर्द[5] किसके ग़ममें बहा रही है ?
हाँ शायद इसकी नन्हीं मासूम आत्मामें
हरिकी प्रेम अगिनी लूके लगा रही है
हर बनमें हर नगरमें हर घरमें हर डगरमें
फिर-फिरके अपने दिलकी चिन्ता मिटा रही है
या जगकी आफ़तोंसे तंग आके बनमें जाकर
परमात्माको अपना दुखड़ा सुना रही है
या हरिकी जुस्तजूमें[6] पीतमकी आरज़ूमें
काशीसे आ रही है मथुराको जा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

एक आग-सी भरी है ग़मगीन रागनीमें
दीपक सुना-सुनाकर तन मन जला रही है

---

[1] हिरन [2] ऐसी लहर जो मस्ती पैदा करे [3] मोर [4] प्रकृति
[5] पीड़ाकी बाढ़ [6] खोज

परदा-सा उठ गया है आँखोंके सामनेसे
क्या जाने किस जगहके जलवे दिखा रही है ?
मामूरे-ग़मनवाई[१] है हर कलीका दामन
फ़ैयाज़ मुत्रिबा[२] है नग़्मे लुटा रही है
बुतख़ानए-जबींमें[३] सजदे[४] मचल रहे हैं
काफ़िर अदा[५] सनम है काफ़िर बना रही है
कुछ सोज़[६] है बयाँमें[७] कुछ दर्द दास्ताँमें
शोले उगल रही है छुरियाँ चला रही है
देखो वो कोई जोगन जंगल में गा रही है

अब नग़्मे[८] सो गये हैं बाजा भी थक चला है
महशर[९] उठा चुकी है फ़ित्ने[१०] जगा रही है
ऐसी दबी सदा है गोया उरूसे-नग़्मा[११]
मुँह फेरकर हवासे दामन छुड़ा रही है
या कुछ ग़नूदगीके[१२] आलममें[१३] मस्त कोयल
धरतीकी गोपियोंके दिल गुदगुदा रही है
कुछ खुल गया है जैसे बादल कोई बरसकर
या शमअ्[१४] जल जलाकर अब झिलमिला रही है
लो वो सितारको भी नींद आ गई बग़लमें
लो वो सितार उठाकर जंगलसे जा रही है !
देखो वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

[१] करुण संगीतसे भरा [२] गायिका [३] माथेके मंदिर [४] ईश्वरके सामने सिर झुकानेका भाव [५] ऐसी सुन्दर मूर्ति है जो ईश्वरकी ओरसे ध्यान पलट देती है [६] जलन [७] वर्णन [८] गीत [९] प्रलय [१०] उपद्रव, झगड़े [११] गीतकी दुल्हन [१२] नींद, औंघाई [१३] अवस्था [१४] दीप

मैं तो मगर कुछ ऐसा महसूस कर रहा हूँ
जैसे वो ज़ालिम अब तक वैसे ही गा रही है
अब तक फ़ज़ा पै है वो खोया हुआ-सा आलम
अब तक उफ़क़ पै यकसर[1] मस्ती-सी छा रही है
अब तक उठा रहा है साज़ उसका अब्रे-नग़मा[2]
अब तक ज़बान उसकी बिजली गिरा रही है
फूलोंसे अब तक उसके नग़मे बरस रहे हैं
पत्तोंसे अब तक उसकी आवाज़ आ रही है
अब तक मैं सर झुकाए हैरतज़दाँ[3] खड़ा हूँ
अब तक वही तजल्ली[4] आँखों पै छा रही है
देखो ! वो कोई जोगन जंगलमें गा रही है

[1]बराबर [2]संगीत का बादल [3]आश्चर्य चकित [4]ज्योति

सुहागन बेवा

'जोश' मलीहाबादी

'जोश' मलीहाबादी शायद इस युगमें उर्दूके नहीं भारतकी तमाम भाषाओंके महाकवियोंमें सबसे बड़े कवि हैं। उनकी काव्य-चेतना और कल्पनाकी एक ऐसे भरपूर समन्दरसे तुलना की जा सकती है जो ठाठें मारता रहता है और जिसमें प्रचण्ड ज्वारभाटा उठती रहती है। एक घनघोर घटा है जो जब बरसनेपर आ जाती है तो इस तरह छाजों बरसती है कि जल-थल एक हो जाता है।

आजसे कई बरस पहले जब 'जोश' मलीहाबादीने ताज़ा ताज़ा ये नज़्म लिखी थी तो उन्होंने एक ऐसी सभामें ये नज़्म सुनाई जिसमें सर तेज बहादुर सप्रू, श्रीमती सरोजिनी नायडू, पं० अमरनाथ झा, प्रयाग विश्व-विद्यालयके अनेक अध्यापक, हाईकोर्टके कई जज, वकील, बैरिस्टर और इलाहाबादके बहुतसे उच्चसे उच्च शिक्षा पाये हुए और सर्वोच्च पदवियाँ ग्रहण किये हुए हिन्दू-मुसलमान सज्जन मौजूद थे और सबने जी खोलकर तारीफ़ की थी।

इस कवितामें एक ऐसी विधवाका चित्र खींचा गया है जो पतिकी जलती हुई लाशके साथ सती होना ही चाहती है कि उसी समय वहाँ गोस्वामी तुलसीदास आ निकलते हैं। उस बिलखती विधवाको जीवनका ऐसा ज्ञान प्रदान करते हैं कि वह सती होनेसे बच जाती है; बेवा होते हुए भी ज्ञान प्राप्त करके सदा सुहागिन बन जाती है। यही है विषय सुहागिन बेवा नामी इस कविताका; जिसे 'जोश' मलीहाबादीने अति उच्च स्तरकी कल्पना द्वारा अत्यन्त सरल और सुगम ढंगसे खनकते हुए छन्दोंमें व्यक्त किया है।

सुहागन बेवा

नेक तुलसीदास गंगाके किनारे वक़्ते-शाम
जा रहा था एक तरफ़ बश्शाश[१] जपता हरका नाम
चर्ख़की[२] नैरंगियोंसे[३] गुफ़्तगू[४] करता हुआ
रंगे-इरफ़ाँ[५] रूहकी तस्वीरमें भरता हुआ

झाड़ियाँ थीं सब्ज़ दरियाके किनारे जा-बजा
फूल कुम्हलाए हुए थे सुस्त थी मौजे-हवा
राहमें जाले लगे थे पत्तियोंपर गर्द थी
लांबी-लांबी घास हिलती थी पतावर[६] ज़र्द थी

जमा थे इस तरह पत्ते जा-ब-जा[७] सूखे हुए
जिस तरह शादीके ख़ेमे सुब्हको उलटे हुए
झाड़ियोंसे यूँ दबे पाँवों गुज़रती थी हवा
बाँसुरीकी दूरसे जिस तरह आती हो सदा

यूँ पड़े थे ज़ेरे-शाख़े-गुल शगूफ़े चाक-चाक[८]
जैसे गिर्दे-शमअ वक़्ते-सुब्ह परवानोंकी ख़ाक[९]
तायरे-दरमाँदा[१०] कोई बोल उठता था अगर
एक सन्नाटा-सा छा जाता था कोह-ओ-दश्तपर[११]

[१]प्रसन्न चित्त [२]आकाशकी [३]चालोंसे [४]वार्तालाप [५]ज्ञान [६]बेला [७]जगह-जगह [८]फटे हुए [९]मिट्टी [१०]थका हुआ पक्षी [११]पहाड़ और जंगल

और सन्नाटा-सा वो जिसमें हो गुम आवाज़े-रअद[१]
दिलपै होता है जो तारी नालए-पैहमके[२] बाद
उस तरफ़ रंगे-शफ़क़[३] था चर्ख़पर छाया हुआ
इस तरफ़ दिल कोह-ओ-सहराका[४] था मुर्झाया हुआ

ख़ार-ओ-ख़सपर[५] तितलियाँ हर सू पड़ी थीं बेख़बर
अब्रके[६] दो एक टुकड़े थे परीशाँ चर्ख़पर[७]
शामका चेहरा ग़मे-पिनहाँसे[८] कुछ उतरा-सा था
पानी थम-थमकर जो बहता था तो सन्नाटा-सा था

ख़ुद-ब-ख़ुद तारीक[९] साहिलपर भरा आता था दिल
बढ़ रही थी तीरगी[१०] रह-रहके घबराता था दिल
कह रहा था रंग ग़मका अब्र छा जानेको है
सानिहा[११] कोई क़यामत ख़ेज़[१२] पेश आनेको है

जाते-जाते एक गोशेकी तरफ़ पहुँची नजर
फ़र्ते-ग़मसे[१३] रह गया शायर कलेजा थामकर
देखता क्या है कि दरियाकी रवानी है उदास
चल रहा है एक जनाज़ा रोशनी है आसपास

काँप-काँप उठती है जंगलकी सियाही बार-बार
उठ रहे हैं लाशसे शोले फ़िज़ाँ[१४] है बेक़रार[१५]
रोशनी शोलोंकी एक पेशानिए-ज़र्री पै[१६] है
ज़ुल्मते[१७] अन्दोह बेवा के रुख़े-ग़मगी[१८] पै है

है रँडापा सरपै शमशीरे-जफ़ा[१९] तोले हुए
सरनगूँ[२०] बैठी है रुख़पर काकुलें खोले हुए

[१]बादलकी गरज [२]लगातार रुदन [३]ऊषाकी लालिमा [४]पहाड़ और जंगल [५]काँटों और घासमें [६]बादल [७]आकाश [८]गुप्त दुख [९]अँधेरे [१०]अन्धकार [११]दुर्घटना [१२]प्रलयकारी [१३]दुखके वेग [१४]वायुमंडल [१५]व्याकुल [१६]सुनहरे माथे [१७]दुखकी सियाही [१८]मलीन चेहरा [१९]अत्याचारकी तलवार [२०]सिर झुकाये हुये

कुन्दनी शोले हैं ग़ल्ताँ[1] चम्पई रुख़सारमें
दिल धड़कनेसे है जुम्बिश-सी गलेके हारमें
एहतमामे-मर्गमें[2] ये शायरी लबरेज़[3] यास
हाथमें मेंहदी रची है बरमें[4] चौथीका लिबास
आह ये आलम कि अब तक मस्त है मौजे-नसीम[5]
आ रही है जिस्मसे शादीके फूलोंकी शमीम[6]
कह रही है क्या बताऊँ क्या तमन्ना दिलमें है
शमअ ये किसके जनाज़ेकी मेरी महफ़िलमें है
ख़ाकसे उठती है फिर करती है शोलोंका तवाफ़[7]
कहती है ए शर्मकी देवी मुझे करना मुआफ़
मुड़के फिर मैयतसे कहती है इजाज़त दीजिये
अब तो इस ईंधनको भी जलनेकी रुख़सत दीजिये
आपको मौत आ गई आलम परीशाँ हो गया
घर अभी बसने न पाया था कि वीराँ हो गया
याद है हाँ मुझको शादीका तरन्नुम[8] याद है
हाँ इन्हीं होठों पै आया था तबस्सुम[9] याद है
आपके सीनेसे शोले उठ रहे हैं बारबार
जल रही है ये मेरी उजड़ी जवानीकी बहार
पूछिये इससे कि दुनिया क्या थी और क्या हो गई
जिसने घूँघट भी न उलटा था वो बेवा हो गई
फुँक गईं मेरी बहारें जल गया मेरा सिंगार
तेरी बन्द आँखें है मेरी ज़ेब-ओ-ज़ीनतका[10] मज़ार

[1] चक्कर काटते [2] मौतकी तैयारी [3] निराशापूर्ण [4] बदन [5] हवाकी लहर [6] सुगंध [7] परिक्रमा [8] गीत [9] मुस्कान [10] बनाव सिंगार

घर मेरे हमजोलियाँ मिलजुलके गाने आई थीं
मालिनें फूलोंका गहना कल पिन्हाने आई थीं
आज क़ुर्बांगाहे-इबरत[1] पर चढ़ानेके लिये
मौत आई है मेरा ज़ेवर बढ़ानेके लिये

ज़िन्दगी ! ! जा दूर हो दुनिया है आँखोंमें उजाड़
मौत ! जल्दी कर कि टूटा है रँडापेका पहाड़
क्यों खड़ी है दूर यूँ डाले हुए त्योरीपै बल
मुझको भी खाले क़सम है तुझको ऐ डाइन अजल[2]

देखती है तू कि मैं हूँ किस क़दर जीनेसे सेर[3]
ओ सियहरू मौत ! ख़ूनी मौत! क्यों करती है देर ?
देख मेरे रुख़पर अश्कोंकी फ़रावानीका सैल[4]
अपने जबड़ोंको हिला तारीक ग़ारोंकी चुड़ैल

रेंग नागन रेंग मुझ बेवाको डसनेके लिये
क्या यहाँ आई है मुँह अपना झुलसनेके लिये
क्यों खड़ी है यूँ अलग ठिठकी हुई सच-सच बता
मेरी बातोंने तुझे क्या मौत ! बरहम[5] कर दिया ?

ये अगर है तो झुकाकर मैं तेरे क़दमोंपै सर
माँगती हूँ दरगुज़रकी भीख मुझपर रह्म कर
ए मुबारक मौत ! ए राज़े-कमाले-ज़िन्दगी[6]
ए जहाने-ख़्वाबे-नोशीं[7] ! ए मआले-ज़िन्दगी[8]

ए पयामे-ज़िन्दगी[9] ! सिर्रे-बक़ा[10] ताजे-हयात[11]
ऐ निज़ामे-देह्र[12] ! ए रफ़तारे-नब्ज़े-कायनात[13]

[1] बलि-वेदी जिसे देख शिक्षा मिलती है [2] मृत्यु [3] सन्तुष्ट [4] आँसुओंके बहावकी बाढ़ [5] नाराज़, ख़फ़ा [6] जीवनके कमालका रहस्य [7] गहरी निद्राका संसार [8] जीवनका परिणाम [9] जीवन संदेश [10] शेष जीवनका भेद [11] जीवनका ताज [12] संसारकी व्यवस्था [13] सृष्टिकी नाड़ी

मेरी ज़ुल्मतपर भी डाल अपनी अनोखी रोशनी
आ इधर आ शाहज़ादी आलमे-अरवाहकी[1]
कहके ये लपकी चिताकी सिम्त वह नाज़ुक ख़राम[2]
और कहा ए दुख भरे संसार ! ले मेरा सलाम
बस ये सुनना था कि झपटे इसकी जानिब दास भी
देखते ही आपको कमसिन[3] तो थी घबरा गई
हर तरफ़ पहले तो देखा दिलमें क्या-क्या ठानके
और फिर गर्दन झुका ली दासको पहचानके
हो गई फ़र्ते-हयासे[4] रूहे-ग़मगीं[5] बेक़रार
उँगलियाँ अपनी मरोड़ीं देर तक, दीवानावार[6]
सर झुका, माथेपै ज़ुल्फ़े-नाज़ लहराने लगी
हुस्नको आग़ोशे-ग़ममें[7] नींद-सी आने लगी
चुप हुई तो और दर्दे-हिज्र[8] दूना हो गया
दी सदा[9] दिलने, तेरा पहलू तो सूना हो गया
ये सदा सुनते ही दम उलझा फुरेरी आ गई
एक घटा दिलसे उठी अर्ज़-ओ-समापर[10] छा गई
रो के फिर कहने लगी बाबा दुआ दीजे मुझे
जिन्दगीके पापसे जल्दी छुड़ा दीजे मुझे
आपकी दासीपर अब इस जगमें रहना बार है
आग इस छातीमें रोशन है चिता तैयार है
झोंक भी दीजे मुझे इस आगके अम्बारमें
मैं अकेली हूँ नहीं मेरा कोई संसारमें

[1] आत्माओंका संसार [2] कोमल चाल चलनेवाली [3] छोटी आयुकी [4] अत्यधिक लज्जासे [5] दुखी आत्मा [6] पागलोंकी भाँति [7] ग़मकी गोदमें [8] विरहकी पीड़ा [9] आवाज़ [10] अर्ज़=धरती, समा=आकाश

दासने फिर तो क़रीब आकर ब-नर्मी[१] यूँ कहा
ए मेरी नादान बच्ची! सोच तो कहती है क्या
मरना जीना एक है जिनको ज़रा भी ग्यान[२] है
वो उधरका मर्तबा है ये इधरकी शान है
ज़िन्दगी है नक़्ससे मामूर एक मोहमलसी बात[३]
मौत है शीराज़ए क़ानूने-तकमीले-हयात[४]
मौत यकसू ज़िन्दगी मजमूअए-अज़दाद[५] है
ज़िन्दगी है वक़्तकी पाबन्द मौत आज़ाद है
ज़िन्दगी है रूहको महदूद[६] कर लेनेका नाम
मौत है इन्साँके लामहदूद[७] हो जानेका नाम
कहते हैं फ़ानी[८] जिन्हें हम, वो फ़ना होते नहीं[९]
मरनेवाले अस्लमें हमसे जुदा होते नहीं
क़ैदे-हस्तीसे कोई ज़र्रा रिहा होता नहीं
टूट जाता है क़फ़स[१०] तायर[११] फ़ना होता नहीं
इश्क़के मालेका एक मोती बिखर सकता नहीं
इत्तहादे-बातिनी[१२] मरनेसे मर सकता नहीं
इश्क़की शाखें किसी आँधीसे झुक सकतीं नहीं
रूहकी सरगोशियाँ[१३] मरनेसे रुक सकती नहीं
ज़िन्दगी बेरूह आवाज़ोंमें देती है पयाम
मौत सर्द अल्फ़ाज़को ठुकराके करती है कलाम

[१]नर्मीके साथ [२]ज्ञान [३]जीवन दोषोंसे भरा है, यह एक ऐसी बात है जो समझमें न आ सके [४]जीवनको पूर्ण बनानेके नियमकी डोरी [५]मृत्यु एकाग्रता है और जीवन परस्पर विरोधी बातोंका संग्रह है [६]सीमित [७]असीम [८]मृत [९]मरते नहीं [१०]पिंजड़ा [११]पक्षी [१२]आन्तरिक एकता [१३]आत्माकी कानाफूसी

जिन्दगीके तंग साँचेमें समा जाता है इश्क़
मौतसे आलमकी पहनाईपै[१] छा जाता है इश्क़
जिन्दगीकी मौजपर गुलबर्गेतर[२] बनता है इश्क़
लाल-ओ-गौहर मौतके गिर्दाब[३] में बनता है इश्क़

बादे-तूफ़ानीके[४] देवता पास आ सकते नहीं
इस दियेको मौतके झोंके बुझा सकते नहीं
मौत क्या शै है कि तोड़े जब कि ख़ुदरूहुलअमीं[५]
आशिक़ीके रिश्तए-मुहकमको[६] छू सकते नहीं

जिस्मपर बुनियादे-इश्क़े-ख़ुदनुमा[७] होती नहीं
रूह इस तबदील हैअतसे[८] फ़ना होती नहीं
जिन्दगी धुँधला-सा एक जलवा है और कुछ भी नहीं
मौत एक बारीक-सा परदा है और कुछ भी नहीं

ग़ौर कर दिलमें कि हो जायें हक़ीक़त बेनक़ाब
टूटते देखे तो होंगे बारहा तूने हबाब[९]
मरके भी दरियाके सीनेसे कहीं जाते नहीं
रहते हैं दरिया हीमें लेकिन नज़र आते नहीं

यूँ ही तेरी शमअे-सोज़ाँ[१०] भी तेरी महफ़िलमें है
मरनेवाला आँखसे ओझल है लेकिन दिलमें है
जो चितामें जल रहा है वो तेरे पहलूमें है
काँपते होंटोंमें है हिलते हुए आँसूमें है

यह कहा शायरने और कुछ देर आँखें बन्द कीं
देखते ही देखते बेवाकी आँखें खुल गईं

[१]विस्तार [२]गुलाबकी तर पंखुड़ी [३]भँवर [४]तूफ़ानी हवा [५]आत्माकी अमानत रखनेवाला [६]दृढ़ सम्बन्ध [७]आत्मप्रदर्शन करनेवाले प्रेमकी नींव [८]रूप परिवर्तन [९]बुलबुले [१०]जलती शमा

हँसके फिर कहने लगी बाबा निराविसवास[१] था
दूर मैं जिसको समझती थी वो मेरे पास था
ये कहा और दफ़अतन[२] दिलमें चमक पैदा हुई
ज़ुल्फ़में ताबन्दगी[३] रुख़पर दमक पैदा हुई
सहने-ग़ममें[४] बाग़े-इशरतकी[५] हवा आने लगी
कानमें राहतके नग़मोंकी सदा आने लगी

ज़ेरे-लब कहने लगी, आलम है क्या तनवीरका[६]
दिल मेरा शीशा है उनकी चाँदसी तस्वीरका
है कोई जल्द आये शादीका मेरी सामाँ करे
बढ़ियाँ[७] आकर पिन्हाये माँग सन्दलसे भरे
फूल बरसें जल्द अँगनाईको भरनेके लिये
ज़रफ़शाँ ताऊस[८] आएँ रक़्स करनेके लिये
अब्रसे कह दो कि मेरी ज़ुल्फ़पर साया करे
जश्नकी[९] देवी किधर है बज़्ममें जलवा करे

कह दो मश्शातासे[१०] आये रंज खोनेके लिये
ख़म-ब-ख़म[११] ज़ुल्फ़ोंमें फिर मोती पिरोनेके लिये
इशरते-जावेद[१२] बाँदी है मेरे अहकामकी[१३]
अब सखी ! नैरंगियाँ आजिज़ हैं सुब्ह-ओ-शामकी
सरमदी नग़मोंको[१४] है अब रब्त[१५] मेरे साज़से
आशियाँ[१६] ऊँचा है मेरा वक़्तकी परवाज़से[१७]:

---

[१]भ्रम [२]अकस्मात [३]चमक [४]दुखके आँगन [५]आनन्द वाटिका [६]ज्योति [७]बढ़ी [८]सोनेकी वर्षा करनेवाले मोर [९]उत्सव [१०]कंघी चोटी करनेवाली [११]पेचदरपेच [१२]अमर आनन्द [१३]आज्ञाओं [१४]स्वर्गीय संगीत [१५]स्नेह [१६]घोंसला [१७]उड़ान

हुक्म रक़्क़ासा[1] को दो छागल पहनकर पाँवमें
आये पिछली रात तारोंकी सुहानी छाँवमें
ख़ाक तुलसीकी नज़रसे रश्के-गुलशन हो गई
मारफ़तमें[2] डूबकर बेवा सुहागन हो गई

[1] नर्त्तकी [2] ज्ञान

आलमे-ख़याल

अहमद अली 'शौक़' क़िदवाई

यह मसनवी भी एक शृंखलाबद्ध काव्य रचना है जिसमें कोई कथानक नहीं है। इसके लेखकका तख़ल्लुस (उपनाम) भी 'शौक़' है लेकिन इसके लेखक शौक़ क़िदवाई ज़हरे-इश्क़के लेखक मिर्ज़ा शौक़ लखनवीसे अलग हैं। एक स्त्रीका पति परदेस चला गया है और परदेससे घर तक पति-पत्निका पत्र-व्यवहार छन्दबद्ध करके इस मसनवीमें पेश किया गया है।

बातें हल्की फुल्की हैं और आए दिनके भाव विचार छन्द-बद्ध किए गये हैं। किस सफलतासे भावोंको मुखरित किया गया है इसका अन्दाज़ा नज़्मको पढ़ने हीसे होता है। शौक़ क़िदवाईने अपने ऊपर इस कविताके रचनेमें एक बंधन लगा लिया है वह यह कि पूरी कवितामें एज़ाफ़त (समास) नहीं आने पाई है। औरतें बहुत ठेठ भाषा बोलती हैं। इज़ाफ़तसे बचकर कविने ठेठपनकी पूरी शान क़ायम रक्खी है। बातें बहुत ही स्वाभाविक हैं। एक खाते पीते घरानेकी नौजवान बधूका जीवन पतिके लम्बे अरसेके लिये परदेस चले जानेके बाद अजीरन हो जाता है। एक एक पल एक बोझ बन जाता है। ये छन्दबद्ध चिट्ठियाँ मज़ेदार शिकायतोंसे और पवित्र भावोंसे भरी हुई हैं। हमारे समाजने औरतको आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक जीवनमें हिस्सा लेनेसे रोक रक्खा है। ये बन्धन अब कुछ ढीले पड़ चले हैं। लेकिन अबसे लगभग चालीस बरस पहले जब ये कविता रची गई थी उस समय औरत केवल गृहलक्ष्मी थी लेकिन एक तो शहरकी ज़िन्दगीमें गृहलक्ष्मीका अर्थ उतना भरपूर नहीं हो सकता जितना कृषि

जीवनमें होता है । दूसरे अब सम्मिलित परिवारकी प्रथा टूट चुकी है और पति भी परदेस चला गया है कई एक बाल-बच्चे भी नहीं हैं तो गृहलक्ष्मी-का अर्थ अकेले और बेकार ढंगसे जीनेवाली स्त्री हो जाता है । इस अकेले-पनमें पतिकी याद जिस तरह स्त्रीको आती है, जो बातें, जो भाव विचार उसके दिलमें उठते हैं वो सब किस कुशल रूप, किस नर्मी और स्वाभाविकता-से इस कवितामें दिखाये गए हैं इसे इस मसनवीके पाठक स्वयं देख सकते हैं ।

चिट्ठियों द्वारा या चिट्ठियोंके रूपमें छन्द-बद्ध रचना करना काफ़ी अभ्यास और साधन चाहता है । अगर कविको सफलता हो जाय तो बड़ी मनोरंजक रचना हाथ आ जाती है । पत्रलेखन एक ऐसा काम है जो दुनियामें करोड़ों आदमी करते हैं लेकिन बिरले ही पत्र गद्यमें भी साहित्यिक गुणोंसे और साहित्यिक सौन्दर्यसे अलंकृत हो पाते हैं । पद्यमें तो ऐसा कर सकना और भी कम देखनेमें आता है । इन पत्रोंमें घरेलू जीवन, स्त्रीके दिलकी दुनिया और पति-पत्नी सम्बन्धकी अनेक झलकियाँ मिलती हैं। हल्की फुल्की बातों, प्रेम-भरी शिकायतों, गृहस्त जीवनके साधारण ब्योरोंको फूलों या मोतियोंकी तरह पत्रोंके सूतमें पिरो देना बहुत दिलचस्प चीज़ है । कुछ लोगोंका निर्मूल विचार है कि औरतका चरित्र चित्रण या स्त्रीका सम्मान उर्दू कवितामें नहीं मिलता । राग-विरागमें जो कवि-ताएँ संकलित की गई हैं यदि केवल इन्हींको देख लें तो इसका पता चल जायेगा कि उर्दू कवितामें स्त्री-संसारके अनेक दृश्य और महिलाओंके चरित्रके अनेक नमूने पेश किये गये हैं ।

इन छन्दबद्ध पत्रोंमें बातसे बात, बातपर बात, शृंखलाबद्ध विचार आपसमें गुँधे हुए भाव बहुत नर्मीके साथ व्यक्त किये गये हैं । बहुत कोमल प्रवाहके साथ मसनवीका एक शेर लहराकर दूसरे शेरसे मिल जाता है और धारा प्रवाह ढंगसे कविता आगे बढ़ती चली जाती है । साधारण परिस्थितियोंको बहुत ही मनोरंजक बना दिया गया है । यह सच है कि

बहुत गहरे भाव या तीव्र भाव इस कवितामें न मिलें लेकिन हर भाषाके काव्य साहित्यमें हल्के फुल्के या छिछले ढंगसे सफल काव्य रचना एक बहुत बहुमूल्य साहित्य सेवा है। सहज और सरल वाक्य जब मामूली बातें कह चुकते हैं तब इस योग्य हो जाते हैं कि उनके द्वारा गहरी और तीव्र भावोंसे भरी हुई कविताएं भी की जा सकें।

आलमे-ख़याल

(कल्पना लोक)

पहला रुख़

एक औरतका शौहर परदेसमें है वह उसकी यादमें लीन अपने ख़्यालोंसे बातें कर रही है :—

आज अधमरे ख़्याल तू कहाँ-कहाँ गया
दिल भी तेरे साथ था तू जहाँ-जहाँ गया
तूने रुख़ जिधर किया दिलका रुख़ उधर फिरा
तू फिरा जो याससे दिल भर आया सर फिरा

जबसे वो जुदा हुए तबसे उनका ध्यान है
उनसे मुझको उन्स[1] है उनमें मेरी जान है
जाके फिर मेरी ख़बर क्यों न ली, सितम किया
मेरी याद मेरी चाह क्यों न की सितम किया

मुझसे क्यों ख़फ़ा हैं वो फिर गई नज़र तो क्यों
दिल नहीं इधर तो क्यों रुख़ नहीं इधर तो क्यों
मेरे रुख़से दूर है वो निगाह अब कहाँ
उनका प्यार अब कहाँ उनकी चाह अब कहाँ

मैं वही हूँ या नहीं वो वही हैं या नहीं
उनके दिलकी हालतें वो रही हैं या नहीं

[1]स्नेह

सावन और ये घटा में कहीं हों वो कहीं
हुस्न ये उन्हींका है और वो देखते नहीं
साथ वालियोंके साथ झूलनेको जाऊँ क्या
दिल वहाँ है वो जहाँ बेदिलीसे गाऊँ क्या
पेंग आयें जायेंगे और हिलेगा दिल मेरा
मिलके क्या मैं गाऊँगी क्या मिलेगा दिल मेरा
खुल पड़ेगी ख़ुदबख़ुद चाह हर सदाके साथ
मुँहसे बाहर आयेगी आह हर सदाके साथ
करती हैं जिगरका ख़ून हमसिनें[1] जो साथ हैं
वो लगा रही हैं आग जिनके लाल हाथ हैं
और भी लगाई आग लावनीने फूलकर
पेड़पर मेरी नज़र फिर पड़े न भूलकर
ये शबाबकी[2] उमंग अब किसे दिखाऊँ मैं
रुख़का लाल-लाल रंग अब किसे दिखाऊँ मैं
लाल ये कहाँ रहा ज़र्द होके रह गया
रंग अब कहाँ है रंग गर्द होके रह गया
जिस्म वो नहीं रहा इसमें कस नहीं है अब
होंठ वो नहीं रहे इनमें रस नहीं है अब
जोंक बनके रात दिन चूसता है ग़म लहू
ज़र्द हो गया बदन रह गया है कम लहू
काजल और मिसीका लुत्फ़ जब नहीं वही तो क्या
आईनामें ख़ुद ही मैं देखती रही तो क्या
आरसीको फेंक दूँ मुँह लगाके क्या करूँ
बन सँवरके क्या करूँ, पान खाके क्या करूँ

[1]हमजोलियाँ [2]जवानी

जेवर अब पहन चुकी जीसे अब उतर चुका
जाय भाड़में सिंगार दिल अब इससे भर चुका

किससे नाज़ अब करूँ मेरे नाज़[1] उठाए कौन
रूठनेको रूठ लो लेकिन अब मनाए कौन
किससे अपने दिलका भेद अब मैं खुलके कह सकूँ
किसके साथ बेझिझक अब मैं मिलके रह सकूँ

माँगती जो कोई चीज़ उनसे मुस्कराके मैं
हँसते उसको देके वो हँसती उसको पाके मैं
दिलमें अब लगी है आग दिल्लगी वो ले गये
अब हँसीका मुँह कहाँ सब हँसी वो ले गये

या तो मुझसे छीन ले उनकी याद ए खुदा
या तो उनको लाके कर मुझको शाद ए खुदा
या तो कर सिड़िन[2] मुझे होशमें न आऊँ मैं
या तो अपने होशमें उनको देख पाऊँ मैं

काम कुछ न कर सका ए ख़याल जाके तू
मुझसे कुछ न कह सका उनका हाल आके तू
तूने मेरे दिलका दर्द उनसे कुछ कहा भी था
उनसे मिलके मुझको याद मेरा ग़म रहा भी था

क्या मैं तुझसे पूछ उठी तू पयामबर[3] नहीं
तुझमें गो[4] रसाई है गुफ़्तगू[5] मगर नहीं
गुफ़्तगू न हो तो खैर, दिल पै तेरा बस तो है
दिलकी दिलको दे ख़बर हाँ ये दस्तरस[6] तो है

[1] नाज़ नख़रे [2] पागल, सनकी [3] सन्देशवाहक [4] गो=यद्यपि, रसाई =पहुँच [5] वार्तालाप [6] शक्ति, सामर्थ्य

फिरके उनके दिलके गिर्द घेरना जरूर था
उनके दिलको मेरी सिम्त[1] फेरना जरूर था
उनके दिलमें करके राह क्यों न उसमें की जगह
तू तो था मेरा ख़याल क्यों न ली मेरी जगह

उनके दिलमें मेरी जा शायद अब नहीं रही
छिन गई मेरी जगह और मैं यहीं रही
शायद और कोई शक्ल खुब[2] गई निगाहमें
कोई रोक हो गई इस तरफ़की राहमें

तोबा होके बदगुमाँ[3] मैंने की ख़ता जरूर
चाहे वो कहीं रहें उनमें है वफ़ा जरूर
काश ओ ख़याल तू अब न आए मेरे पास
काश उनकी याद तू अब न लाए मेरे पास

या मेरी नजरको ले और उनके पास जा
मुझसे तू जिगरको ले और उनके पास जा
देख ले नज़र उन्हें देख लें जिगरको वो
आये मुझ पै कुछ तरस आयें अपने घरको वो

घरका नाम ख़ाक लूँ बनके ये बिगड़ चुका
इस पै ओस पड़ चुकी मिट चुका उजड़ चुका
छत टपकती है तो उँह कौन उसकी ले ख़बर
रो रही हूँ मैं इधर रो रही है वो उधर

रंग ख़ाकमें मिला ख़ाक रंगपर चढ़ी
रंग उसी क़दर घटा ख़ाक जिस क़दर बढ़ी
मैं ही ख़ाकमें मिली घरकी फ़िक्र ख़ाक हो
उनका ज़िक्र छोड़कर घरका ज़िक्र ख़ाक हो

---

[1] ओर [2] गड़ [3] भ्रममें पड़के

वो पलंग उन्हींका है इस पै अब रहे तो कौन
ख़ुद ही जाके वो रहें जाके ये कहे तो कौन
अट गया है ख़ाकमें गर्द हो गया पलंग
आयें वो तो मुझसे लें और एक नया पलंग

ज़िक्र क्या पलंगका ये ज़रासी चीज़ है
मुझको अपनी जान तक उनसे कब अज़ीज़[1] है
राह उनकी रोक लूँ, अब जो उनको पाऊँ मैं
पुतलियोंमें दूँ जगह सामने बिठाऊँ मैं

बाल अपने खोलकर उन पै जाल डाल दूँ
जब ज़रा क़दम हिलें उन पै बाल डाल दूँ
ऍं ! ये बोलता है कौन दर्द जिसके दिलमें है
गर्म आती है हवा आग इसके दिलमें है

कोई आके पेड़पर कह रहा है 'पी कहाँ'
पी कहीं हैं मैं कहीं क्या कहूँ है जी कहाँ
जी रही हूँ मैं मगर जी मेरा है पीके साथ
पास हूँ कि दूर हूँ हैं वो मेरे जीके साथ

आई उनके सिम्तसे और बू भी लाई तू
आज ओ हवा ज़रूर उनको छूके आई तू
उनसे मिलके आई है आ तेरी बलाएँ लूँ
तूने ख़ुश किया मुझे आ तुझे दुआएँ दूँ

जाके उनके पास फिर तू जो उनको ला सके
दर्द दिलका जा सके चैन दिलमें आ सके
ओ दिल और क्या करूँ तेरे दर्दका इलाज
ख़तमें रखके भेज दूँ तुझको उनके पास आज

---

[1]प्रिय

शर्त है कि मेरे पास फिर पलटके आए तू
अपने ख़ूनकी क़सम देके उनको लाये तू
यूँ न आएँ तो मैं लूँ "शौक़"की कशिशसे[१] काम
खिचके आएँ इस तरह तो न लें उधरका नाम

दूसरा रुख़

औरत अपने शौहरके आनेकी उम्मीदमें है। शौहरका खत परदेससे आया कि वह अभी नहीं आ सकता। औरत बेचैन होकर शौहरको खत लिख रही है और अपने ख्यालात ज़ाहिर कर रही है :—

पाके तुम्हारे ख़तको आज दिलकी तड़प बढ़ी कुछ और
दिलमें भड़कके ग़मकी आग जिस्मपै तप[२] चढ़ी कुछ और
आनेका आसरा कहाँ यासमे[३] वो बदल चला
दिल मेरा आँसुओंके साथ बनके लहू निकल चला
दरकी[४] तरफ़ थी जो निगाह यासमे अब ज़मींपै है
हाथ कभी जिगरपै है और कभी जबींपै[५] है
ज़ोफ़से[६] जिस्म लट चला रूह बदनसे हट चली
चेहरेका रंग कट चला नब्ज़की चाल घट चली
ख़तसे पड़ी जिगरपै चोट दाग़ हरे हुए हैं आज
तुमसे हज़ारहा गिले[७] दिल में भरे हुए हैं आज
ख़त ही तुम्हारे हाथका पढ़ती हूँ इसको बार-बार
खोलती हूँ हज़ार बार चूमती हूँ हज़ार बार
जिनसे लिखा गया है ख़त काश वो अँगुलियाँ मिलें
मेरा ख़याल चूम लें जाके वहीं जहाँ मिलें

[१]आकर्षण [२]ज्वर [३]निराशासे [४]द्वार
[५]माथा [६]दुर्बलता [७]शिकायतें

ख़ुद भी गये तुम और चैन छीनके मुझसे ले गये
मुझको सिड़िन बना गये मुझको जनून[1] दे गये
सबके जिगरमें ख़ून है मेरे जिगरमें दर्द है
सबका शबाब लाल है मेरा शबाब ज़र्द है
एक तुम्हीं थे मेरा ऐश बन गये ग़म तो क्या करूँ
पहले तुम्हीं थे मेरा चैन अब हो सितम तो क्या करूँ
ऐशको खो गये हो तुम आओ तुम्हीं तो फिर मिले
चैनको ले गये हो तुम लाओ तुम्हीं तो फिर मिले
तुम न सितम करो तो क्यूँ दिल मेरा बेक़रार हो
मैं नहीं चाहती कि तुम मेरे गुनाहगार हो
क्या मैं ख़ुदाके सामने तुमको सज़ा दिलाऊँगी
अपनी वफ़ाके नामको ख़ाकमें क्यों मिलाऊँगी
छुप गये पुतलियोंसे तुम इनको नज़र न आओगे
ये तो कहो कि किस तरह दिलसे निकलके जाओगे
दिलमें जमे हो तुम मगर चूस रहे हो ख़ूनको
सरमें ख़याल बनके तुम देते हो शह[2] जनूनको
बनके लहू तुम्हारी याद दौड़ रही है जिस्ममें
जान यही है जिस्ममें रूह यही है जिस्ममें
दम मेरा लूसे बढ़के गर्म दिल मेरा बेहवास है
जिस्ममें जल गया लहू और अभी तपको प्यास है
माँगती हूँ मैं तुमसे भीक दो तो कोई ज़रर[3] नहीं
चाहती हूँ मैं तुमसे रह्म माल नहीं ये ज़र[4] नहीं
रह्मसे मेरे दिलको चैन दोगे तो दे सकोगे तुम
अपने ख़ुदासे ये सवाब[5] लोगे तो ले सकोगे तुम

[1] पागलपन [2] बढ़ावा [3] हानि [4] धन, सोना [5] पुण्य

अपना ख़याल तक नहीं चाहके जोशमें मुझे
एक तुम्हारी याद हाँ लाती है होशमें मुझे
आइनेमें है एक चीज़ चैन मुझे इसीसे है
उन्स है तो इसीसे है और नहीं किसीसे है
देखती रहती हूँ इसे प्यारके साथ बार-बार
इसकी बलाएँ लेनेको बढ़ते हैं हाथ बार-बार
है ये तुम्हारी ही शबीह[1] और ये मेरी जान है
इसमें तुम्हारा हुस्न है इसमें तुम्हारी शान है
जान तो मेरी है मगर कुछ नहीं बोलती तू क्यों
देखती है मुझे ज़रूर मुँह नहीं खोलती तू क्यों
शक्ल ही ये तुम्हारी है तुम हो ख़फ़ा तो ये भी है
दूर तुम और चुप शबीह वो जो ख़फ़ा तो ये भी है
तुम नज़र आही जाते हो ए वो ख़याल ही सही
कुछ नहीं तो शबीह से, सिर्फ़ जमाल[2] ही सही
तुमसे मेरे नसीबमें शायद अभी करम नहीं
वो हैं बड़े ही ख़ुशनसीब हिज्रका[3] जिनको ग़म नहीं
रहती हैं शौहरोंके साथ ख़ूब सिंगार करके वो
हँसती हैं खिलखिलाके वो तनती हैं बन सँवरके वो
रुख़पै शबाबकी बहार रंगसे दोनों गाल लाल
माँगपै मोतियोंका हुस्न पानसे होंठ लाल लाल
वो जो लचकके हिल पड़ें शाख़ गुलोंकी हिल पड़े
होंठ जो हँसके खुल पड़ें गुलकी कलीसी खिल पड़े
बाल खुले तो खाके बल दिलको लपेट ले गये
दिलमें थे जितने वलवले सबको समेट ले गये

[1] तस्वीर [2] रूप [3] वियोग

कुछ तो है ख़ुद बदनमें कस तनती हैं कुछ अदाके साथ
कुछ तो है हुस्न क़ुदरती बनती हैं कुछ अदाके साथ
लेनेको शौहरोंके दिल लुत्फ़ है बात-बातमें
हुस्न है अपनी घातमें नाज़ है अपनी घातमें
मुझको है ग़म तो फिर सिंगार कौन करे तुम्हीं कहो
देखके हुस्न मुझको प्यार कौन करे तुम्हीं कहो
रखते नहीं ये होंठ रंग रखते नहीं ये गाल रंग
तुम नहीं तो नज़रमें है ख़ूनका रंग लाल रंग
काजल उड़े करूँ न अब इसकी तरफ़ निगाह मैं
कहता है आँसुओंके साथ होती हूँ रूसियाह[1] मैं
ख़ाकमें चूड़ियाँ मिलें जीको जला रही हैं ये
भाड़में जायँ बिजलियाँ आग लगा रही हैं ये
बार हैं पत्ते बालियाँ ख़ार हैं चूहे दंतियाँ[2]
किसको दिखाऊँ अपने कान अब मैं पहनके अंतियाँ[3]
देती है दाग़ आरसी मैं न छुऊँगी अब इसे
आती हूँ ज़र्द रू नज़र देखती हूँ मैं जब इसे
बस इसे मैं पहन चुकी दिलपै गिराँ है ज़ेवर अब
तुम नहीं देखते सिंगार ख़ाक फबे ये मुझपै अब
बक्समें इसको करके बन्द सब मैं तुम्हींको भेज दूँ
था ये तुम्हारे ही लिए अब मैं तुम्हींको भेज दूँ
मुझको तो चाहते नहीं शौक़से आके देखना
चाहते हो जिसे वहाँ उसको पिन्हाके देखना
तंज़से[4] क्या ये कह उठी शोख़ मेरी ज़बाँ हुई
है ये ज़बाँ गुनाहगार मैं नहीं बदगुमाँ हुई

[1]काले मुखवाली [2]एक गहना [3]एक गहना [4]व्यंग

तुममें वफ़ा हो या न हो मैं ये कहूंगी है ज़रूर
हाँ ये कहूँगी राहको रोके है कोई शै ज़रूर

आओ न आओ मैं शबाब तुम पै निसार कर चुकी
तुम मुझे प्यार कर चुके मैं तुम्हें प्यार कर चुकी
किससे कहूँ मैं दिलका हाल सोचमें हूँ पड़ी हुई
लेट गई तो आया सोच बैठ गई खड़ी हुई

होती हूँ तंग करवटें ग़मसे बदल-बदलके मैं
काटती हूँ सिड़िनकी तरह रात टहल-टहलके मैं
फोड़के मुँह जो कोई चीज़ माँग उठी तो ज़क[1] मिली
आये पसन्द ऐसी चीज़ मुझको न आज तक मुझे मिली

तेलको मैं तरस गई बाल मेरे चिकट गये
मैं ही लुटी तो बाल क्या उँह वो बलासे लट गये
जैसी फँसी बलामें अब और कभी फँसी नहीं
दिलपै कभी ख़ुशी नहीं मुँहपै कभी हँसी नहीं

मेरी ख़ुशीकी जिन्दगी अक़्दसे[2] पेशतर रही
साथ तुम्हारा क्या हुआ छूटके तुमसे मर रही
जज़्बके वलवले हज़ार ये मुझे सब अज़ाब[3] हैं
सब मेरे दिलका जोश हैं सब मेरा इज़्तराब[4] हैं

क्यों मैं अज़ाब कह उठी चूक है ये क़सूर है
हिज्रमें जज़्ब[5] हीसे है दर्दको जो सुरूर है
जज़्बमें काश हो ये ज़ोर जो तुम्हें लाये खींचकर
घर मेरे पुतलियोंके हैं इनमें बिठाये खींचकर

[1]निराशा हुई [2]निकाह, विवाह [3]पाप [4]व्याकुलता
[5]खिंचाव आकर्षण

चाहके रुख़ खिंची हूँ मैं काहरुबासे[1] जैसे घास
दिल है तपिशसे बेक़रार तेज़ हवासे जैसे घास
काहरुबासे घासको खींचती हूँ हज़ार बार
जज़्बको मैं दिखाती हूँ ज़ोर कशिशका बार-बार
अब भी न ये करे कशिश तो इसे कोई क्या करे
जज़्बका नाम जज़्ब ही फिर न रहे ख़ुदा करे
दिल मेरा ले गये हो तुम इसको न छोड़ दूँगी मैं
तोड़ चुके जो तुम तो ख़ैर लाओ तो जोड़ लूँगी मैं
काँपके दिलमें लाओ ख़ौफ़ अपने ख़ुदाका तुम कभी
अपनी वफ़ासे दो जवाब मेरी वफ़ाका तुम कभी
सिर्फ़ तुम्हारी दीदकी[2] तुमसे हूँ तालिब[3] और बस
सिर्फ़ तुम्हारी आरज़ू मुझपै है ग़ालिब[4] और बस
फिरके तुम्हारी शक्लसे दिल न हटा न हट सके
और किसी तरफ़ कभी ध्यान बटा न बट सके
झूठ जो मैं ज़रा लिखूँ तो हो ख़फ़ा मेरा ख़ुदा
चाहको मुझसे छीन ले दे ये मुझे सज़ा ख़ुदा
तोबा[5]! ये क्या मैं बक गई तोबा! ये क्या मैं कह गई
चाह तुम्हारी जब छिनी फिर तो मैं कुछ न रह गई
चाहका नाम सेह्‌र[6] है तुमपै असर करे ये काश
जज़्बसे खींच कर तुम्हें रुख़को इधर करें ये काश
ग़मसे दबी ख़ुशी मगर चाहकी ये ख़ता नहीं
हिज्र है जब कि चोटसे दर्दकी इन्तहा नहीं

[1] एक प्रकारका पीला गोंद जो घासके सूखे तिनकोंको अपनी आकर्षणशक्तिसे खींच लेता है [2] दर्शन [3] इच्छुक [4] छाई है, [5] ईश्वर क्षमा करे [6] जादू

ज़ब्तकी कोई हद भी है चाहको मैं चुपा चुकी
ग़मकी तो कोई हद नहीं कम न हुआ मैं खा थकी
अश्क[१] तो बहते हैं मगर अश्क नहीं निगाहमें
बढ़के ये मोतियोंसे हैं मुझको तुम्हारी चाहमें
आँचल अगर हो तर तो मैं ख़ुश्क करूँ निचोड़कर
सासके पास जाऊँ तो मुँहको उधरसे 'मोड़कर
रहती हूँ सबसे मैं अलग ताकि न ताड़ जायँ लोग
रोती हूँ सबसे छुपके मैं ताकि न देख पायँ लोग
आती हैं हमसिनें मगर मुझमें नहीं हँसी मेरी
शर्मसे क्या कहूँ कि वो ले गये दिल लगी मेरी
मैं न कहूँ ज़बाँसे कुछ खुलता है दर्द रंगसे
देखती हैं वो ग़मकी शक्ल चेहरेके ज़र्द रंगसे
पूछती हैं तो क्या कहूँ छेड़ती हैं तो क्या करूं
साधके चुप लहूके घूँट बैठी हुई पिया करूँ
झूलनेको जो वो कहें जाऊँ मैं उठके जब्रसे
गायें तो गाऊँ उनके साथ ग़मको छिपाके सब्रसे
सावन अगर मैं गाऊँ भी तो वही जिसमें दर्द हो
रागमें खींचे औरत आह दर्द जब उसका मर्द हो
गानेका दम ही किसमें है तान निकलती ही नहीं
साँसमें ज़ोर ही नहीं खुलके ये चलती ही नहीं
पहले लचकके नाज़से खाती थी मैं हज़ार बल
तुम नहीं अब तो ज़ोफ़से[२] खाती हूँ बार-बार बल
ज़ोफ़का हाल क्या कहूँ ज़ोरको रंज खा गया
आहके साथ बारहा दिल मेरा मुँह तक आ गया

---

[१] आँसू [२] दुर्बलता

पाल गये हो तुम चकोर होती हूँ इससे शाद मैं
लेके इसीको गोदमें करती हूँ तुमको याद मैं
चाँदनी रातमें मगर देते हो ग़म ज़रूर तुम
इसकी नज़रमें चाह है मेरी नज़रमें दूर तुम
चाँदनी रात सर्द है करती है दिलको सर्द वो
तुम मेरे चाँद मुझसे दूर मेरे लिये है दर्द वो
शबको[1] पतिंगे आते हैं गिरते हैं वो चिराग़पर
और जलाते हैं मुझे देते हैं दाग़-दाग़पर
पाऊँ तुम्हें तो हूँ निसार गिर्द फिरूँ उसी तरह
तुमसे मिलूँ उसी तरह तुमपै गिरूँ उसी तरह
तुम मुझे क्यों न ले गये चल दिये मुँहको मोड़कर
चल दिये मुझको छोड़कर चल दिये दिलको तोड़कर
सासको मुझ पै रह्म क्या वरना वो रोकतीं तुम्हें
नन्दको मुझ पै क्या तरस, वरना वो टोकतीं तुम्हें
पाक मुहब्बत और मैं मिलनेकी फ़िक्र क्यों न हो
जोश वफ़ाका और दिल चाहका ज़िक्र क्यों न हो
जिनके दिलोंमें खोट हो उनको कहाँ वफ़ासे काम
मुझमें वफ़ा है इसलिए ग़ममें पड़ा ख़ुदासे काम
हिज्रकी काहिशोंके[2] साथ ये मेरी नाज़ुकी ये सिन
मुझको सज़ा ये क्यों मिली सोच यही है रातदिन
की नहीं मैंने कुछ ख़ता की हो तो भूल जाओ तुम
मुझको न देखना मगर ख़ैरसे घरको आओ तुम
आओ जो तुम तो रुख़ पै मैं आँचल उठाके डाल लूँ
इसमें तो हर्ज कुछ नहीं झाँकके देखभाल लूँ

[1]रात [2]तकलीफ़ों, परेशानियों

अब्र[१] उमंडके आ गया रोऊँगी इसके साथ मैं
अपने जिगरके ख़ूनसे धोऊँगी अपने हाथ मैं
बोल उठा वो मेरा मोर हाथसे अब तो दिल गया
मुझको न मिल सकोगे तुम इसको तो अब्र मिल गया
घरमें है पेड़ अनारका इस पै पपीहे आते हैं
देखके मेरी बेकसी मुझपै तरस वो खाते हैं
वो नहीं बैठते कभी पेड़के ऊपर आके चुप
तुमको पुकारते हैं रोज़ शर्मसे मुझको पाके चुप
अब्र उठे तो सुनके शोर रोती हूँ ख़ौफ़ खाके मैं
देखके बिजलियोंकी आग गिरती हूँ तिलमिलाके मैं
तुम मेरे पास हो तो फिर ख़ौफ़ मुझे ज़रा न हो
वह्मसे डर है डरसे वह्म जब कोई दूसरा न हो
औरत अगर मैं हो पड़ी इसमें मेरी ख़ता नहीं
ये तो कहो कि तुम पै कुछ मेरा भी हक़ है या नहीं
पाँव ख़ुदाने क्यों दिये क्या इसी सेह्लके लिये
सब मेरे दिलके हौसले मुझसे हयाने ले लिये
परदामें रहके औरतें मरती हैं गो क़ज़ा[२] न हो
शर्मका हक़ अदा करें चाहका हक़ अदा न हो
अश्क मेरे टपक पड़े ख़त हुआ तर मैं क्या करूँ
भीगके कुछ बिगड़ गये हर्फ़ मगर मैं क्या करूँ
बँध गया आँसुओंका तार ख़ुश हूँ मैं देखकर इसे
बन गया मोतियोंका हार पहने तुम्हारी याद इसे
सब्रसे गुज़री मौतपर अब तो जिगर[३] करूँगी मैं
अपने बदनकी आगसे आप ही जल मरूँगी मैं

---

[१]बादल [२]मृत्यु [३]मरने का साहस

मुझको यक़ीन है कि तुम आके मुझे न पाओगे
आके न पाओगे तो क्या मेरी लहद पै आओगे
फ़ातहा[१] भी पढ़ोगे तुम हाथ उठाके या नहीं
रूको ख़ुश करोगे तुम फूल चढ़ाके या नहीं
सब्ज़ेको[२] देखना ज़रूर मुझ पै वो वार हो न जाय
नर्म रहे हरा रहे सूखके ख़ार हो न जाय
जान लबोंसे दे चुकी तुमको पयाम और बस
सुनती हूँ 'शौक़' हैं वहीं उनको सलाम और बस

तीसरी रुख़

शौहर ने औरत के ख़तका जवाब लिखा है :—

तुम्हारे ख़तको देखकर नज़र इसीमें घिर गई
तुम्हारी शक्ल ख़तके साथ पुतलियोंमें फिर गई
है लफ़्ज़-लफ़्ज़[३] ख़तका दर्द ग़मकी दास्तानसे
क़लम तुम्हारा दिल बना वो बोल उठा ज़बानसे
तुम्हारे सब गिले बजा तड़प बजा अलम[४] बजा
तुम्हारी सब शिकायतें तुम्हारी सब क़सम बजा
वहाँ जो दिलमें दर्द है यहाँ भी आह सर्द है
वहाँ जो रंग ज़र्द है यहाँ भी रुख़ पै गर्द है
उधर भी चोट इधर भी है न ताब उधर न ताब इधर
न चैन उधर न चैन इधर न ख़्वाब उधर न ख़्वाब इधर
उधर टहलके शब कटे इधर तड़पके शब कटे
ये सोच शाम हीसे हो कि देखें रात कब कटे

[१]आत्माकी शान्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थना [२]हरियालीको [३]शब्द-शब्द [४]दुख

तुम्हारा चैन मैं ही था जो दूर मैं तो दूर वो
सरूर[1] मेरे दमसे था न मैं न अब सरूर वो
मेरी ख़ुशी तुम्हींसे थी न तुम न अब ख़ुशी मेरी
फ़िराक़[2] चैन ले गया रुलाके सब ख़ुशी मेरी
वो दिन ख़याल हो गये वो रातें ख़्वाब हो गईं
वो दो दिलोंकी राहतें सब इज़्तराब[3] हो गईं
न इन लबों पै वो हँसी न रुख़पै अब वो रंग है
न रूहमें वो ताज़गी न दिलमें वो उमंग है
शबाब[4] रंग हुस्न उनकी सूरतें बिगड़ गईं
घरोंमें लूट पड़ गई तो बस्तियाँ उजड़ गईं
जहाँ न कोई दूसरा जो ग़मसे पाक हो कहीं
तो हम तुम इस जहानसे निकल चलें रहें वहीं
यहाँ हज़ार आफ़तें इन्हींमें दिल घिरा करे
यहाँ हज़ार गर्दिशें[5] इन्हींमें सर फिरा करे
वो मुल्क चलके ढूँढ लें जहाँ न आसमान हो
जहाँ न इसके ज़ुल्मसे मुसीबतोंमें जान हो
जहाँ न हो अजल[6] कि इसको उसका दाग़ दे सके
जहाँ ज़मीन भी न हो कि गोर मुँहमें ले सके
जहाँ न कोई फ़िक्र हो न भूख हो न प्यास हो
जहाँ न मैं उदास हूँ जहाँ न तुम उदास हो
तुम्हारे आँसुओंके दाग़ ख़तमें जिस जगह पड़े
वो ख़तसे मेरे दिलमें आके दाग़ बनके रह गये
तुम्हारी उम्र हो दराज़ अजलका नाम छोड़ दो
लहदके[7] मुँहमें ख़ाक मुँहसे ये कलाम छोड़ दो

[1]ख़ुशी [2]वियोग [3]बेचैनी [4]जवानी [5]कालचक्र [6]मौत [7]क़ब्र

हवा लहदके सब्ज़ेकी भरे न फिर दिमाग़में
है सब्ज़ा नर्म और हरा तुम्हारे ख़ाना बाग़में[१]
न तुम हो भूलनेकी शै न तुम हो छूटनेकी शै
क़सम ख़ुदाकी तुम हो दिलमें और दिल बग़लमें है

नज़रमें ख़ूबके नूर बनके तुम मेरी नज़रमें हो
जमाल[२] बनके दिलमें हो ख़याल बनके सरमें हो
तुम्हारी मुस्कराहटोंको आज याद कर रहा हूँ मैं
खिलें न दांत इस अदा पै स्वाद[३] कर रहा हूँ मैं

वो लब वो उनकी जुम्बिशें मेरी नज़रको याद हैं
वो हलकी-हलकी चुटकियाँ मेरे जिगरको याद हैं
वो तिरछी-तिरछी चितवनें सितम करें फिरें जिधर
वो काली-काली पुतलियाँ कभी इधर कभी उधर

वो बाल खोलकर कभी छटकके सरको थामना
लचक पड़े बदन तो फिर लपकके दरको थामना
लबोंको अपने पोंछना वो आरसीको देखकर
न फैल जाय ताकि रंग पानका इधर-उधर

वो नाज़ुकी[४] कि तुमने कहके ये उतारी आरसी
गिराँ है मेरे हाथपर जड़ाऊ भारी आरसी
वो नापसन्द लौंगका भवें चढ़ाके फेरना
वो मेरी सिम्त फिर नज़रको मुस्कराके फेरना

गिलौरियोंकी सूरतें वो ख़ुशनुमा नई-नई
सपेद पान ऊपर और अन्दर उसके पिस्तई
वो सादगी तुम्हारी बाँकपनको शह[५] दिये हुए
वो शोख़ियाँ हयाको अपनी गोदमें लिये हुए

[१]घरके बाग़ [२]रूप [३]सही करनेका चिन्ह, सही मानता
[४]कोमलता [५]बढ़ावा

सहरके वक़्त फेंकना गलेसे हार उतारके
बिछौनेसे वो झाड़ना गिरें जो फूल हारके
वो हार मुझको याद है कहा था देखकर जिसे
हैं मूगरेके फूल कम नहीं पहनती मैं इसे
करख़्त बू है[1] सरमें दर्द होगा दूर डाल दो
नहीं तो कामनीके फूल चुनके तुम निकाल दो
पलंग अपना खींचकर वो चाँदनीमें लेटना
हवा सहरकी[2] सर्द हो तो जिस्मको समेटना
ज़री करेबसे वो चिढ़ कि चुभती है ये ख़ारसी[3]
पसन्द सिर्फ़ मलमल और गुलबदन बनारसी
वो चूड़ियोंका फेरना कहा था देखकर जिन्हें
चुभेंगे इनके गोखरू न पहनूँगी कभी इन्हें
कहो बदलके लायें ऐसी चूड़ियाँ बड़े मियाँ
कि तीन-तीन बाँसकें[4] चार-चार हों करेलियाँ
गिरा ज़मुर्रद[5] एक शब जो टूटकर बुलाक़से[6]
तुम उसको ढूँढ़ने लगीं चराग़ लेके ताक़ से
तुम्हें तो वो नहीं मिला मगर मैं उसको पा गया
दिया तो फिर तुम्हें मगर मैं उस घड़ी छुपा गया
मेरी हँसी पै वो तुम्हारा पेच-ओ-ताब याद है
वो त्योरियाँ चढ़ी हुई वो इज़्तराब याद है
ग़रज़ ख़ुदासे है दुआ कि तुम हो और जहान हो
तुम्हीं तो मेरी रूह हो तुम्हीं तो मेरी जान हो
तुम्हारा जेवर और आये मेरे पास डाकपर
लगाया तीर तन्ज़का ये तुमने दिलको ताककर

[1]कड़ी गंध [2]प्रभात समीर [3]काँटे [4]एक चूड़ीका नाम [5]पन्ना
[6]नाकमें पहननेका एक गहना

तुम्हारी बदज़नी[1] बजा मगर ग़लत मगर ग़लत
ये आँखें बेवफ़ा नहीं तो पड़ती क्यों नज़र ग़लत
नज़रमें तुम जिगरमें तुम तो कौन दख़्ल पा सके
मकान सब घिरे हुए हैं कौन इनमें आ सके

क़सम तुम्हारे गेसुओंकी जिनके बीचमें है दिल
क़सम तुम्हारे साफ़ रुख़की जिसपै है सियाह तिल
क़सम तुम्हारी पुतलियोंकी जिनकी हर नज़र बला
क़सम तुम्हारे अबरुओंकी[2] जिसके बसमें करबला

क़सम तुम्हारे उन लबोंकी जिनका रंग लाल है
क़सम तुम्हारे घूँघरुओंकी जिनके बसमें चाल है
क़सम तुम्हारे सरकी जिसके बाल हैं बड़े-बड़े
क़सम नज़रकी जिससे पाये ज़क[3] अगर नज़र लड़े

क़सम तुम्हारे दिलकी जिसमें बारहा फिरा हूँ मैं
क़सम तुम्हारे वसवसों[4] को जिनमें अब घिरा हूँ मैं
क़सम तुम्हारे इस सुख़नकी [5]तन्ज़ जिसका काम है
क़सम तुम्हारी उस छुरीकी नाज़ जिसका नाम है

क़सम तुम्हारी इस हँसीकी जिससे गुल खिला करे
क़सम तुम्हारी उस ज़बाँकी मुझसे जो गिला करे
क़सम तुम्हारे उस ग़ज़बकी सुर्ख़ जिससे गाल हों
क़सम तुम्हारी उस हिनाकी हाथ जिससे लाल हों

क़सम शिकनकी जब जबींपै[6] नाज़ इसको डाल दें
क़सम सदाकी बातको जब उँह'के साथ टाल दें

[1]बदगुमानी शंका [2]भौंहोंकी [3]हार जाय [4]भ्रमों [5]बात, बोल [6]माथे पर

क़सम गलेकी, जिससे ज़ेब[१] मोतियोंके हारको
क़सम दहनकी,[२] जिसके दाँत दें शिकस्त अनारको
क़सम है उंगलियों की दिल को छीन लें वो जब हिलें
क़सम है रुख़के सायेकी ज़मीं पै जिससे गुल खिलें
क़सम है बेरुख़ीकी जिसको फिरके रुख़ अयाँ[३] करे
क़सम है ख़ामशीकी जब निगाह कुछ बयाँ करे
क़सम है तनकी क़द्देआदम[४] आईना जिसे कहूँ
क़सम है क़दकी जिसका साया बनके काश मैं रहूँ
क़सम तुम्हारी चालकी है, जिसके साथ हश्र[५] है
क़सम क़दमकी जुम्बिशोंकी जिनके साथ नश्र[६] है
ग़रज़ तुम्हारे हुस्नकी क़सम यक़ीन मान लो
मेरे जिगरमें और दिलमें हो तुम्हीं यें जान लो
यहाँ मैं आके पड़ गया तिजारतोंके फेरमें
जब इनमें गुत्थियाँ पड़ीं तो सुलझीं जाके देरमें
न छोड़ो अपना आसरा न तोड़ो दिलको याससे
न तुम उमीदको हटाओ अपने दिलके पाससे
गिले न फिर गिले रहेंगे मुझको पाके एक दिन
हँसी बनेंगे सब गिले लबों पै आके एक दिन
मैं ख़तमें चैन भेज दूँ जो तुमको चैन आ सके
नज़र तो पा ही जायगी मगर जो दिल भी पा सके
ये ख़त है मेरे हाथका इसीको चैन जान लो
मैं बीसवें दिन आऊँगा यक़ीन इसका मान लो
मैं इस ख़बरसे ख़ुश हुआ कि ज़िन्दा है चकोर भी
तुम्हारे पास है तुम्हारा वो हसीन मोर भी

[१]शोभा [२]मुँह [३]प्रकट [४]आदमक़द [५]प्रलय [६]प्रसार

पपीहे खुश रहें कि रोज वो मुझे बुलाते हैं
जो अब कहें वो "पी कहाँ" तो तुम कहो कि आते हैं
ये खत तो खत्म हो चुका पयाम अब है 'शौक़' का
दुआएँ अब हैं शौक़की सलाम अब है शौक़का

चौथा रुख़

शौहरके खतमें लिखा था कि मैं बीसवें दिन आऊंगा आज बीसवाँ दिन है। औरत इन्तज़ारमें अपने ख्यालसे बातें कर रही है :—

ख़तको है बीसवाँ दिन आज आयेंगे 'वो' जरूर ही
क्या मैं खिंची हुई रहूँ 'उन' की नजरसे दूर ही
'उन' की सदा सुने तो फिर हो न सके जिगरसे सब्र
पाके 'उन्हें' कभी न हो तरसी हुई नजरसे सब्र
क्या मैं जिगरको थाम लूँ क्या मैं नज़रको फेर लूँ
क्या 'वो' उधरसे आयें तो रुख़ मैं इधरको फेर लूँ
'उनकी' कशिश[1] में आके रुख़ फिर न सके तो क्या करूँ
दिलसे करूँ तो जोरमें दिल जो थके तो क्या करूँ
और अगर न आये 'वो' हाय ये शक सितमका है
आ मेरे दिलमें ओ उमीद वक़्त तेरे करमका है
शकसे पड़ी मैं सोचमें डरती हूँ रास आ न जाय
उससे चिढ़ी हुई हूँ मैं वो मेरे पास आ न जाय
आते ही यासका ख़याल काँप उठी हूँ डरके मैं
दर[2] नहीं दिलमें वरना आज बैठती करके बन्द मैं
याससे हूँ जली हुई उसको मैं झोकूँ भाड़ में
हट मेरे दिलसे ओ शक आज यास है तेरी आड़में

[1] आकर्षण [2] दरवाज़ा

आयेंगे या न आयेंगे दिल मेरा काश बोल दे
नाख़ुन अगर बने तो ये शककी गिरहको खोल दे
बोल उठा वो मेरा दिल कहता है आ रहे हैं 'वो'
मेरे लिये बहुतसा चैन तोहफ़ेमें ला रहे हैं 'वो'

देख रही हूँ आरसी चेहरे पै रंग आ गया
दिलने किया है सुर्ख़रू[1] वरना कहाँसे पा गया
दिलको मिला कहाँसे रंग इसको मिला उमीदसे
पायेगा ये कुछ और भी आज ही उनकी 'दीद' से

कल मेरे सरमें था जनून आज है कुछ ग़रूर-सा[2]
कल मेरे दिलमें था मलाल आज है कुछ सरूर-सा
अपने लबों पै बार-बार पाती हूँ मैं तबस्सुम[3] आज
ख़ुश रहो ऐ मेरे लबो कहते हो और कुछ तुम आज

घरकी ज़मीन जाग उठी सेह्न पै नूर छा गया
आयेंगे 'वो' ज़रूर ही मुझको यक़ीन आ गया
नाच रहा है ख़ूब आज सुनके हुआ है मोर ख़ुश
इसको भी मिल गई ख़बर फिरता है क्या चकोर ख़ुश

आके पपीहे पेड़पर अब जो कहेंगे 'पी कहाँ'
उनसे कहूँगी हँसके मैं बैठे हैं देखो 'पी यहाँ'
दिल तो ख़फ़ा नहीं मगर मेरी नज़र झुकी रहे
बादको बातचीत हो पहले ज़बाँ रुकी रहे

पाके 'उन्हें' रुके ज़बान इसमें कहाँ ये ज़ब्त है
इसको तो बोलचालमें 'उन' की ज़बाँसे रब्त[4] है

[1] सुर्ख़=लाल, रू=मुख, प्रसन्नता, सफलताकी प्रसन्नतासे मुँह लाल
[2] घमंड [3] मुस्कान [4] स्नेह

बननेको मैं बनूँ मगर बन भी सकूँगी या नहीं
तननेको मैं तनूँ मगर तन भी सकूँगी या नहीं
बनके शगुफ़्तगी[1] ख़ुशी रुख़से जो खिल पड़े तो फिर
लुत्फ़के साथ करके मेल उनसे नज़र लड़े तो फिर
होंठ तो मेरे बसके हैं इनको सिखाऊँ जंग मैं
लेकिन उड़ाऊँ किस तरह रुख़से ख़ुशीका रंग मैं
तरसी हुई हैं पुतलियाँ चैनसे कब ये रह सकें
शौक़से बेक़रार हूँ गरचे ये कुछ न कह सकें
दिल ये कहेगा मेल कर लब ये कहेंगे बोल दे
हुस्न कहेगा हाथसे तू मेरे रुख़को खोल दे
आपही बढ़ चलेंगे पाँव आऊँगी हटके सामने
लायेंगी शोख़ियाँ मुझे घूँघट उलटके सामने
शकल कशिशकी बन पड़ी दिलको जो रोक थाम लूँ
सब्रकी दिलमें ठान लूँ जब्रसे[2] दिलपै काम लूँ
बनके बला मैं उनके सर आज पड़ूँ ज़रूर ही
दिलमें हँसा करूँ मगर मुँहसे लड़ूँ ज़रूर ही
ख़तमें गिले मैं लिख चुकी और गिलोंमें लुत्फ़ है
होगी मज़ेकी नोक झोंक गरचे दिलोंमें लुत्फ़ है
आँख मेरी जो उठ ही जाय जल्द नज़रको फेर लूँ
सिर्फ़ नज़र हीको नहीं बल्कि, मैं सरको फेर लूँ
आयें जो रुख़की सिम्त 'वो' हाथोंसे मुँह छिपाऊँ मैं
झाँकके उँगलियोंसे हाँ देखूँ जो देख पाऊँ मैं
दाँत मेरे दबाएँगे ताकि रहे ज़बान बन्द
कुछ 'वो' कहें तो उँगलियाँ उठके करेंगी कान बन्द

---

[1]प्रफुल्लता [2]ज़बरदस्ती

एक पलकसे दूसरी बन्द रहे मिली रहे
जैसे अनारकी कली सूखके बेखिली रहे
नीचेके लब पै दाँत हों और नजर जमीं पै हो
हाथ मेरे जिगर पै हों और शिकन जबीं पै हो
मेरे लबों पै गर हँसी आये जो छेड़-छाड़में
हाथमें लेके पंखियाँ मुँहको करूँगी आड़ में
लब न हिलें ख़ुदा करे मैं जो उन्हें हिलाऊँ भी
'उनसे' मिलें न चितवनें मैं जो इन्हें मिलाऊँ भी
सरको जो मैं उठाऊँ भी तो न उठे झुका रहे
दिलको जो मैं बढ़ाऊँ भी तो न बढ़े रुका रहे
कुछ जो 'वो' दें तो यूँ न लूँ लूँ तो नहीं नहींके बाद
लाख रुकावटोंके बाद लाख चुनाँचुनीं[1]के बाद
बोल उठूँ तो हो जुदा उनसे रविश[2] जबानकी
जो वो कहें जमीनकी मैं कहूँ आसमानकी
'वो' मेरे ख़तकी चुटकियाँ याद दिलाएँगे मुझे
छेड़नेको हँसेंगे ख़ुद और हँसायेंगे मुझे
मक्र[3]से बदगुमाँ बनूँ अपनी ही रक्खूँ टेक मैं
लाख नहीं नहीं करें उनकी न मानूँ एक मैं
दिल जो न माने तो उन्हें तिरछी नजरसे देख लूँ
या हैं किवाड़में दरार जाके उधरसे देख लूँ
मुझसे 'वो' माँगें या नहीं दूँगी जरूर पान मैं
फेरके मुँह बढ़ाऊँगी हाथसे ख़ासदान[4] में
मेरी दग़ाके जालमें क्या 'वो' उलझ ही जायेंगे
साफ़ हैं दिलकी औरतें ये 'वो' समझ ही जायेंगे

[1]टालमटोल [2]ढंग [3]छल [4]पानकी थाली या डिब्बा

'आई लबों पै वो हँसी' ये कहें और हँसाएँ तो
लाख दबाऊँ मैं मगर लब मेरे खुल हो जायँ तो
दिलमें जो गुदगुदी-सी हो, रुक न सके कभी हँसी
बातें ही ये हँसीकी हैं आने लगी अभी हँसी
उँह, मुझे इसका सोच क्या दिलमें तो रंज ही नहीं
अपनी वफ़ाको छोड़ दे दिल मेरा ऐसी शै नहीं
दिलमें बसे हुए हैं 'वो' इसमें ख़याल उन्हींका है
दिल मेरा है वो आईना जिसमें जमाल उन्हींका है
फैले हैं रूह बनके 'वो' मेरे तमाम जिस्ममें
मेरी हयात[1] हैं 'वही' जान है नाम जिस्ममें
ओ मेरे दिल! कशिश कुछ और ताकि 'वो' खिचके आही जायँ
मैं उन्हें जल्द पा ही जाऊँ वो मुझे जल्द पा ही जायँ
जंगको हो रही है देर और वो मज़ेकी बात है
दिलको लुभा ले नाज़से हुस्नकी ये भी घात है
अब तो ये फ़िक्र है कि आज कुछ तो सिंगार चाहिये
टूट गया है कल बुलाक़ सोनेका तार चाहिये
शौक़के पास भेज दूँ एक ज़रासा तार क्या
दाम न लें वो तो न लें तारका ऐसा बार क्या
हाथोंमें चूड़ियाँ हैं कम टूटके गिर गईं कईं
आयेंगे अब बड़े मियाँ उनसे मँगाऊँगी नईं
मुझको भी सादगी पसन्द उनको भी सादगी पसन्द
पहनूँ सफ़ेद ही लिबास होगा उन्हें यही पसन्द
बेलें हों या हों बूटियाँ फबती हैं कामदानियाँ
चन्द दुपट्टे फाड़ लूँ रखी हैं जामदानियाँ[2]

[1]जीवन [2]एक महीन कपड़ा

बेलें कटावकी अभी चौकसे मैं मँगा न लूँ
लाई है अच्छन एक बेल इसको भी लूँ मैं या न लूँ
बेल चिकनकी है मगर कुछ भी नहीं धुली ख़राब
एक तो शरबती बुरी दूसरे तेपची ख़राब
किससे मँगाऊँ बेल मैं सबसे ख़फ़ा हैं देवर आज
लड़के गये दुल्हनसे वो बिगड़े हुए हैं तेवर आज
क्यों न कहूँ बुआसे मैं ख़ुद वो बनाती हैं कटाव
चौकसे लेती आये वो जाये जो लेने नानपाव
हार मैं गूँध लूँ अगर फूल हों ख़ाना बाग़में
अबके बरस तो मूगरा घरमें खिला न बाग़में
हो ही रहेगा ये तो सब मुझको ख़याल एक है
सास 'चुप ओ ज़बान चुप' ननद ज़रूर नेक है
उसकी-सी बिसकी[1] गाँठ और कोई न होगी शह्रमें
रक्खी है मुँहमें एक छुरी उसने बुझाके ज़ह्रमें
जब वो जलनसे लाल हो गाल हों गरम दो तवे
ख़ुद तो है लेहसुन और दाँत जैसे छिले हुए जवे
देखके ये चमक-दमक वो मेरे रूपसे जले
रेतमें कोई जिस तरह जेठकी धूपमें जले
आज मुझे भी है घमंड तंज़का कुछ भी ग़म नहीं
उसको जो है "किसी"पै नाज़ मैं भी कुछ उससे कम नहीं
लेती है दिलमें चुटकियाँ करती है दिलका ख़ून वो
लाती है घरसे अपने साथ मेरे लिए जनून वो
ऐ लो 'हज़ूर' आ गये बनती सँवरती ही रही
बन न पड़ा सिंगार कुछ हौसला करती ही रही

---

[1]विष

ज़हे-इश्क़

'शौक़' लखनवी

उर्दूमें छन्दवद्ध कथानकको मसनवी कहते हैं। उर्दू कवियोंने कई मशहूर मसनवियाँ लिखी हैं। मसनवी 'ज़ह्रे-इश्क़' उर्दूकी सबसे मशहूर और सबसे बदनाम मसनवी है। यह बदनामी पिछले पच्चीस बरसोंके अन्दर बिल्कुल मिट गई ---इस बदनामीको दूर करनेके लिए अबसे पचास बरस पहले मौलाना अल्ताफ़ हुसेन हालीने क़लम उठाया था। उन दिनों मसनवी ज़ह्रे-इश्क़ बहुत बदनाम थी। इसका कारण क्या था। एक नौजवान आदमीकी एक नवजवान औरतसे मुहब्बतकी कहानी इतने प्रचंड, तीव्र और सफल ढंगसे इस मसनवीमें सुनाई गई है जिसकी मिसाल कहीं और न हम पा सकते हैं न सोच सकते हैं---एक तेज़ छुरीकी तरह ये कहानी दिलोंमें उतरती चली जाती हैं। नाटकके रूपमें ये कहानी जब अबसे पचास बरस पहले रंगमंचपर दिखाई जाती थी और इस मसनवीके शेर गाकर सुनाए जाते थे तो लाखों नौजवान लड़के लड़कियाँ लगभग पागल हो जाते थे। कइयोंने इस मसनवीके नायक और नायिकाके अनुकरणमें ज़ह्र खा लिया और आत्म-हत्याओंकी एक लहर-सी दौड़ने लगी। इस तरह ये मसनवी इतनी सफल सिद्ध हुई कि अंग्रेज़ी सरकारने इसका छपना, बिकना, पढ़ना, और रंगमंचपर दिखाया जाना ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया।

अब ज़माना बदल चुका है। और जो बातें मौलाना हालीने अबसे पचास बरस पहले इस मसनवीकी प्रशंसामें कही थीं उनकी सत्यताको अब पूरा समाज मानने लगा। एक नौजवान कहीं रहता था। सामने

ही एक सौदागरका मकान था जिसकी एक नौजवान लड़की थी। नौजवानकी आँखें लड़कीसे लड़ जाती हैं। दोनों छुप-छुपकर मिलने लगते हैं। बदनामी फैलती है। लड़कीके माँ-बाप लड़कीको बनारस भेज देना चाहते हैं ताकि दोनोंका मिलना बन्द हो जाय। लड़की छुपकर अपने प्रेमीसे मिलती है। यह उनकी मुलाक़ातकी आख़री रात है। लड़की फ़ैसला कर चुकी है कि वह सुबहको ज़हर खा लेगी। यह रात प्रेम और प्रिया-मिलनकी आख़री रात है। लड़की प्रेमीको समझाती है कि बदनामीकी ज़िन्दगीसे मौत बेहतर है। नौजवान घबरा उठता है तो लड़की बहाना कर देती है कि मैं तो तुझे छेड़नेके लिए 'विष-पानकी बात कर रही थी। पिछले पहर लड़की प्रेमीसे बिदा होती है और घर आकर विष-पान कर लेती है।

एकलौती बेटीकी मौतसे सौदागरके घर भरमें कुहराम मच जाता है। जब जनाज़ा निकलता है तो लड़कीके घरवाले और सैकड़ों पड़ोसी रोते हुए जनाज़ेके साथ चलते हैं और लड़कीको दफ़न करके घर वापस आ जाते हैं। लड़कीका प्रेमी भी दो-ही चार दिनके अन्दर ज़हर खा लेता है। बेहोशीकी हालतमें वह एक सपना देखता है जिसमें लड़की परलोकसे आकर उसके सामने खड़ी हो जाती है और ज़हर खानेपर उसको लानत मलामत करती है। नौजवान बच जाता है और ज़हरका असर कुछ देर रहकर दूर हो जाता है। इसके बाद एक उदास और वीरान ज़िन्दगी वह बसर करता है। कहानी यहीं ख़तम हो जाती है।

इस मसनवीको धीरे-धीरे गुनगुनाकर पढ़िये तो इसका नम्र, संगीत-पूर्ण-प्रवाह शैलीकी स्वाभाविकता, बयानकी सादगी, बोल-चालकी चाशनी और साँचेमें ढले हुए मिसरे एक तेज़ और नर्म नश्तरकी तरह दिलमें उतरते चले जायेंगे। इस मसनवीमें खड़ी बोलीका जादू बोल रहा है, इतनी नर्म झंकार स्वरों और व्यंजनोंके टकरावसे पैदा होती है, डबडबाए हुए और टपकते हुए आँसुओंकी ऐसी खनक रह रहकर सुनाई देती है,

एक दु:खान्त नाटकका वातावरण इस सफलतासे उत्पन्न हो जाता है, ऐसा समा बँध जाता है कि पढ़नेवालेको रोमांच हो आता है।

प्रिया-मिलनकी आख़री रातमें लड़कीकी वसीयत या अन्तिम सन्देश इस मसनवीके सबसे मशहूर हिस्से हैं। यह दृश्य प्रेम-काव्यके इतिहासमें अद्वितीय है। फिर जनाज़ा निकलनेका दृश्य और लड़कीकी बुढ़िया माँका विलाप करुणरसमें इस तरह डूबे हुए हैं कि आँसू रोकना मुशकिल हो जाता है। पूरी मसनवीमें एक शब्द भी अश्लील या शिष्टाचारके प्रतिकूल या एक ऐसा मिसरा भी जो किसीको खटके, नहीं आने पाया है। मसनवीकी भाषा और शैली गुलाब और केवड़ेमें बसाई हुई है। इस मसनवीमें वह नश्तरियत है कि इसे पढ़ते हुए बहुत जल्द रोंगटे खड़े होने लगते हैं और दो-तीन बार पढ़ चुकनेके बाद इस मसनवीका हमारी चेतनापर इतना गहरा और स्थायी असर पड़ जाता है कि जब-जब इस मसनवीकी याद आती है हम आँसुओंमें नहा उठते हैं। पढ़ चुकनेके बाद इस मसनवीकी कल्पना मात्र ही से रोमांच हो आता है चाहे इस मसनवीको पढ़े हुए कितने ही बरस बीत चुके हों।

ज़ह्रे-इश्क़

हम्द[1]

लिख क़लम पहले हम्दे-रब्बे-वदूद[2]
कि हर एक जा पै है वही मौजूद
ज़ाते-माबूद जावेदानी[3] है
बाक़ी जो कुछ कि है वो फ़ानी[4] है
हमसर उसका नहीं नदीम[5] नहीं
सब हैं हादिस[6] कोई क़दीम[7] नहीं

नात[8]

मद्ह[9] अहमद ज़बाँ पै क्योंकर आये
बह्र कूज़ामें[10] किस तरहसे समाये
ज़ाते-अहमदको कोई क्या जाने
या अली जाने या ख़ुदा जाने

मनक़बत[11]

मद्हे अहमदमें खोलिये जो दहन[12]
इससे आगे नहीं है जाय सुख़न[13]

[1]ईश्वरकी स्तुति [2]ईश्वरका एक नाम [3]ईश्वर अमर है [4]नश्वर [5]मित्र [6]नया [7]पुराना [8]मुहम्मद साहबकी प्रशंसा [9]प्रशंसा, मुहम्मद साहबका अहमद भी नाम था [10]बह्र=समुद्र कूज़ा=मिट्टीका बधना [11]मुहम्मद साहबकी तारीफ़ [12]मुँह [13]कहनेकी जगह

कौन अहमदका मर्तबा[१] समझा
कोई बन्दा कोई ख़ुदा समझा

बयाने-इश्क़

है बना जबसे गुलशने-ईजाद[२]
हुई हर शै[३] हर एकको इमदाद
रंग-ओ-ख़ूबी अता[४] किया गुलको
नाला ओ-दर्द[५] बख़्शा बुलबुलको
माहको[६] नूर लुत्फ़[७] हालेको
चश्म[८] नरगिसको दाग़ लालेको
रास्ती[९] की अता सनोबरको
पेच संबुलको[१०] आब गौहरको[११]
सख़्ती सारी बुतोंके[१२] दिलमें दी
उल्फ़त[१३] इंसांके आब-ओ-गिलमें[१४] दी
इश्क़से कौन है बशर[१५] ख़ाली
कर दिये जिसने घरके घर ख़ाली
पड़ते हैं इसमें जानके लाले
डालता है जिगरमें ये छाले
जो कि वाक़िफ़ थे सब क़रीनोंसे[१६]
ख़ाक छनवाई उन हसीनोंसे
इससे उम्मीद रखना है बेजा
भाई मजनूंसे क्या सलूक किया

[१]स्थान, पद [२]संसार [३]वस्तु [४]प्रदान [५]रुदन और पीड़ा [६]चाँद [७]सौंदर्य [८]आँख [९]सीधापन [१०]एक फूलकी लता [११]मोती [१२]मूर्तियों [१३]प्रेम [१४]आब=पानी गिल=मिट्टी [१५]मनुष्य [१६]तौर तरीक़ों

मुँहसे करने न दी फ़ुग़ाँ[१] इसने
मारे चुन-चुनके नौजवाँ इसने
इससे जिसने ज़रा तपाक[२] किया
सबसे पहले उसे हलाक किया
आतिशे-हिज्रसे[३] जलाता है
आग पानीमें ये लगाता है
मार डाला तमाशबीनोंको
ज़हर खिलवा दिया हसीनोंको
बसमें डाले न किब्रिया[४] इसके
रहम दिलमें नहीं ज़रा उसके

आग़ाज़े-दास्तान[५]

एक क़िस्सा अजीब लिखता हूँ
दास्ताने-ग़रीब लिखता हूँ
ताज़ा इस तरहकी हिकायत[६] है
सुननेवालोंको जिससे हैरत है
जिस मुहल्लेमें था हमारा घर
वाँ पै रहता था एक सौदागर
मर्द अशराफ़[७] साहबे-दौलत[८]
ताजिरोंमें कमाल जी इज़्ज़त[९]
ग़म न तथा कुछ फ़राग़बालीसे[१०]
था बहुत ख़ान्दाने-आलीसे[११]

[१]फ़रियाद रुदन [२]हिला-मिला [३]वियोगकी आग [४]ईश्वर [५]कहानीका प्रारंभ [६]कहानी [७]शरीफ़ सज्जन पुरुष [८]धनपति [९]आदरणीय [१०]सम्पन्नता [११]उच्च कुल

एक दुख़्तर[1] थी उनकी माहजबीं[2]
शादी उसकी नहीं हुई थी कहीं
सानी रखती न थी वो सूरतमें
ग़ैरते-हूर[3] थी हक़ीक़तमें[4]
सब्ज़ नख़्ले-गुले-जवानी[5] था
हुस्ने-यूसुफ़[6] फ़क़त कहानी था
इस सिन-ओ-सालपर कमाल-ख़लीक़[7]
चाल ढाल इन्तहाकी नस्तालीक़[8]
चश्मे-बद दूर वो हसीं आँखें
रश्के-चश्मे-ग़ज़ाले चीं[9] आँखें
था जो मां बापको नज़रका डर
आँख भर कर न देखते थे उधर
थी ज़मानेमें बेअदील-ओ-नज़ीर[10]
ख़ुशगुलू,[11] ख़ुशजमाल,[12] ख़ुशतक़रीर[13]
था न उस शह्रमें जवाब उसका
हुस्न लाखोंमें इन्तख़ाब[14] उसका
शेरगोईसे[15] ज़ौक़[16] रहता था
लिखने-पढ़नेसे शौक़ रहता था
था ये उस गुलका जामा ज़ेब[17] बदन
सादी पोशाकमें थे सौ जोबन

[1]बेटी [2]चाँदसे माथेवाली सुन्दरी [3]जिसे देख हूर (अप्सरा) भी लजाये [4]वास्तव [5]यौवन पुष्पका पौधा [6]युसुफ़ (एक अद्वितीय सुन्दर पैग़म्बर)का सौंदर्य [7]शिष्ट [8]सभ्य सुसंस्कृत [9]चीनके हिरनको भी जिनसे ईर्ष्या हो [10]अद्वितीय [11],[12],[13] अच्छे गले अच्छी शक्ल और अच्छी बोलचाल-वाली [14]चुना हुआ [15]कविता करने [16]रुचि [17]जिसपर प्रत्येक पोशाक खिले

८

नूर आँखोंका दिलका चैन थी वो
राहते-जाने-वालदैन[१] थी वो
एक दिन चर्ख़पर जो अब्र[२] आया
कुछ अँधेरासा हर तरफ़ छाया
खुल गया जब बरसके वो बादल
क़ौस[३] तब आसमान पै आई निकल
दिल मेरा बैठे-बैठे घबराया
सैर करनेको बामपर[४] आया
ख़फ़क़ाँ[५] दिलका जो बहलने लगा
इस तरफ़ उस तरफ़ टहलने लगा
देखा एक सिम्त जो उठाके नज़र
सामने थी वो दुख़्ते-सौदागर[६]
साथ हमजोलियाँ भी थीं दो चार
देखती थीं वो आसमाँकी बहार
बामसे कुछ उतरती जाती थीं
चुहलें आपसमें करती जाती थीं
रह गई जब अकेली वो गुलरू[७]
निगराँ सैरकी[८] हुई हर सू[९]
हुई मेरी जो उसकी चार निगाह
मुँहसे बेसाख़्ता निकल गई आह
हाल दिलका कहा नहीं जाता
ख़ूब सँभला नहीं ग़श आ जाता

[१]माता-पिताके जीका चैन [२]बादल [३]इन्द्रधनुष [४]कोठे [५]घबराहट परेशानी [६]सौदागरकी पुत्री [७]सुन्दरी फूलसे चेहरेवाली [८]सैरका निरीक्षण करनेवाली [९]हर तरफ़

न हुआ गो कलाम फ़ीमाबैन[१]
रूह क़ालिबमें[२] हो गई बेचैन
तीरे उल्फ़त[३] जो था लगा कारी[४]
अश्क[५] बेसाख़्ता हुए जारी
सामने वो खड़ी थी माहे-मुनीर[६]
चुप खड़ा था मैं सूरते-तस्वीर
ताबे-नज़्ज़ारा[७] इतनी ला न सका
कि इशारेसे भी बुला न सका
देखता उसको बार-बार था मैं
महवे-हुस्ने-जमाले-यार था मैं
गो मैं रोके हुए हज़ार रहा
दिल पै लेकिन न अख़्तियार रहा
इसी सूरतसे हो गई जब शाम
लाई पास उसके एक कनीज़[८] पयाम
बैठी नाहक़ भी हौलें खाती हैं
अम्माँ जान आपको बुलाती हैं
गेसू[९] रुख़पर हवासे हिलते हैं
चलिये अब दोनों वक़्त मिलते हैं
सुनके लौंडीके मुँहसे ये पैग़ाम
गई कोठेके नीचे वो गुलफ़ाम[१०]
इसका जलवा न जब नज़र आया
मैं भी रोता हुआ उतर आया

[१]परस्पर बातचीत [२]काया [३]प्रेम बाण [४]गहरा [५]आँसू
[६]चमकता चाँद [७]देखनेकी ताब [८]लौंडी [९]केश [१०]सुन्दरी

ग़मसे फिर सहकी मर मरके
शब[1] वो काटी ख़ुदा ख़ुदा करके
पड़ गया दिलमें ग़मसे एक नासूर
यही उस दिनसे पड़ गया दस्तूर
दिनमें सौ बार बामपर जाना
देखना, भालना, चले आना
जब न देखा वहाँ पै वो गुलरू
फ़र्ते-ग़मसे[2] निकल पड़े आँसू
लाख चाहा न हो सका दिल सख़्त
पए-तस्कीं[3] हुई ये आमद-ओ-रफ़्त
गुज़रे कुछ दिन जो रंजके मारे
ज़र्द रुख़सार[4] हो गये सारे
हो गई फिर तो ऐसी हालत ज़ार[5]
जैसे बरसोंका हो कोई बीमार
दिलको थी ग़मसे ख़ुद फ़रामोशी[6]
लग गई लब पै मुह्रे-ख़ामोशी
न रहा दिलको ज़ब्तका यारा
सर जहाँ चाहा धड़से दे मारा
रंज लाखों तरहसे सहते थे
लब थे ख़ामोश अश्क बहते थे
हिज्रसे[7] ग़ैर हो गई हालत
ग़मसे बिल्कुल बदल गई सूरत

[1]रात [2]दुखके आवेग [3]तसकीनके लिये [4]पीले गाल [5]बुरी हालत [6]आत्मविस्मृति [7]विरह

हुआ हैरान अपना बेगाना
जिसने देखा मुझे न पहचाना
देखे माँ बापने जो ये अन्दाज़
रूह क़ालिबसे कर गई परवाज़[1]
पूछा मुझसे ये क्या है हाल तेरा
किस तरफ़ है बँधा ख़याल तेरा
सच बता दे कि ध्यान किसका है
दिलमें ग़म मेरी जान किसका है
रंज किस शोला-रू[2] का खाते हो
शमअकी तरह पिघले जाते हो
ज़र्द चेहरा है अरग़वाँकी[3] तरह
टुकड़े पोशाक है कताँकी[4] तरह
कौनसे माहरू पै मरते हो
सच कहो किसको प्यार करते हो ?
ये कहो महजबीं मिला है कौन ?
तुमको ऐसा हसीं मिला है कौन ?
खाते हो, पीते हो न सोते हो
रोज़ उठ-उठके शबको रोते हो
नहीं मालूम कौन है वो छिनाल
कर दिया मेरे लालका ये हाल

[1]उड़ना, प्राणपखेरू शरीरके पिंजड़ेसे उड़ गये [2]शोलेकी तरह लाल चेहरा, दूसरोंको जलानेवाला सुन्दर मुखड़ा, [3]एक लाल फूल [4]एक बहुत महीन कपड़ा जिसके बारेमें मशहूर है कि चाँदनीमें टुकड़े-टुकड़े हो जाता है

मेरे बच्चेकी जो कुढ़ाये जान
सात बार उसको मैं करूँ क़ुर्बान[१]
अल्लहआमींसे[२] हम तो यूँ पालें
आप आफ़तमें जान यूँ डालें
दिनको दिन समझी मैं न रातको रात
तल्ख़की[३] तेरे पीछे यूँ औक़ात[४]
पाला किस-किस तरह तुम्हें जानी
कौन मन्नत[५] थी जो नहीं मानी
रोशनी मस्जिदोंमें करती थी
जाके दरगाह चौकी भरती थी
अब जो नामे-ख़ुदा[६] जवान हुए
ऐसे मुख़्तार[७] मेरी जान हुए
हाँ मियाँ सच है ये ख़ुदाकी शान
तुम करो जानबूझकर हलकान[८]
हम तो यूँ फूँक फूँक रक्खें क़दम
आप देते फिरें हर एक पै दम
हम यहाँ रंज-ओ-ग़ममें रोते हैं
आप ग़ैरों पै जान खोते हैं
यों मिटाओगे जानकर हमको
थी न इस रोजकी ख़बर हमको
देखती हूँ जो तेरा हाले-ज़बूँ[९]
ख़ुश्क होता है मेरे जिस्मका ख़ूँ

[१]बलिदान [२]दिन रात ईश्वरको मनाकर [३]कटु [४]समय ज़िन्दगी [५]मनौती [६]नामको [७]स्वाधीन [८]परेशान [९]बुरा हाल

यूँ तो बरबाद तू शबाब[1] न कर
मिट्टी माँ बापकी ख़राब न कर
कुछ तो कह हमसे अपने क़ल्बका[2] हाल
किसका भाया है तुझको हुस्न-ओ-जमाल
दिल हुआ तेरा शेफ़्ता[3] किसका
सच बता है फ़रेफ़्ता[4] किसका
कैसा दो दिनमें जी-निढाल हुआ
दाई बन्दीका[5] क्या ये हाल हुआ
आइना तो उठाके देख ज़रा
सुत गया दो ही दिनमें मुँह तेरा
सुध न खानेकी है न पीनेकी
कौनसी फिर उमीद जीनेकी
किसकी उल्फ़तमें है ये हाल किया
कुछ न माँ बापका ख़याल किया
दिल पै गुज़रा है क्या मलाल तो कह
मुँहसे नाशुदनी[6] अपना हाल तो कह
यूँ ही गर हो गया तू सौदाई[7]
दूर पहुँचेगी अपनी रुसवाई[8]
ऐसे दीवानेको भरेगा कौन
शादी और ब्याह फिर करेगा कौन
कर दिया किसने ऐसा आवारा
कि नहीं बनता अब कोई चारा

[1]जवानी [2]दिल [3]आसक्त [4]आशिक़ [5]दाई, बाँदी [6]अभागे [7]पागल [8]बदनामी

आगे तो ये न था तेरा दस्तूर
किससे सीखे हैं इस तरहके उमूर[१]
मेरे तो देखकर गये औसान[२]
लैला मजनूँके तूने काटे कान
बातें ये वालिदैनकी सुनकर
और एक क़ल्बिपर लगा नश्तर
शर्मके मारे मुँहको ढाँप लिया
कुछ न माँ बापको जवाब दिया
गुज़रा याँ तक तो ये हमारा हाल
अब बयान उनका होता है अहवाल
मैं तो खाये हुए था इश्क़का तीर
पर हुई उनके दिल पै भी तासीर
छलके आँखोंसे दोनों पैमाने
दिल लगा, आप ही आप घबराने
आतिशे-इश्क़[३]से उठा जो धुआँ
बातों बातोंमें बढ़ गया ख़फ़क़ाँ[४]
गोश फ़रियादे-क़ल्ब[५] सुनने लगा
ख़ुदबख़ुद हाथ पाँव धुनने लगा
दर्दे ग़म दिलको आ गया जो पसन्द
सोना रातोंको हो गया सौगन्द[६]
मौजे उल्फ़त उसे डुबोने लगी
एक उलझनसी दिलमें होने लगी

---

[१]बातें [२]होश हवास [३]प्रेम-की आग [४]घबराहट [५]कान दिलकी फ़रियाद सुनने लगा [६]क़सम

घटने ताक़त लगी जो रोज़बरोज़
आतिशे-हिज्र[१] हो गई दिलसोज़[२]
दाग़ ज्यूँ ज्यूँ जिगरके जलते थे
अश्के-गर्म आँखसे निकलते थे
गर्म नाले थे लब पै आह थी सर्द
दिलमें होता था मीठा-मीठा दर्द
यूँ तड़पता था उसके सीनेमें दिल
जिस तरह लोटे तायरे-बिस्मिल[३]
हो गई जब कमाल हालते-ज़ार[४]
शबको रहने लगा उसे भी बुख़ार
सच है किस तरह जी उदास न हो
कोई हमज़ाद[५] भी जो पास न हो
न रुका उसके रोकेसे दिले-ज़ार
दिलमें बाक़ी रहा न सब्र-ओ-क़रार[६]
लिखने पढ़नेका था जो उसको ज़ौक़
सोचकर दिलमें लिक्खा एक ख़ते-शौक़[७]
भेजा वो मुझको बेख़तर[८] नामा
डरसे लिक्खा मगर न सरनामा[९]
एक मामाने आके चुपकेसे
ख़त दिया उनका हाथमें मेरे
खोलकर मैंने जो उसे देखा
कुछ अजब दर्दसे ये लिक्खा था

[१]विरहकी आग [२]दिल जलानेवाली [३]घायल पक्षी [४]ख़राब हालत [५]बहुत गहरा मित्र, साथी [६]धैर्य और शान्ति [७]प्रेमपत्र [८]बिना डरे [९]पता

प्रेमिकाका ख़त

हो ये मालूम तुमको बाद सलाम
ग़मे-फ़ुरक़त[१] से दिल है बे आराम
अपने कोठे पै तू नहीं आता
दिल हमारा बहुत है घबराता
शक्ल दिखला दे किब्रियाके लिये
बामपर आ ज़रा ख़ुदाके लिए
इस महब्बत पै हो ख़ुदाकी मार
जिसने यूँ कर दिया मुझे लाचार
सारे उलफ़तने खो दिये औसान
वरना ये लिखती मैं ख़ुदाकी शान
अब कोई इसमें क्या दलील करे
जिसको चाहे ख़ुदा ज़लील करे

प्रेमीका ख़त

पढ़के मैंने लिखा ये उसको जवाब
क्या लिखूँ तुमको अपना हाले ख़राब
बन गई याँ तो जानपर मेरी
ख़ूब ली आपने ख़बर मेरी
हिज्रमें[२] मरके जिन्दगानीकी
अब भी पूछा तो मेह्रबानी की
जबसे देखा है आपका दीदार
दिलसे जाता रहा है सब्र-ओ-क़रार

[१]विरहके दुख [२]वियोग

रोज़ तपसे बुख़ार रहता है
सर पै एक जिन सवार रहता है
तेरे क़दमोंकी हूँ क़सम खाता
होश दो-दो पहर नहीं आता
पूछता है जो कोई आकर हाल
और होता है दिलको मेरे मलाल
कहूँ किस-किससे इस कहानीको
आग लग जाय इस जवानीको
हो गई है कुछ ऐसी ताक़त ताक़[1]
उठ नहीं सकता बारे-रंज-ओ-फ़िराक़[2]
हिलके पानी पिया नहीं जाता
वरना हुक्म आपका बजा लाता
पाता ताक़त जो तालिबे-दीदार[3]
बामपर दिनमें आता सौ-सौ बार
पहुँचा जिस वक़्तसे तेरा मकतूब[4]
ज़िन्दगीका बँधा है कुछ अस्लूब[5]
रंज राहतसे गर बदल जाये
क्या अजब है जो दिल बहल जाये
पेशक़दमी[6] जो तुमने की मेरे साथ
इसमें ज़िल्लतकी[7] कौनसी है बात
नहीं कुछ इसमें आप ही का क़सूर
मेरी उलफ़तका ये असर है हुज़ूर

[1]दुर्लभ [2]वियोगके दुखका भार [3]दर्शनाभिलाषी [4]पत्र
[5]ढंग [6]पहल [7]अपमान

इश्क़का है मेरे असर वल्लाह
वरना तुम लिखतीं ये मआज़अल्लाह[१]
तुम तो वो लोग होते हो जल्लाद
नहीं सुनते कोई करे फ़रियाद
हो बलासे किसीका हाल बुरा
कोई मर जाय तुमको क्या परवा
नहीं मुमकिन तुम्हारा बल जाये
चाहे आशिक़का दम निकल जाये
अब मैं लिखता हूँ आपको ये हज़ूर
वस्लकी[२] फ़िक्र चाहिये है जरूर
तूने ग़फ़लत गर इसमें की ऐ माह
हाल मेरा कमाल होगा, तबाह
ग़ैर है हिज्रसे मेरी हालत
ग़म उठानेकी अब नहीं ताक़त
दिल पै आफ़त अजीब आई है
जान बच जाय तो ख़ुदाई है
जानको किस घड़ी क़रार आया
ग़शने फ़ुरसत जो दी बुख़ार आया
तपिशे-दिलने[३] गर किया हुशियार
वह्म आने लगे हजार हजार
दिलकी वहशतने गर लिया कुछ जोश
वो भी जाते रहे जो आये थे होश

[१]तौबा; शाब्दिक अर्थ है ख़ुदाकी पनाह या ख़ुदा रक्षा करे [२]मिलाप
[३]दिलकी गर्मी

आशना[1] दोस्त आ गये जो कभू
जिसने देखा निकल पड़े आँसू
झूठ समझें इसे हुज़ूर नहीं
जान जाती रहे तो दूर नहीं
मर गये हम तो रंजे-फ़ुरक़तसे
पर ख़बर की न अपनी हालतसे
अब जो भेजी ये आपने तहरीर
है ये लाज़िम कि वो करो तदबीर[2]
सख़्तियाँ हिज्रकी बदल जायें
दिलकी सब हसरतें निकल जायें
देके ख़त मैंने ये कहा उससे
जल्द इसका जवाब ला उससे
पहुँचा जब उन तलक मेरा मकतूब
हँसके बोले कि वाह-वा क्या ख़ूब

प्रेमीके पत्रका जवाब

फिर किया ये जवाबमें तहरीर
कुछ क़ज़ा[3] तो नहीं है दामनगीर[4]
ज़िक्र इन बातोंका यहाँ क्या था
छेड़नेको तेरे ये लिक्खा था
ऐसी बातें थीं कब यहाँ मंज़ूर
था फ़क़त तेरा इम्तहाँ मंज़ूर
ये तो लिक्खे थे सब हँसीके कलाम
वरना इन बातोंसे मुझे क्या काम

[1]परिचित [2]लिक्खा [3]मौत [4]दामनसे लगी है

मुझको ऐसी थी तेरी क्या परवा
बामपर तू बलासे आ कि न आ
बात ये थी कमाल अक़्लसे दूर
झूट लिखनेसे हो गये मअज़ूर[१]
तुझ पै मैं मरती क्या क़यामत[२] थी
क्या मेरे दुश्मनोंकी शामत थी
मेरी जानिबको ये गुमाँ क्या ख़ूब
झूट जमजमसे[३] है बहुत मरग़ूब[४]
ये न समझा कि माजरा क्या है
यूँ भी कोई किसीको लिखता है
काला दाना ज़रा उतरवा[५] लो
राई लोन[६] इस समझमें कर डालो
तुझ पै मरते भी गर मरे बदख़्वाह
यूँ न लिखती कभी मआज़अल्लाह
जान पा-पोशसे[७] निकल जाती
पर तबीयत न यूँ बदल जाती
ऐसी बातोंमें होता है बदनाम
अब न लिखियेगा इस तरहके कलाम
रंज आ जाता है इसी कदसे[८]
न बढ़े आदमी कभी हदसे
क्या समझकर लिखा था ये मज़मून
अच्छी होती नहीं है इतनी दून[९]

[१]असमर्थ [२]क़यामत=प्रलय ऐसी क्या पड़ी थी [३]सदासे हमेशासे [४]पसन्द [५,६]टोनों, टोटकोंकी ओर संकेत है [७]जूती [८]दुश्मनीके व्यवहार [९]शेखी

जीमें ठानी थी क्या बताओ तो
ख़ानगी कस्बी[1] कोई समझे हो
मालज़ादी[2] नहीं यहाँ कोई
जो करे तुमसे गरमियाँ[3] कोई
देख तहरीर फ़ेल लाये आप
ख़ूब जल्दी मज़ेमें आये आप
तालिबे-वस्ल[4] जो हुए हमसे
हैगा सादा मिज़ाज जमजमसे
रही कुछ रोज तो यही तहरीर
फिर मुवाफ़िक़ हुई मेरी तक़दीर
होके उस गुलसे वस्लके इक़रार
उठ गई दरम्यानसे तकरार
जो लिखा था अदा किया उसने
वादा एक दिन वफ़ा[5] किया उसने
रातभर मेरे घरमें रहके गई
सुबहके वक़्त फिर ये कहके गई
बात इस दमकी याद रखियेगा
एक दिन इसका मज़ा भी चखियेगा
बिगड़ेगी जब न कुछ बन आयेगी
आपके पीछे जान जायेगी
प्यार करती जो थी वो ग़ैरते-हूर[6]
रखा मिलनेका उसने ये दस्तूर

[1]वेश्या [2]लौंडी बाँदी [3]लाग-लगाव [4]मिलापके इच्छुक [5]पूरा
[6]अप्सरा जिसे देख शर्मा जाय

पंजशंबाको[१] जाती थी दरगाह
वाँसे आती थी मेरे घरको वो माह
ऐश होने लगे मेरे उनके
ग़ैर जलने लगे ये सुन-सुनके
इत्तफ़ाक़[२] ऐसा एक हुआ नागाह
दो महीने तलक न आई वो माह
क़तअ[३] सब हो गये पयाम-ओ-सलाम[४]
न रही शक्ले-राहत-ओ-आराम
तबअको[५] हो गई परेशानी
अक़्लको थी अजीब हैरानी
दिलको तशवीश[६] थी ये हदसे ज़ियाद
दफ़अतन[७] पड़ गई ये क्या उफ़ताद[८]
थी न मुझसे यहाँ किसीको लाग
किसने इस तरहकी लगाई आग
कुछ तो ऐसा हुआ है अफ़साना
जो यहाँ तक न हो सका आना
नहीं मालूम क्या पड़ी उफ़ताद
जो फ़रामोशकी[९] हमारी याद
कौन ऐसा है जाय घर उसके
किसको भेजूँ मकानपर उसके
क्यों न बेज़ार[१०] हूँ मैं जीनेसे
नहीं देखा है दो महीनेसे

[१]बृहस्पतिके दिन [२]संयोग [३]कट गये, बन्द हो गये [४]सन्देश [५]तबियत चित्त [६]चिन्ता [७]एकाएक [८]आफ़त, मुसीबत [९]भुला दी [१०]विरक्त

जान आँखोंमें खिचके आई है
अब नहीं ताक़ते-जुदाई है
कर लिया हो सका जहाँ तक जब्र
अब कहो दिल करे कहाँ तक सब्र
दो महीने न देखे जब गुलको
चैन किस तरह आये बुलबुलको
रात किस तरहपर गुज़ारी जाय
किस तरह दिलकी बेक़रारी जाय
तबअ किस तरहपर बहल जाय
जिस्मसे रूह जब निकल जाय

लड़कीके माँ बापसे एक औरतका चुग़ली खाना

ए हज़ूर सच मैं अर्ज़ करती हूँ
और क़दमों पै सरको धरती हूँ
आपकी दुख़्त नाज़नीं शहे-हुस्न[1]
यानी वो क़ुर्र महजबीं[2] शहे-हुस्न
एक जा छिपके जाया करती है
और एक अजनबी पै मरती है
मैंने आँखोंसे जाते देखा है
क्या कहूँ जो उसे परेखा[3] है
बात अब तक तो बस ये है महदूद[4]
मेरे कहनेका है यही मक़सूद[5]
मुफ़्त कुनबामें[6] एक हँसाई है
आप लोगोंकी नककटाई है

[1]हुस्नकी रानी [2]चाँदका टुकड़ा [3]क्या बताऊँ कि उसके आने जानेको परखने पर क्या मालूम हुआ [4]सीमित [5]तात्पर्य [6]कुटुम्ब

पहुँचवा दो उसे बनारस बस
बाद दो साल लाना फिर वापिस
है चचाजाद[1] इसका खुशखुर्रम
वहीं रहवेगी उसके घर पैहम[2]

दो महीने बाद प्रेमिकाका फिर आना

आई नौचन्दी इतनेमें नागाह
इस बहानेसे आई वो दरगाह
बस कि मरती थी नाम पै मेरे
छुपके आई वहाँसे घर मेरे
थी जो फ़ुरसत न अश्कबारीसे
उतरी रोती हुई सवारीसे
फिर लिपटकर मेरे गले एक बार
हाल करने लगी वो यूँ इज़हार[3]
अक़रबा[4] मेरे हो गये आगाह
तुमसे मिलनेकी अब नहीं कोई राह
मश्विरे हो रहे हैं आपस में
भेजते हैं मुझे बनारस में
वो छुटे हमसे जिसको प्यार करें
जब्र क्योंकर ये अख़्तियार करें
गो ठिकाने नहीं हैं होश-ओ-हवास
पर यह कहनेको आई हूँ तेरे पास

---

[1]चचेरा [2]बराबर [3]ज़ाहिर [4]सम्बधी

जाय इबरत सरायफ़ानी[1] है
मूरिदे-मर्गे-नौजवानी[2] है

मिलकर विदा होनेका पहला मौक़ा

ऊँचे-ऊँचे मकान थे जिनके
आज वो तंग गोरमें[3] हैं पड़े
कल जहाँपर शगूफ़ा-ओ-गुल थे
आज देखा तो ख़ार[4] बिलकुल थे
जिस चमनमें था बुलबुलोंका हुजूम[5]
आज उस जा है आशियानए-बूम[6]
बात कलकी है नौजवान थे जो
साहबे-नौबत-ओ-निशान[7] थे जो
आज ख़ुद हैं न हैं मकाँ बाक़ी
नामको भी नहीं निशाँ बाक़ी
ग़ैरते-हूर[8] महजबीं न रहे
है मकाँ गर तो वो मकीं[9] न रहे
जो कि थे बादशाहे-हफ़्त-अक़लीम[10]
हुए जा-जाके ज़ेरे-ख़ाक मुक़ीम[11]
कोई लेता भी अब नहीं है नाम
कौनसी गोरमें गया बहराम[12]

[1]जायइबरत=ऐसी जगह हर चीज़से शिक्षा ली जा सके, सराय फ़ानी=वह सराय जो एक दिन ख़तम हो जायगी, दुनिया [2]जवानीमें मारनेवाली [3]संकीर्ण क़ब्र [4]काँटे [5]भीड़ [6]उल्लूका घोंसला [7]बड़ी प्रतिष्ठावाले जिनके झंडे थे [8]अप्सराओंको शर्मानेवाली सुन्दरियाँ [9]एकसे बढ़कर एक [9]निवासी [10]सात देशोंके बादशाह [11]मिट्टीके नीचे रहने लगे [12]ईरानका प्रसिद्ध सम्राट

अब न रुस्तम न साम[१] बाक़ी है
एक फ़क़त नाम-नाम बाक़ी है
कल जो रखते थे अपने फ़र्क़ पै[२] ताज
आज हैं फ़ातहाको[३] वो मुहताज
थे जो ख़ुद इस जहानमें मशहूर
ख़ाकमें मिल गया सब उनका ग़रूर
इत्र मट्टीका जो न मलते थे
न कभी धूपमें निकलते थे
गर्दिशे-चर्ख़से हलाक[४] हुए
इस्तख़्वाँ[५] तक भी उनके ख़ाक हुए
थे जो मशहूर क़ैसर-ओ-फ़ग़फ़ूर[६]
बाक़ी उनका नहीं निशाने-क़बूर[७]
ताजमें जिनके टकते थे गौहर
ठोकरें खाते हैं वो कासए-सर[८]
रश्के-यूसुफ़[९] जो थे जहाँमें हसीन
खा गये उनको आसमान-ओ-ज़मीन
हर घड़ी मुन्क़लिब[१०] ज़माना है
यही दुनियाका कारख़ाना है
है न शीरीं[११] न कोह कन[१२] का पता
न किसी जा है नल-दमनका पता[१३]

[१]ईरानके मशहूर पहलवान रुस्तम और साम [२]सिर [३]किसीकी आत्माकी शान्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थनाको फ़ातेहा कहते हैं [४]मर गये [५]हड्डीका ढाँचा [६]जर्मनी और चीनके सम्राटोंकी उपाधि [७]क़ब्रोंके निशान [८]खोपड़ी [९]जिसे देख अद्वितीय सुन्दर पैग़म्बर यूसुफ़को भी ईर्ष्या हो [१०]परिवर्तित [११]ईरानकी मलका, फ़रहादकी प्रेमिका [१२]पहाड़ काटनेवाला प्रेमी फ़रहाद [१३]नलदमयन्ती

बूये-उलफ़त[1] तमाम फैली है
बाक़ी अब क़ैस[2] है न लैली[3] है
सुब्हको तायराने-ख़ुश अलहान[4]
पढ़ते हैं "कुल्लमिन अलेहाफ़ान"[5]
मौतको किससे रस्तगारी[6] है
आज वो कल हमारी बारी है
ज़िन्दगी बेसबात[7] है इसमें
मौत ऐने-हयात[8] है इसमें
हम भी गर जान दे दें खाकर सम[9]
तुम न रोना हमारे सरकी क़सम
दिलको हमजोलियोंमें बहलाना
या मेरी क़ब्रपर चले आना
जाके रहना न इस मकानसे दूर
हम जो मर जायँ तेरी जानसे दूर
रूह भटकेगी गर न पायेगी
ढूँढ़ने किस तरफ़को जायेगी
रोके रहना बहुत तबीयतको
याद रखना मेरी वसीयतको
जब्त[10] करना अगर मलाल रहे
मेरी रुसवाईका[11] ख़याल रहे
मेरे मरनेकी जब ख़बर पाना
यूँ न दौड़े हुए चले आना

[1]प्रेम-सुगंधि [2]मजनूँ [3]लैला [4]मधुर बोलियाँ बोलनेवाले पक्षी [5]समस्त सृष्टि नश्वर है [6]छुटकारा [7]नश्वर [8]वास्तविक जीवन [9]विष [10]धैर्य [11]बदनामी

जमा हो लें सब अक़रबा[1] जिस दम
रखना उस वक़्त तुम वहाँ पै क़दम
कहे देती हूँ जी न खोना तुम
साथ ताबूतके[2] न रोना तुम
हो गये तुम अगर्चे सौदाई[3]
दूर पहुँचेगी मेरी रुसवाई
लाख तुम कुछ कहो न मानेंगे
लोग आशिक़ हमारा जानेंगे
तानाज़न[4] होंगे सब ग़रीब अमीर
क़ब्रपर बैठना न होके फ़क़ीर
सामना हो हज़ार आफ़तका
पास रखना हमारी इज़्ज़तका
जब जनाज़ा मेरा अज़ीज़ उठाएँ
आप बैठे वहाँ न अश्क बहाएँ
मेरी मिन्नतका ध्यान रखियेगा
बन्द अपनी ज़बान रखियेगा
तज़किरा कुछ न कीजिएगा मेरा
नाम मुँहसे न लीजिएगा मेरा
अश्क आँखोंसे मत बहाइयेगा
साथ ग़ैरोंकी तरह जाइयेगा
आप काँधा न दीजियेगा मुझे
सबमें रुस्वा न कीजियेगा मुझे
रंग रुख़का बदल न जाय कहीं
मुँहसे नाला निकल न जाय कहीं

[1]सम्बन्धी [2]जनाज़े [3]पागल [4]व्यंग करेंगे

साथ चलना न सरके बाल खुले
ता[1] किसी शख़्सपर न हाल खुले
होते आफ़तके हैं ये परकाले
ताड़ जाते हैं ताड़नेवाले
हो बयाँ गर किसी जगह मेरा हाल
तुम न करना कुछ इस तरहका ख़याल
ज़िक्र सुनकर मेरा न रो देना
मेरी इज़्ज़त न यों डुबो देना
रंजे-फ़ुरक़त[2] मेरा उठा लेना
जी किसी और जा लगा लेना
होगा कुछ मेरी यादसे न हसूल[3]
दिलको कर लेना औरसे मशग़ूल[4]
रंज करना न मेरा मैं क़ुर्बान
सुन लो गर अपनी जान है तो जहान
दे न उसको ख़ुदा कभी कोई दर्द
होता नाज़ुक कमाल है दिले-मर्द[5]
दिलमें कुढ़ना न मुझसे छूटके तू
जान देना न घूँट घूँटके तू
आके रो लेना मेरी क़ब्रके पास
ता निकल जाय तेरे दिलकी भड़ास
आँसू चुपकेसे दो बहा लेना
क़ब्र मेरी गले लगा लेना

---

[1]ताकि [2]वियोगका दुख [3]प्राप्त, हासिल [4]लगा लेना
[5]पुरुषका दिल

अगर आ जाय कुछ तबीयतपर
पढ़ना क़ुरआन मेरी तुरबतपर[१]
ग़ुंचये-दिल मेरा खिला देना
फूल तुर्बतपै दो चढ़ा देना
रोके करना न अपना हाल-ज़बूँ
यूँ न हो जाय दुश्मनोंको जुनूँ
देखिये किस तरह पड़ेगी कल
सख़्त होती है मंज़िले-अव्वल
मेरे मर्क़द[२] पै रोज़ आना तुम
फ़ातहासे न हाथ उठाना तुम
है ये हासिल सब इतनी बातोंसे
मिट्टी देना तुम अपने हाथोंसे
उम्र भर कौन किसको रोता है
कौन साहब किसीका होता है
कभी आ जाय गर हमारा ध्यान
जानना हम पै हो गई क़ुर्बान
दिल पै कुछ आने दीजियो न मलाल
ख़्वाब देखा था कीजियो ये ख़याल
रंज-ओ-राहत जहाँमें बाहम[३] है
कभी शादी है और कभी ग़म है
है किसी जा पै जश्न शाम-ओ-पगाह[४]
है किसी जा सदाये-नाला-ओ-आह[५]
मर्गका किसको इन्तज़ार नहीं
ज़िन्दगीका कुछ एतबार नहीं

---

[१]क़ब्र [२]क़ब्र [३]परस्पर [४]साँझ सबेरे [५]रुदन और आह

फिर मुलाक़ात देखें हो कि न हो
आज दिल खोलकर गले मिल लो
हमको ख़ूब आज देखभाल लो तुम
दिलकी सब हसरतें निकाल लो तुम
आओ अच्छी तरहसे कर लो प्यार
कि निकल जाय कुछ तो दिलका बुख़ार
दिलमें बाक़ी रहें न कुछ अरमान
ख़ूब मिल लो गलेसे मैं क़ुर्बान
हश्र[1] तक फिर ये होगी बात कहाँ
हम कहाँ, तुम कहाँ, ये रात कहाँ
कह लो सुन लो जो कुछ कि जीमें आय
फिर ख़ुदा जाने क्या नसीब दिखाय
दिलको अपने करो मलूल नहीं
रोने-धोनेसे कुछ हसूल नहीं

मिलकर बिदा होनेका दूसरा मौक़ा

हमको है हैं करे जो अश्क बहाये
हमको गाड़े जो अपने दिलको गड़ाये
उम्र तुमको तो है अभी खेना
दिन बहुतसे पड़े हैं रो लेना
बाहें दोनों गलेमें डाल लो आज
जो जो अरमान हों निकाल लो आज
फिर ख़ुदा जाने क्या मशीयत[2] है
इतनी सोहबत बहुत ग़नीमत है

[1]क़यामत [2]ईश्वरकी इच्छा

किसको कल बैठकर करोगे प्यार
किसकी लोगे बलाएँ तुम हर बार
कल गलेसे किसे लगाओगे
यूँ किसे गोदमें बिठाओगे
हाल किसका सुनायेगी आकर
किसकी मामाँ बुलायेगी आकर
हम तो उठते हैं इस मकानसे कल
अब तो जाते हैं इस जहानसे कल
याद इतनी तुम्हें दिलाते जायँ
पान कलके लिये लगाते जायँ
हो चुका आज जो कि था होना
कल बसायेंगे क़ब्रका कोना
ख़ाकमें मिलती है ये सूरते-ऐश
फिर कहाँ हम कहाँ ये सोहबते-ऐश[1]
देख लो आज हमको जी भरके
कोई आता नहीं है फिर मरके
ख़त्म होती है ज़िन्दगानी आज
ख़ाकमें मिलती है जवानी आज
चुप रहो क्यों अबस भी रोते हो
मुफ़्त काहेको जान खोते हो
समझो इसको शबे-बरातकी[2] रात
हम हैं मेहमाँ तुम्हारे रातकी रात

---

[1]आमोद प्रमोदकी सभा या गोष्ठी [2]वह रात जिसमें रात भर जागकर ईश्वरको याद किया जाता है आतिशबाज़ी छुड़ाई जाती है

चैन दिलको न आयेगा तुझ बिन
अबके बिछुड़े मिलेंगे हश्रके दिन
अब तुम इतनी दुआ करो मेरी जान
कलकी मुश्किल ख़ुदा करे आसान
फल उठाया न ज़िन्दगानीका
न मिला कुछ मज़ा जवानीका
दिलमें लेकर तुम्हारी याद चले
बाग़े-आलमसे नामुराद चले
कहती है बार-बार हिम्मते-इश्क़
है यही मक़्तज़ाये ग़ैरते-इश्क़[1]
चारपाई पै कौन पड़के मरे
कौन यूँ एड़ियाँ रगड़के मरे
इश्क़का नाम क्यों डुबो जायें
आज ही जान क्यों न खो जायें
जब तलक चर्ख़े-बेमदार[2] रहे
ये फ़साना भी यादगार रहे
बोली घबराके फिर ठहर मेरी जान
फिर गलेसे हमें लगा लो जान
हसरते-दिल निगोड़ी बाक़ी है
और यहाँ रात थोड़ी बाक़ी है
गोदमें अपनी फिर बिठा लो जान
फिर गलेसे हमें लगा लो जान
डाल दो फिर गलेमें हाथोंको
फिर गिलोरी चबाके मुँहमें दो

[1]प्रेमकी लाज रखनेका तक़ाज़ा, माँग [2]जो कभी नाश न होगा

फिर कहाँ हम कहाँ ये सोहबते-यार
करलो फिर हमको भींच-भींचके प्यार
फिर मेरे रख दो सर पै सर अपना
गाल फिर रख दो गालपर अपना
फिर इसी तरह मुँहको मुँहसे मलो
फिर वही बातें प्यारकी कर लो
लह्र फिर चढ़ रही है कालोंकी[१]
बू सुँघा दो तुम अपने बालोंकी
फिर हम उठने लगें बिठा लो तुम
फिर बिगड़ जायँ हम मना लो तुम
फिर लबोंको चबाके बात करो
फिर ज़रा मुस्कराके बात करो
फिर बलाएँ तुम्हारी यार लें हम
आओ फिर सरसे सर उतार लें हम
रो न इस तरहसे तू ज़ार न ज़ार
दुश्मनोंको कहीं चढ़े न बुख़ार
आप अच्छे भले बिछुड़ जायें
और लेनेके देने पड़ जायें
काट ले कोई धड़से सर मेरा
बाल बीका न हो मगर तेरा
मैं दिल-ओ-जाँसे हूँ फ़िदा तेरी
लेके मर जाऊँ मैं बला तेरी
अब तू क्यों ठंडी साँसें भरता है
क्यों मेरे दिलके टुकड़े करता है

[१]काले नागके काटनेकी लहर

मैं अभी तो नहीं गई हूँ मर
क्यों सुजाये है आँखें रो रोकर
इस क़दर हो रहा है क्यों ग़मगीं
क्यों मिटाता है अपनी जाने-हज़ीं[1]
कर न रो-रोके अपना हाल-ज़बूँ
अरे ज़ालिम अभी तो जीती हूँ
अश्क बहते हैं नागवार तेरे
तू न रो हो गई निसार[2] तेरे
ऐसे क़िस्से हज़ार होते हैं
यूँ कहीं मर्दुए भी रोते हैं
यूँ तो आँसू न तू बहा अपने
दिलको मज़बूत रख ज़रा अपने
रंजसे मेरे कुछ उदास न हो
यूँ तू लिल्लाह बदहवास न हो
तुम तो इतनेमें हो गये रंजूर[3]
थक गये और अभी है मंज़िल दूर
इसी ग़मने तो मुझको मारा है
सदमा तेरा नहीं गवारा है
अपने मरनेका कुछ नहीं है अलम
दिलमें मेरे फ़क़त है इसका ग़म
जान हमने तो इस तरह खोई
कौन तेरी करेगा दिलजोई[4]
आके समझायेगा बुझायेगा कौन
इस तरहसे गले लगायेगा कौन

[1]दुखी आत्मा [2]निछावर [3]दुखी [4]सहानुभूतिपूर्ण बात-चीत

कौन रोकेगा इस तबीअतको
किससे कह जाऊँ इस वसीयतको
गो कि बेजा तेरा हरास[१] नहीं
कोई दिलसोज़[२] भी तो पास नहीं
मैं कहाँ हूँ जो साथ दूँ तेरा
हाथमें किसके हाथ दूँ तेरा
यूँ तसल्ली तेरी करेगा कौन
मेरी सूरत भला मरेगा कौन
कौन यूँ ख़ुश करेगा दिल तेरा
दिल है इस ग़मसे मुज़्महिल[३] तेरा
जी लगेगा न साथमें उसका
दिल लिये रहता हाथमें उसका
पर मैं अब इसको क्या करूँ कमबख़्त
आसमाँ दूर है ज़मीन है सख़्त
गो कि उक़्बामें[४] रूसियाह चली
मगर अपनीसी मैं निबाह चली
जीको तुमपर फ़िदा किया मैंने
हक़ वफ़ाका अदा किया मैंने
बोली फिर ज़ानुओं[५] पै मारके हाथ
नहीं मालूम अब है कितनी रात
ज्यूँ ज्यूँ घड़ियाल वाँ बजाता था
जी मेरा सनसनाया जाता था
यूँ तो कोई न दर्द-ओ-ग़ममें कुढ़े
फूले जाते हैं हाथ-पाँव मेरे

[१]भय [२]साथी, दिली दोस्त [३]उदास [४]परलोक [५]जाँघों

कुछ अजब हो रहा है जानका तौर[1]
कहती हूँ कुछ निकलता है कुछ और
आँसू आँखोंमें भर-भर आते हैं
दस्त-ओ-पा[2] सारे थरथराते हैं
दिलको समझाती हूँ मैं बहुतेरा
पर सँभलता नहीं है जी मेरा
गो तू बैठा हुआ है पास मेरे
पर ठिकाने नहीं हवास मेरे
होश आये हुए भी जाते हैं
दिलमें क्या-क्या ख़याल आते हैं
पेश यूँ फ़ुरक़ते-हबीब न हो
किसी दुश्मनको भी नसीब न हो
दूसरा अब ये और मातम है
साँग बाक़ी बहुत हैं शब कम है
ख़ाक तस्कीने-जाने-ज़ार करें
अब वसीयत करें कि प्यार करें

जवाब प्रेमीका

सुनके मैंने दिया जो इसको जवाब
मेरे दिलको बस अब करो न कबाब
तुम तो यूँ अपनी जान दो मेरी जान
मैं वसीयत सुनूँ ख़ुदाकी शान
दिलसे रखना ज़रा ये अपने दूर
कौन कमबख़्त ये करेगा उमूर[3]

[1]ढंग [2]हाथ पैर [3]बातें

मुझको ये दिन तो किब्रिया[१] न करे
तुम मरो मैं जिऊँ ख़ुदा न करे
जान दे दोगी तुम जो खाकर सम
मैं भी मर जाऊँगा ख़ुदाकी क़सम
जो ये देखेगा ख़ूब रोयेगा
आगे पीछे जनाज़ा होयेगा
एक ज़रा मुझसे तो कहो ये हाल
जीमें क्या आपके हुआ ये ख़याल
दिल ही दिलमें अलम उठाती हो
जान देती हो ज़हर खाती हो
पहुँचा माँ-बापसे अगर है अलम[२]
इसका करना न चाहिये तुम्हें ग़म
जो कि होते हैं क़ौमके अशराफ़
यूँ नहीं करते वो क़सूर मुआफ़
कुछ तुम्हींपर नहीं है ये उफ़ताद[३]
सबके माँ-बाप होते हैं जल्लाद
सदमा हर एक पै ये गुज़रता है
ज़हर खा करके कोई मरता है
शिकवा माँ-बापका तो नाहक़ है
उनका औलादपर बड़ा हक़ है
हों जो नाराज़ ये क़यामत है
उनके क़दमोंके नीचे जन्नत है
तुम तो नामे-ख़ुदासे हो दाना
इस पै रुतबा न उनका पहचाना

[१]ईश्वर [२]रंज [३]आफ़त, मुसीबत

क्या भरोसा हयातका[1] उनकी
न बुरा मानो बातका उनकी
होश रहते नहीं हैं इस सिनके
ये तो मेहमान हैं कोई दिनके
इतनी-सी बातका ग़ुबार है क्या
उनके कहनेका एतबार है क्या
ग़ौरसे कीजिये जो दिलमें ख़याल
उनका ग़ुस्सा नहीं है जाय-मलाल[2]

जवाब प्रेमिकाकी तरफ़से

सुनके उसने दिया ये मुझको जवाब
'हमने देखो नहीं है चश्मे-अताब[3]
बे हया ऐसी ज़िन्दगीको सलाम
मुँह पै आये न थे कभी ये कलाम
ताने सुनती हूँ दो महीनेसे
मौत बेहतर है ऐसे जीनेसे
ख़ूने-दिल कब तलक पिये कोई
बेहया बनके क्या जिये कोई
नौज इन्सान बेहमीयत[4] हो
आदमी क्या न जिसको ग़ैरत हो
बात वो किस तरह बशरसे उठे
न सुनी हो कभी जो कानोंसे
वो सुने जिसको इसकी आदत है
इसमें क्या अपनी-अपनी ग़ैरत है

[1]उम्र [2]दुखकी जगह [3]क्रुद्ध दृष्टि [4]बेशर्म, बेहया

पर मेरे जीते जी तू बहरे-ख़ुदा
अपने मरनेका ज़िक्र मुँह पै न ला
कौनसा पड़ गया है रंज-ओ-महन[१]
जान क्यों देंगे आपके दुश्मन
तुमने जी देनेकी जो की तदबीर
हश्रके रोज़ होंगे दामनगीर[२]
तू सलामत जहाँमें रह मेरी जान
निकलें माँ-बापके तेरे अरमान
वास्ते मेरे अपना दिल न कुढ़ा
चाँदसी बहू घरमें ब्याहके ला
है यही लुत्फ़ ज़िन्दगानीका
देख सिन अपनी नौजवानीका
चार दिन हैं ये नाला-ओ-फ़रियाद
उम्र भर कौन किसको करता है याद
लुत्फ़ दुनियाके जब उठाओगे
हमको दो दिनमें भूल जाओगे

विदाईकी मुलाक़ात

था यही ज़िक्र जो बजा घड़ियाल
सुनते ही उसके हो गई बेहाल
हो गया फ़र्ते-ग़मसे[३] चेहरा जर्द
दस्त-ओ-पा थरथराके हो गये सर्द
जर्दी चेहरेपर छा गई उसके
दिलमें दहशत[४] समा गई उसके

[१]रंज ग़म, दुख [२]दामन पकड़ूँगी [३]दुखके आवेगसे [४]भय

दिलमें गुज़रा जो उसके सुब्हका शक
हुई एस्तादा[1] जाके ज़ेरे-फ़लक[2]
ठंडी जिस दम चली नसीमे-सहर[3]
हो गया हाल और भी अबतर
इतनेमें सुब्हकी बजी वर्दी[4]
दूनी चेहरेकी हो गई ज़र्दी
हुए साबित जो सुब्हके आसार
हो गई और उसकी हालत ज़ार
बेद[5] की तरह जिस्म थर्राया
सरसे ले पाँव तक अरक़ आया
बातें करती जो थी सो भूल गई
दम लगा चढ़ने साँस फूल गई
बोली घबराके रहियो इसके गवाह
और कहा ला-एलाह इल्लल लाह[6]
अब फ़क़त ये है ख़ूँ बहा मेरा
बख़्श दीजो कहा सुना मेरा
कहके ये फिर चिमट गई एक बार
और किया ख़ूब भींच भींचके प्यार
सरसे लेकर बलाएँ ता-ब-क़दम[7]
बोली तुमपर निसार होते हैं हम
आग लग जाय वो घड़ी कमबख़्त
बामपर आई थी मैं कौनसे वक़्त

[1]खड़ी [2]आसमानके नीचे [3]प्रभात समीर [4]सुबह चार बजे फ़ौजी सिपाहियोंको जगानेवाला बाजा [5]बेंत [6]कलमा, जिसका अर्थ हैईश्वरके सिवा कोई ईश्वर नहीं [7]सरसे पाँव तक

फिर ये बोली वो पोंछकर आँसू
मेरे सरकी क़सम न कुढ़ियो तू
आज़माती थी तुझको कसती थी
मैं तेरे छेड़नेको हँसती थी
कहके ये बात हो गई वो सवार
याँ बँधा आँसुओंका आँखसे तार
आतिशे-ग़म भड़क गई दूनी
तपिशे-कल्ब[1] ने की अफ़्ज़ूनी[2]
याद आती थी जब वसीयते-यार
दह्ल लाता था दिल हज़ार-हज़ार
थी मुसीबत जो ये बला-अंगेज़[3]
ध्यान आते थे क्या-क्या दहशतख़ेज़[4]
दिलमें कहनेका उसके था जो मलाल
आते थे ज़ेह्नमें अजीब ख़याल
कौन रोकेगा जाके घर बैठे
जो कहा है वही न कर बैठे
हर घड़ी था जो इज़्तराब अफ़्ज़ूँ[5]
चुपका रोता था बैठा मैं महज़ूँ[6]
कि उठा एक सिम्तसे वो ग़ुल
होश जिससे कि उड़ गये बिलकुल
शोला एक आगका भड़कने लगा
मिस्ले-बिस्मिलके[7] दिल फड़कने लगा

[1]दिलकी जलन [2]बढ़ने लगा, अफ़्ज़ूं=बढ़ना [3]बलाओंके साथ मुसीबत, महान विपत्ति [4]डरावने [5]बेचैनीका बना [6]दुखी [7]घायल

यूँ तो गुज़रे थे दो पहर रोते
और हाथोंके उड़ गये तोते
हो गया दिलको इस तरहका हरास
आये सौ-सौ तरहके सौ वसवास[1]
कहा एक दोस्तसे कि तुम जाकर
जल्द इस शोर-ओ-ग़ुलकी लाओ ख़बर
रोते हैं हमसे बदनसीब कोई
मर गया इनका क्या हबीब कोई
यूँ जो अपनी ये जान खोते हैं
कौन हैं किस लिये ये रोते हैं
क्या हुआ इन पै सदमए-जाँकाह[2]
ये जो करते हैं ऐसे नाला-ओ-आह
दौड़े आख़िर उधर मेरे अहबाब
लेकर आये ख़बर वहाँसे शिताब[3]
किया इस तरह आके मुझसे बयान
कि यहाँसे है एक क़रीब मकान
बाग़के पास जो बना है घर
वाँ फ़रोकश[4] है एक सौदागर
यूँ तो एक शोर राह भरमें है
पर ये आफ़त उन्हींके घरमें है
साफ़ खुलता नहीं है ये इसरार[5]
मर गया कोई या कि है बीमार

[1]बुरे बुरे विचार, शंकाएँ [2]जानको घुलानेवाला, बहुत दुखप्रद दुर्घटना [3]जल्दी [4]रहता है [5]रहस्य

पर ये होता है अक़्लसे इद्राक[1]
कि नहीं बेसबब उड़ाते ख़ाक
कुछ न कुछ तो है ऐसी ही रूदाद
कि ये है शोरे-नाला-ओ-फ़रियाद
नहीं बरपा ये बेसबब मातम
है निकलता किसी जवानका दम
हर बशर हो रहा है दीवाना
कोई मरता है साहबे-ख़ाना[2]
नहीं क़ाबूमें है किसीका दिल
पीटते सर हैं साहबाने-महल[3]
नहीं देता सुनाई कुछ बिलकुल
है फ़क़त एक हाय-हायका ग़ुल
थमता एकदम भी वाँ ख़रोश[4] नहीं
किससे पूछें किसीमें होश नहीं
रोते जिस दर्दसे हैं वो इस दम
देखा जाता नहीं ख़ुदाकी क़सम
कह गई थी जो वो कि खाऊँगी ज़हर
मैं ये समझा कि हो गया वही क़हर
गो हयासे न इसका नाम लिया
दोनों हाथोंसे दिलको थाम लिया
दोस्तोंने जो देखी ये सूरत
बोले इस तरह अज़रहे-उल्फ़त[5]

[1]समझमें आता है [2]घरके निवासी [3]महलके निवासी
[4]शोर [5]प्रेमके कारण

हाले-दिल यूँ तुम्हारा ग़ैर जो है
मगर इस वक़्त क्या है, ख़ैर तो है
बेसबब किसलिए हुए हो उदास
उड़ गये क्यों तुम्हारे होश-ओ-हवास
कौनसी आफ़त आ गई इस दम
मुर्दनी सी जो छा गई इसदम
क्या है जो इतने बेक़रार हैं अब
कोई मर जाय इससे क्या मतलब
ऐसी हालत जो पेच-ओ-ताबकी है
तुमको क्या वजह इज़्तराबकी[1] है
शह्रमें रोज़ लोग मरते हैं
ख़फ़क़ाँ[2] इसका कोई करते हैं
फ़िक्र करता है इस तरहकी ज़बूँ[3]
यूँ ही हो जाता है बशर मजनूँ
सुनके माँ-बाप क्या कहेंगे बताओ
होश पकड़ो ज़रा हवासमें आओ
तुमको क्या है जो जान खोते हो
बेसबब आप ही आप रोते हो
हो रहे हो मलूल किस ग़मसे
हाल दिलका तो कुछ कहो हमसे
ताना आमेज़[4] दोस्तोंके बयान
हुए मालूम नश्तरे-रगे-जान[5]

[1]बेचैनी [2]घबराते [3]बुरा हाल [4]तानों भरी, व्यंगपूर्ण [5]मुख्य नाड़ीमें नश्तर (चीरा) लगना

न दिया उनको मारे ग़मके जवाब
ढाँपकर मुँह किया बहानए-ख़्वाब
उठ गये लोग पाससे जिस दम
खोलकर मुँहको चुपके बैठे हम
हाले-दिल सीनेमें हुआ जो तबाह
बैठा कमरेमें आनकर सरे-राह
देखा बरपा है एक हश्रका ग़ुल
भीड़से बन्द राह है बिलकुल
इस तरफ़से जो लोग आते हैं
यही आपसमें कहते जाते हैं

बेटीके ग़ममें माँ बापकी परीशानीका दृश्य

हाल उनका भी जाये-रिक़्क़त[1] है
दाग़ औलादका क़यामत है
नोच डाले हैं सारे सरके बाल
क्या परीशाँ है वालिदैनका हाल
आफ़ते-ताज़ा सर पै है आई
बक रहे हैं मिसालेसौदाई[2]
ध्यान उनकी तरफ़ जो जाता है
ग़मसे मुँहको कलेजा आता है
जो कि उसमें थे साहबे-औलाद
हाल अबतर था उनका हदसे ज़ियाद
कहते थे कूटकर सर-ओ-सीना
क्यों न दुश्वार उनका हो जीना

[1]जिस पर रोना आये [2]पागल

मर्गे-औलादका[1] वो मातम है
रंज-ओ-ग़म जिस क़दर करें कम है
कोई कहता था कैसी आफ़त है
नौजवाँ मरना एक क़यामत है
यूँ तो है अज़पये-ज़माना[2] मर्ग
न मरेपर कोई जवानामर्ग[3]
कोई बोला कि है सभीको मलाल
देखा जाता नहीं है बापका हाल
आतिशे-दिलसे दिल हुआ है कबाब
है तपाँ मिस्ल माहीये-बेआब[4]
चश्मा जारी है चश्मे-गिरियाँका[5]
होश बाक़ी नहीं तन-ओ-जाँका
है किसीको न सब्र नै आराम
देखनेवाले रो रहे थे तमाम

प्रेमिकाका जनाज़ा

पीट डाले हैं सबने सर अपने
सर-ओ-पाकी नहीं ख़बर अपने
बनिये लोग जान खोते हैं
सारे दूकानदार रोते हैं
हाल देखा जो मैंने ये उठकर
रह गया सीनेमें दिले-मुज़्तर[6]

[1]औलाद (संतान)के मरने [2]सारा ज़माना मरनेके लिये है [3]जवानीकी मौत [4]बिना पानीकी मछली [5]रोती आँखोंसे चश्मा (स्रोत) बह रहा है [6]व्याकुल हृदय

न रही ताब रंजके मारे
लगे थर्राने दस्त-ओ-पा सारे
बहरे-उल्फ़तने[1] दिलमें मारा जोश
गिर पड़ा होके खाकपर बेहोश
इश्क़की थी जो दिलमें बीमारी
ग़शका आलमसा हो गया तारी[2]
दो घड़ी बाद फिर जो आया होश
देखा बरपा अजब है जोश-ओ-ख़रोश
आगे-आगे है कुछ जुलूस रवाँ
सर खुले पीछे-पीछे पीर-ओ-जवाँ
सिनरसीदा हैं औरतें कुछ साथ
सीना-ओ-सर पै मारती हैं हाथ
कोई मामा है कोई दाई है
कोई अन्ना कोई खिलाई है
जब वो भरती हैं ग़मसे आहें सर्द
सुननेवालोंके दिलमें होता है दर्द
होता ग़ैरोंको है मलाल उनका
देखा जाता नहीं है हाल उनका
कुछ बयान ऐसे होते जाते हैं
रस्तेवाले भी रोने जाते हैं
इसके पीछे पड़ी फिर उस पै निगाह
कि न देखे बशर मआज़ल्लाह
शामियाना नया ज़रीका है
नीचे ताबूत[3] उस परीका है

[1]प्रेम-सागर [2]मूर्च्छा-सी छा गई [3]जनाज़ा, वह लकड़ीका पलंग जिसपर शव रखकर क़ब्रस्तान ले जाते हैं

सेहरा उसपर बँधा है एक ज़रतार[1]
जैसे गुलशनकी आख़िरी हो बहार
थी पड़ी उस पै एक चादरे-गुल[2]
जिससे ख़ुशबू वो राह थी बिलकुल
ऊदसोज़[3] आगे-आगे रोशन थे
मर गये फिर भी लाख जोबन थे
भीड़ ताबूतके थी ऐसी साथ
जैसे आये किसी दुल्हनकी बरात
सब अमीर-ओ-शरीफ़ थे हमराह
भीड़ थी इस क़दर कि बन्द थी राह
साथ थे ख़्वेश-ओ-अक़रबा सारे
रो रहे थे ग़रीब बेचारे
पीछे-पीछे था सबके सौदागर
सौ परीशान उदास ख़ाक बसर
आगे-आगे जनाज़ा जाता था
ग़श उसे हर क़दम पै आता था
हाथ थामे थे अक़रबा सारे
ता किसी जा पै सर न दे मारे
हाल इस दरजा हो रहा है ज़बूँ[4]
बहता जाता है सरके ज़ख़्मसे ख़ूँ
सब अमीर-ओ-फ़क़ीर रोते थे
देखकर राहगीर रोते थे
पीछे सबके फ़िनसमें[5] थी मादर
कहती जाती थी इस तरह रोकर

[1]सुनहरा [2]फूलोंकी चादर [3]अगरबत्ती [4]बुरा [5]पालकी

तेरी मैय्यत[१] पै हो गई मैं निसार
कम सुख़न हाय मेरी ग़ैरतदार
कुछ नहीं माँकी अब ख़बर तुमको
किसकी ये खा गई नज़र तुमको
दिल पै जो गुज़री कुछ बयान न की
कुछ वसीयत भी मेरी जान न की
दिल ज़ईफ़ीमें मेरा तोड़ गई
बेटा इस माँको किस पै छोड़ गई
ताज़ा पैदा जिगरका दाग़ हुआ
घर मेरा आज बेचराग़ हुआ
दिलको हाथोंसे कोई मलता है
जो सँभाले नहीं सँभलता है
ज़हर दे दे कोई मैं खा जाऊँ
या ज़मीं शक़[२] हो मैं समा जाऊँ
दाग़ तेरा जिगर जलाता है
चाँदसा मुखड़ा याद आता है
मिट गया लुत्फ़ ज़िन्दगानीका
दिलको ग़म है तेरी जवानीका
ब्याह तेरा रचाने पाई न मैं
कोई मन्नत बढ़ाने पाई न मैं
तेरी सूरतके हो गई क़ुर्बान
चलीं दुनियासे कैसी पुर-अरमान
हुई किस बातपर ख़फ़ा बोलो
अम्मा वारी ज़रा जवाब तो दो

[१] जनाज़ा [२] फट जाय

बोलतीं तुम नहीं पुकारेसे
अब जिऊँगी मैं किस सहारेसे
क्या क़ज़ाने जिगर पै दाग़ दिया
आज घर मेरा बेचराग़ किया
निकला माँ-बापका न कुछ अरमान
हाय बेटी न तुम चढ़ीं परवान
ऐसी इस माँसे हो गई बेज़ार
ली न ख़िदमत भी पड़के कुछ बीमार
न जिऊँगी तेरे फ़िराक़में[1] मैं
दिल तड़पता है आँखें ढूँढ़ती हैं
किस मुसीबतमें पड़ गई बेटा
कोख मेरी उजड़ गई बेटा
उम्र कटनी थी ऐसे सदमेमें
ठोकरें थीं बदी बुढ़ापेमें
सुनके इस तरह उसके माँके बैन
और सीनेमें दिल हुआ बेचैन
थी वसीयत जो उस परीकी याद
सबके पीछे मैं हो लिया नाशाद[2]
गो ये ताक़त न थी कि चलता राह
ले चला जज़्बे-इश्क़ पर हमराह
पीछे उन सबके जो रवाँ था मैं
सूरते-गर्दे-कारव[3] था मैं
गो तड़पता था सूरते-बिस्मिल
बैठ जाता था गाह थामके दिल

[1]वियोग [2]दुखियारा [3]कारवाँकी धूलस्वरूप

ज्यूँ ज्यूँ करता था ज़ब्त मैं नाला
दिल हुआ जाता था तह-ओ-बाला[१]
मुर्ग़-बिस्मिलकी मेरी सूरत थी
याँ गिरा वाँ गिरा ये हालत थी
अलग़रज़ पहुँचा साथ उनके वाँ
दफ़नका उसके था मुक़ाम जहाँ
क़ब्र खुदती जो वाँ नज़र आई
लाख रोका पै चश्म भर आई
देखकर ये जो लोग रोने लगे
टुकड़े-टुकड़े जिगरके होने लगे
ताक़ते-ज़ब्त वाँ पै जब न रही
दिलसे मैंने ये अपने बात कही
कहके क्या मर गई वो जान तुझे
कुछ वसीयतका भी है ध्यान तुझे
हो न लिल्लाह बेक़रार इतना
ज़ब्त कर दिलको हो सके जितना
दिलको समझाके ये गया मैं वाँ
जमा सब उसके अक़रबा थे जहाँ
दिले-आफ़तज़दाको बहलाकर
चुपका बैठा मैं एक तरफ़ जाकर
अश्क आँखोंसे गो न बहते थे
लोग पर देख-देख कहते थे
हाल चेहरेका आज कैसा है
ख़ैर तो है, मिज़ाज कैसा है

---

[१]उलट-पुलट

लाल आखें हैं तमतमाये हैं गाल
वजह क्या है बयाँ तो कीजिये हाल
मुँह पै एक मुर्दनी-सी छाई है
चेहरेपर छुट रही हवाई है
बोला मैं और कुछ नहीं है बात
शबको सोया नहीं मैं सारी रात
उस पै पैदल जो आया हूँ मजबूर
रंग चेहरेका हो गया काफ़ूर
तर्के-आदत भी एक आदत है
रातका जागना क़यामत है
दिलका शक उनके सब निकाल दिया
यही कह-सुनके उनको टाल दिया
ग़ुल हुआ इतनेमें सब आते जायें
फ़ातहा पढ़ते जायें जाते जायें
सुनके ये सब गये वहाँ अहबाब
बख़्शा पढ़-पढ़के फ़ातहाका सवाब
जब कि इससे भी हो गई फ़ुर्सत
आये जितने थे हो गये रुख़सत
पाई तनहा जो मैंने यारकी क़ब्र
दिलको बाक़ी रही न ताक़ते-सब्र
था जो उस शमअ-रू का परवाना
दौड़कर आया मिस्ले-दीवाना
गिर पड़ा आके क़ब्रपर एक बार
और रोने लगा मैं ज़ार-ओ-नज़ार
न रहा था जो अख़्तियारमें दिल
लोटा तुरबत पै सूरते-बिस्मिल

दिल अजब कुछ मज़ा उठाता था
क़ब्र उसकी गले लगाता था
मर गई थी जो मुझ पै वो गुलफ़ाम[1]
ज़िन्दगी हो गई मुझे भी हराम
देखा आँखोंसे था जो ऐसा क़त्ल
खा गया मैं भी घरमें आके ज़ह्ल
दो पहर तक तो क़ै रही जारी
बाद फिर इसके ग़श हुआ तारी
तीन दिन तक रही वो बेहोशी
हो गई जिससे ख़ुद फ़रामोशी
ऐन ग़फ़लतमें फिर ये देखा ख़्वाब
कि ये कहती है वो ब-चश्मे-अताब[2]
सुन तो रे तूने ज़ह्ल क्यों खाया
कुछ वसीयतका भी न पास आया
हुए ख़ुदरफ़्ता[3] ऐसे हदसे ज़ियाद
दो ही दिनमें भुला दी मेरी याद
दिलसे मेरा भुला दिया कहना
हाँ यही चाहिये था क्या कहना
कहके ये जब वो हो गई रूपोश[4]
खुल गई आँख आ गया मुझे होश
ज़ह्लका फिर न कुछ असर पाया
एक तअज्जुब-सा मुझको ये आया

[1]सुन्दरी, फूलसे चेहरेवाली [2]क्रुद्ध दृष्टिसे [3]आत्म-विस्मृत [4]छिप गई

आशना दोस्त सबका था ये बयान
मुर्दे जी उट्ठे लो ख़ुदाकी शान
हो गया वालिदैनको ये सुरूर[1]
बढ़ गया दिलका चैन चश्मका नूर
अक़रबा सुनके सब हुए दिलशाद
आके देने लगे मुबारकबाद
हासिल इतना था इस कहानीसे
हम रहे जीते सख़्त जानीसे[2]
इश्क़में हमने ये कमाई की
दिल दिया ग़मसे आशनाई की

[1]ख़ुशी [2]सख़्त जानीसे अर्थात प्राण आसानीसे न निकल सके इस कारण

हुस्ने-फ़ितरत

मुंशी गोरखप्रसाद 'इबरत' गोरखपुरी

यह मसनवी एक रूपक है जिसकी रचना मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय मुंशी गोरखप्रसाद 'इबरत' ने अबसे साठ बरस पहले की थी। एक शहर चार तत्त्वों—आग, पानी, मिट्टी, और हवासे बना है, । उस नगरका नाम जिस्म है अर्थात मनुष्यका शरीर । नगरकी मलका रूह (आत्मा) है। राजकुमार दिल है। वज़ीर या प्रधान मंत्री अक़्ल (बुद्धि) है। उसके मशीरकार (सहयोगी) होश-ओ-हवास हैं । संसार निगार-ख़ाना है। वहाँकी राजकुमारी हुस्न है जिसकी दो सहेलियाँ हैं अदा और नाज़ । दिल जवान होकर निगारख़ानेकी सैरको निकलता है जहाँ निगारख़ानेकी राजकुमारी हुस्नकी देवीका सामना हो जाता है। निगार-ख़ानेमें अपरिचितका आना एक कोलाहल मचा देता है। हुस्नकी देवी एक तीर चलाती है और दिल घायल हो जाता है।

जिस्म नामी नगरमें राजकुमारके ग़ायब हो जानेसे एक कुहराम मच जाता है। मुख्य मंत्री अक़्ल दिलकी तलाशमें निकलता है और बहुत दौड़-धूपके बाद दिलको मुजरिमकी हैसियतसे निगारख़ानेके बादशाहके इजलासमें खड़ा हुआ देखता है। इजलाससे दिलको प्राण-दण्डका हुक्म सुनाया जाता है और मसनवी यहीं आकर ख़त्म हो जाती है।

मसनवियोंमें निबन्ध काव्य लिखनेके अनेक अवसर पैदा हो जाते हैं। कथा तो चलती ही रहती है लेकिन दृश्योंका वर्णन, जीवन, नीति, मनोविज्ञान इत्यादि तत्त्वोंके अनेक पहलू निबन्ध काव्योंके द्वारा उजागर किये जाते हैं। इस मसनवीमें कथाके साथ-साथ रूपकका सहारा

लेकर जीवन, संसार, हुस्न, अक़्ल (बुद्धि) इत्यादि विषयोंपर कविने जिस क्षमतासे, जिस सिद्धहस्त ढंगसे अनेक बातें कही हैं वो मसनवीके मज़ेको बहुत बढ़ा देती हैं।

इस मसनवीमें एक हज़ार पंक्तियाँ हैं और लगभग दस हज़ार शब्द हैं जिनमें उर्दू न जाननेवालोंके लिए केवल तीन सौ छियासी ऐसे शब्द और टुकड़े आये हैं जिनका अर्थ देनेकी ज़रूरत पड़ी है। लेकिन ध्यान देनेकी बात यह है कि एक हज़ार पंक्तियाँ इस तरह साँचेमें ढली हुई हैं, उनकी शैली इतनी नर्म और स्वाभाविक हैं, खड़ी बोली बनावटसे इतनी पाक साफ़ है, वर्णन झोल और उलझावसे इतना बचा हुआ है, बयानमें इतना सुलझाव है कि ये थोड़ेसे मुश्किल शब्द भी कवितामें अति सुगम ढंगसे खप गये हैं और कहींसे झटका, खटका या भारीपनका अहसास नहीं होता। खड़ी बोलीकी कवितामें या किसी भाषाकी कवितामें असली समस्या शब्दोंकी नहीं होती बल्कि असली समस्या ये होती है कि वाक्य सुलझे हुए हैं या उलझे हुए, स्वाभाविक हैं या अस्वाभाविक और ध्वनि, भाषाके असली रूपकी झलकियाँ दिखाती हैं या नहीं, तोड़-मरोड़से शैली मुक्त है या नहीं। अगर इस कसौटीपर इस कविताको कसा जाय तो ये कविता सच्ची उतरेगी। हिन्दीके कवियोंकी प्रायः यह कमजोरी होती है कि खड़ी बोलीकी क्रियाओं और शब्द क्रमके नियमोंपर उनका आधिपत्य न होनेके बराबर होता है। इसीसे प्रायः उनकी रचनाओंमें एक गुट्ठलपन आ जाया करता है। गुट्ठलपनको दूर करके वाक्योंमें लचक पैदा करना हिन्दी कवि उर्दू कवियोंसे सीख सकते हैं। फिर इसके बाद सवाल उठता है शब्द संकलनका। अर्बी फ़ारसीके शब्द हों या संस्कृतके शब्द हों ऐसे ही शब्द लेना चाहिए कि खड़ी बोलीके साथ वह अनमिल और बेजोड़ न मालूम हों। खड़ी बोलीमें कई हज़ार अरबी-फ़ारसी शब्द तो ठेठ शब्दावलीके हिस्से बन चुके हैं और जो नहीं बन चुके हैं उनका संकलन भी इतनी सावधानीसे किया जा सकता है कि ठेठ न होते हुए

भी वो नगीनोंकी तरह खड़ी बोलीमें जड़ दिये जायँ। उतनी ही मेहनत और सावधानी संस्कृत शब्दोंके संकलनमें आवश्यक है।

इस मसनवीमें शैली बड़ी नर्म और संयत है, भारीपन बयानमें कहीं नहीं आने पाया है और भाषा या ज़बान सरल होते हुए भी इतनी सुसंस्कृत है, विचारका स्तर इतना पाक साफ़ है, कविताकी झंकार इतनी सुहानी है कि कविकी सफलता माननेके लिये हम विवश हो जाते हैं। यह कविता बहुत ही सुशिक्षित कविता है, केवल शिक्षाप्रद नहीं है।

हुस्ने-फ़ितरत[1]

(प्रकृति सौन्दर्य)

बिगड़ना बनना हक़ीक़तमें[2] इत्तफ़ाक़ पै[3] है
ख़ुशी बशरकी[4] मगर मुनहसर[5] मज़ाक़ पै[6] है
सलाहे-ख़ुल्क़[7] तबीयतके बरखिलाफ़[8] नहीं
मिज़ाजे-अस्लसे[9] नेचरको[10] एख़्तिलाफ़[11] नहीं
वह नफ़्स[12] जिससे है क़ायम वजूदे-इन्सानी[13]
वो कैफ़ियत[14] जिसे कहते हैं लोग नफ़्सानी[15]
उतरना जेह्नमें[16] वो मुख़्तलिफ़ ख़यालोंका
वो सोना ख़्वाबे-तसव्वुरमें[17] होशवालोंका
बशर कि उम्रे-तबीईका[18] एक सहारा है
अगर न समझो तुम्हें जैलमें[19] इशारा है

(१)

था एक शख़्स जो था चार अन्सरोंसे[20] बना
वो चार कौन ? यही आग, पानी, ख़ाक, हवा

[1]प्रकृतिका सौंदर्य [2]वास्तवमें [3]संयोग [4],[5],[6]मनुष्यकी ख़ुशी उसकी रुचिपर निर्भर है [7],[8]नैतिक जीवन मानवीय प्रकृतिके खिलाफ़ नहीं [9]मूल स्वभाव [10]प्रकृति [11]मतभेद [12]इन्द्रियाँ [13]मनुष्यका अस्तित्व [14]हालत [15]ऐन्द्रिक [16]मन-मस्तिष्क [17]काल्पनिक स्वप्न [18]प्राकृतिक आयु [19]नीचे [20]पंचभूतमेंसे चार

उन्हीं पै पाये था हर काम इन्सराम[१] उसका
तमाम खल्क़में[२] मशहूर जिस्म नाम उसका
और रूह (नूरे-ख़ुदा[३]) ताज-ओ-तख़्तवाली थी
इसीके दमसे फ़क़त शह्रकी बहाली थी
फ़नाकी[४] गोदमें हर चन्द[५] वो मचलती थी
हमेशगीका[६] मगर रास्ता वो चलती थी
था एक लख़्ते-जिगर[७] जिस पै था ग़रूर[८] उसे
उसीके वादए-उल्फ़तका[९] था सरूर[१०] उसे
दिल उसका नाम था सीनामें था मुक़ाम उसका
सवादे-जिस्ममें जो था वो था ग़ुलाम उसका
ख़ुदाके फ़ज़्ल-ओ-करमसे[११] वो जब जवान हुआ
तो गुल खिलानेको तैय्यार आसमान हुआ

(२)

निकल गया था वो एक सम्त[१२] सैर करनेको
दयारे-ग़ैरमें[१३] नादाँ[१४] गया था मरनेको
इसे ख़बर न थी कुछ किसकी सरज़मीन है ये
ये हिन्द है कि अदन, क़ाफ़[१५] है कि चीन है ये
वो देखता था जहाँ तक नमूका[१६] आलम[१७] था
अजब हवा थी, अजब रंग-ओ-बू का आलम था

[१]सरंजाम [२]सर्वसाधारण [३]ईश्वरीय ज्योति [४]मृत्यु, विनाश [५]रह-रहकर, घड़ी-घड़ी [६]चिरस्थायी रहने [७]जिगरका टुकड़ा [८]अभिमान [९]प्रेमके वायदे [१०]नशा [११]दया और कृपा [१२]ओर [१३]ग़ैरकी बस्ती [१४]नासमझ, नादान [१५]रूसका एक प्रदेश काकेशिया [१६],[१७]नमू=उगना, बढ़ना आलम=हालत, दृष्टि सीमा तक पेड़-पौधे उगे थे

नज़रके सामने सब्ज़े भी लहलहाते थे
हरे-हरे सेवो पौधे निकलते आते थे
नसीमे-सुब्ह[१] वहाँ हर तरफ़ मचलती थी
सबा[२] भी झूमके अटखेलियोंसे चलती थी
समाँ अजीब वहाँके था सब्ज़ाज़ारोंमें[३]
कि फ़स्ले-गुल[४] भी खड़ी थी उमीदवारोंमें
हर एक गोशए-गुलज़ारमें[५] बहार थी वाँ
चहार सम्तसे हर दम यही पुकार थी वाँ
बहिश्त[६] अगर है कहीं तो इसी ज़मींपर है
यहींकी ख़ाक है जो चाँदकी जबींपर[७] है
दिखाई देता था क़ुदरतका[८] कारख़ाना उसे
वहाँके लोग थे कहते निगार ख़ाना[९] उसे
हर एक रविश[१०] पै वो मस्तानावार झूमता था
हर एक कूचामें हैरतज़दासा[११] घूमता था
क़दम-क़दम पै मसर्रतसे[१२] था निहाल बहुत
वो दिलमें करता था हसरतसे क़ौल-ओ-क़ाल[१३] बहुत
कि नागहाँ[१४] उसे कुछ दूरसे नज़र आया
हो जैसे नूरका[१५] दामन किसीने फैलाया

(३)

वो ताब जिससे बहुत पेच-ओ-ताब होता है
वो बादा[१६] जिससे बहुत दिल कबाब[१७] होता है

[१]प्रभात समीर [२]पवन [३]हरेभरे मैदानों [४]फूलोंकी फ़सिल [५]वाटिकाके कोने [६]स्वर्ग [७]माथे [८]प्रकृति [९]चित्रशाला [१०]बाग़की पटरी [११]आश्चर्यचकित [१२]खुशी [१३]बहस-तकरार [१४]अचानक [१५]प्रकाश [१६]शराब [१७]जलता

वो मन कि जान गँवाँ बैठे मनचले जिसपर
वो चीज़ नाज़ हैं करते भले बुरे जिसपर
वो चाँदनी कि जहाँ माह[1] एक पारा है
वो धूप जिसका ये ख़ुरशीद[2] एक शरारा[3] है
वो सुब्ह जिसमें नसीमे-मुराद[4] चलती है
वो शाम आरज़ूकी शमअ[5] जिसमें जलती है
वो यानी हुस्न बड़े इज़्ज़-ओ-जाहकी[6] बेटी
निगारख़ानाके नैरंगशाहकी[7] बेटी
बड़े जलाल-ओ बड़े कर्रोफ़रसे[8] आती थी
हर एक शै[9] को गिराती नज़रसे आती थी
वो आके जब हुई दाख़िल निगारख़ानेमें
तो जगमगा उठी वो सरज़मीं[10] ज़मानेमें
वो चूँकि सुब्हे-अज़लसे[11] थी पाकबाज़[12] बहुत
निगाहे-ग़ैरसे रखती थी एहतराज़[13] बहुत
वो अजनबीकी निगाहोंसे शर्म खाती थी।
हयाकी ओटमें मुँह अपना वो छिपाती थी
पड़ी निगाह दिले बुलहवस[14] पै जब नागाह[15]
तो तमतमा उठी—जोशे-ग़ज़बसे ग़ैरते-माह[16]
अदा-ओ-नाज़से (जो थीं सहेलियाँ उसकी
जो बूझा करती थीं हर दम पहेलियाँ उसकी)

[1]चाँद [2]सूर्य [3]चिनगारी [4]मनकी मुराद पूरी करनेवाली पवन [5]दीप, शमा [6]शान शौकत [7]जादू, तिलिस्मका राजा [8]प्रताप ठाठ बाट [9]चीज़ [10]भूमि [11]अनादि काल [12]पवित्र [13]बचती थी [14]वासनाका ग़ुलाम [15]अचानक [16]जिसे देख चाँद भी शर्मा जाय

कहा कि देखो मुक़ाबिलमें ये खड़ा है कौन
हमारे सामने ज़िदकी[1] तरह अड़ा है कौन
है सरका दर्द मेरे जिस्मका बुख़ार है ये
हटाओ जल्द बहुत मुझको नागवार[2] है ये
गईं ये सब तो वो मर्दानगी दिखाने लगा
हवासबाख़्ता[3] दीवानगी दिखाने लगा
हटा न सामनेसे इनके, वो अड़ा ही रहा
मिसाले-सायए-दीवार[4] वो खड़ा ही रहा
ये हाल देखके वापस गईं वो हुस्नके पास
कहा नहीं कोई तदबीर अपनी आई रास[5]
करिश्मा-अश्वाको[6] भी हुक्म हो कि आओ तुम
कहा ये हुस्नने जल्दी इन्हें बुलाओ तुम
ये कहके हुस्न हटी वाँसे बदगुमाँ[7] होकर
नज़रसे हो गई ओझल शरर-फ़शाँ[8] होकर

(४)

हटी जो हुस्न तो दिलको भी कुछ क़रार[9] आया
शजरके[10] नीचे वहाँसे वो होनहार आया
वो सब्ज़ाज़ार पै बिस्तर जमाके बैठ गया
निगारख़ानामें हलचल उठाके बैठ गया
मआमलातमें वो अज़मूदाकार[11] न था
ख़ुद अपनी ज़ात पै कुछ उसको एतबार न था
इधर-उधरकी हवाएँ न था वो खाये हुए
न सर्द-ओ-गर्म ज़मानेका आज़माये हुए

[1]हठ [2]नापसन्द [3]बदहवास [4]दीवारकी छाया [5]अनुकूल [6]नाज़ अन्दाज़
[7]बुरी भावना लेकर [8]चिनगारी बरसाती [9]चैन, शान्ति [10]वृक्ष [11]अनुभवी

हज़ार तरहका जीमें ख़याल होता था
उमीद-ओ-बीमसे[1] ग़ैर उसका हाल होता था
हवास-ओ-होशका सरमें न था पता पाता
हवाके साथ था अन्देशा रास्ता पाता
ग़रज़ कि रात कटी इज़्तराबमें[2] उसकी
उचाट नींद हुई पेच-ओ-ताबमें उसकी

(५)

अलस्सबाह[3] जो ख़ुरशीदने[4] निकाला मुँह
और उसके साथ ही शबने[5] छुपाया काला मुँह
बदनमें दिलके तर-ओ-ताज़गीने जोश किया
उठाके खाक़से बिस्तरको बारे-दोश[6] किया
वो था जवान बड़ा ज़ोम[7] था अभी उसको
बलन्द हौसला था—थी न कुछ कमी उसको
अकड़ता जानिबे-मैदाने-कारज़ार[8] चला
उड़ाता ख़ाक वो जान्दादए-बहार[9] चला
उड़ी जो ख़ाक हर एक सू[10] निगार ख़ानेमें
तो पेच खाने लगी ज़ुल्फ़े-हुस्न शानेमें[11]
कहा ये हुस्नने किसकी ये गुलफ़िशानी[12] है
हवा है या कोई तूफ़ाने-आसमानी है
बशर चढ़ा है कोई सर पै मुँह की खानेको
बताओ नाज़-ओ-अदा गर हो तुम बतानेको

[1]आशा निराशा [2]बेचैनी [3]सुबह तड़के [4]सूर्य [5]रात [6]बार=भार, दोश=कंधा, कंधेपर रख लिया [7]घमंड [8]रणक्षेत्रकी ओर [9]बहारपर जान देनेवाला [10]ओर [11]कंघी [12]फूल छिड़क रहा है

ग़ज़ब जो हुस्नकी त्योरी चढ़ी हुई देखी
और उसकी आँखोंकी सुर्ख़ी बढ़ी हुई देखी
हो मुत्तफ़िक़ लबे-इज़्हार[1] वा किया सबने
और इस तरहसे बयाँ हाल कर दिया सबने
हुज़ूर कल जो पए-सैर बाग़ जाती थीं
निगारख़ानामें ठंडी हवाएँ खाती थीं
तो रास्तेमें था एक नौजवाँ खड़ा आकर
पए-मुक़ाबिला[2] गोया वो था अड़ा आकर
सुना जो हुस्नने इतना तो उसको ध्यान आया
कहा कि हाँ था सरे-राह एक जवान आया
अगर उसीकी शरारतनें है उड़ाई ख़ाक
तो ख़ाकमें मैं मिला दूँ अभी ये नोह् अफ़लाक[3]
बुलाओ अशवा-करिश्माको जल्द आयें वो
ये वक़्त है कि जवाँमर्दियाँ दिखायें वो
कहो ये ग़मज़ासे[4] अपना भी खोल दे परचम[5]
हर एक सम्तसे[6] आकर दिखायें सब दम ख़म
ग़रज़ कि हुस्नने सामान सब दुरुस्त किया
सिपाह लेके चली सबको चाक़-ओ-चुस्त किया
बढ़ाके जल्द क़दम आई कारज़ारमें[7] वो
मिसाले-बर्क़[8] गिरी आके सब्ज़ाज़ारमें[9] वो
करिश्मा-अशवा भी आये परा[10] जमाये हुए
बहुतसे तीर-ओ-तफ़ंग[11] अपने साथ लाये हुए

[1]एकमत हो सबने बात करनेको मुँह खोले [2]पए=लिये, मुक़ाबिलेके लिये [3]नौ आकाश [4]अन्दाज़ [5]झंडा [6]ओर [7]रणक्षेत्र [8]बिजलीके समान [9]हरियाली, हरे भरे मैदान [10]ढेर [11]तोप, बन्दूक़

बुझी थी ज़ह्‌रमें तलवारें जो चमकने लगीं
और उन पै यासभरी[१] आँखें दिलको तकने लगीं
हर एक सम्तसे नज़्ज़ारगीका[२] तीर चला
बिखरके ख़ूब ही आवारगीका तीर चला
इधर ये फ़ौजे-गिराँ[३] और उधर अकेला दिल
पै कारज़ारमें कुछ ऐसा खुलके खेला दिल
कि छक्के छूट गये हुस्नके जवानोंके
वो ज़र्द पड़ गये—लाले पड़े थे जानोंके
ये हाल देखके ज़ीहोश[४] हुस्न दंग हुई
खड़ी थी खेतमें जो फ़ौज वो भी तंग हुई
हटी जो फ़ौज तो फिर हुस्न भी ठहर न सकी
उड़ी हवासकी सूरत परी ठहर न सकी
पै चलते-चलते रवाँ तीर एक अदाका हुआ
दिल इससे बच न सका और हदफ़ बलाका[५] हुआ
लगा जो तीर तो दिलने जिगरको थाम लिया
ज़मीं पै बैठ गया बेकसीका नाम लिया
चुभा जो सीनेमें ऐसा कि फिर निकल न सका
उठा वो दर्द कि दिल भी वहाँसे उठ न सका
ठहर-ठहरके कलेजेमें दर्द होता था
तड़प-तड़पके ज़मींपर वो जान खोता था
खिला था फूलसा जो चेहरा पुरमलाल[६] हुआ
कलेजा ख़ून हुआ दिलका और हाल हुआ

[१]निराशापूर्ण [२]नज़्ज़ारा=दृश्य, नज़्ज़ारगी=देखने [३]भारी सेना [४]सचेत [५]हदफ़=निशाना बला=ग़ज़ब, ग़ज़बका निशाना [६]मलीन

(६)

इधर लड़ाईमें दिल तो वो तीर खाके गिरा
ग़रूरसा सरे-मैदाँ वो सर उठाके गिरा
उधर जो हुस्न गई घरपै तो क़रार[१] न था
बहुत उदास थी चेहरे पै वो निखार न था
दिखाया था उसे कुछ दिलने बाँकपन ऐसा
लड़ा था मारकामें[२] वह चलाके मन ऐसा
कि ताब हुस्नमें बाक़ी न थी लड़ाईकी
तमाम ढीली पड़ी थीं रगें लड़ाईकी
इस इंतशारमें[३] था नश्शए-दिमाग़ उसका
ख़िज़ाँको[४] खींच रहा था शगुफ़्ता[५] बाग़ उसका
सहेलियोंने जो देखा कि बेक़रारी है
समझ गईं कि लगा कोई ज़ख़्म कारी है
हवासबाख़्ता दौड़ीं—हुज़ूरमें आईं
अदबके साथ सुख़न[६] ये ज़बानपर लाईं
ये क्या हुआ जो परागंदा[७] है मिज़ाज हुज़ूर
दिखाई देती है रंजीदा हमको आज हुज़ूर
ख़ुदानख़्वास्ता[८] पहुँचा कोई मलाल है क्या
बताएँ हमको हुज़ूर आज जीका हाल है क्या ?
कहा ये हुस्नने पहुँचा कोई गज़न्द[९] नहीं
मैं पुरमलाल नहीं हूँ मैं दर्दमन्द नहीं
अगर है कुछ तो मुझे दिलसे बदगुमानी है
अभी जवान है उठती हुई जवानी है

[१]चैन [२]रणक्षेत्र [३]परेशानी [४]पतझड़ [५]खिला, फूलाफला
[६]बात [७]परेशान, उड़ाउड़ा-सा [८]ईश्वर न करे [९]हानि

लड़ेगा ख़ूब ही मैदाने-कारज़ारमें वो
ये ख़ूब है न उड़ाये मुझे ग़ुबारमें[१] वो
किसी तरहसे मैं हो सकती हमनबर्द[२] नहीं
जवान हूँ मगर उसकी तरह तो मर्द नहीं
शिकस्त-ओ-फ़तह[३] बशर क़िस्मतोंसे पाता है
पै इज़्ज़-ओ-जाहको[४] अपनी हर एक बचाता है
मैं चाहती हूँ कि कुछ और ढबकी बात चले
कि ख़ूब जिच हो ये दिल और खाके मात चले

(७)

सहेलियोंने सुनीं जब ये दूरकी बातें
तो बोलीं वो कि हैं सब सच हज़ूरकी बातें
यही है शेवए-अक़्ल[५] और मक़तज़ाए-शऊर[६]
कि आदमी करे वो काम जो बताए शऊर
पै क्या करें कि हमारा कुछ अख़्तियार नहीं
हम औरतोंमें कोई ऐसी होशियार नहीं
तग़ाफ़ुल[७] आये तो शायद सुधारे कामको वो
कि जानता है लड़ाईकी रोकथामको वो
हर एक फ़ितनाको[८] दम देके वो सुलाता है
वो अपने गौं पै हर एक शख़्सको लगाता है
इसीलिये वो मुक़र्रर[९] है उसका काम है ये
वो आये मशविरा[१०] उससे हो वक़्ते-शाम है ये

[१]धूल [२]मुक़ाबिलेमें लड़ना [३]हार और जीत [४]शान शौकत [५]बुद्धिका कार्य [६]चेतनाकी माँग [७]उपेक्षा [८]झगड़े, शरारत [९]नियुक्त [१०]सलाह,

अदा-ओ-नाज़की अलक़िस्सा[१] ख़त्म बात हुई
सलाहे-शूराका[२] वक़्त आया यानी रात हुई

(८)

शबे-सियहने[३] जहाँमें उतारा डेरा जब
ज़मींसे लेके फ़लक[४] तक हुआ अँधेरा जब
अदम मिसाल[५] निगाहोंमें कायनात[६] हुई
हज़ूरे-हुस्न तग़ाफ़ुलकी[७] बढ़के बात हुई
कहा कि हुक्म है क्या, क्यों मुझे बुलाया है
कोई अदू[८] कोई मेहमान घरमें आया है?
मैं बन्द कर दूँ उठा हो अगर फसाद कोई
नज़रके सामने रख दूँ अगर हो याद कोई
कहा ये हुस्नने तुझपर है एतबार मुझे
ख़िज़ाँमें भी तू दिखा देता है बहार मुझे
किया है याद तुझे मैंने एक कामसे आज
पड़ी है खलबली क़ल्ब-ओ-जिगरमें[९] शामसे आज
है एक जवान कि दिल नाम जिसका सुनती हूँ
हमेशा बुलहवसी[१०] काम जिसका सुनती हूँ
निगारख़ानेमें आकर मेरे समाया है
उड़ाके ख़ाक मेरे रंगको उड़ाया है
दिखाया ख़ूब मुझे आज सब्ज़ बाग़[११] उसने
बहुत किया है परेशाँ मेरा दिमाग़ उसने

[१]सारांश यह कि, क़िस्सेका सार [२]राय देनेवालोंकी सलाह [३]काली रात [४]आकाश [५]मुर्दाके समान, न होनेके समान [६]सृष्टि [७]उपेक्षा [८]दुश्मन [९]दिल-जिगर [१०]वासनाकी पूर्ति करना [११]मृगजाल, झूठे सुखकी आशाएँ दिलाना

में चाहती हूँ तग़ाफ़ुल कोई अमल तू चला
पड़ें न पाँव जहाँ दिलको सरके बल तू चला
सुनीं जो हुस्नकी सब पेच-ओ-ताबकी बातें
बनाके लाया तग़ाफ़ुल जवाबकी बातें
कहा—हुज़ूर न दें राह इन्तशारको[1] कुछ
न डालें आप तरद्दुदमें[2] कारोबारको कुछ
हमारे होते कोई बेक़रार होता है
हमारे पाससे दूर इन्तशार होता है
कहाँ है वो अभी लेता हूँ देखभाल उसे
अभी-अभी किये देता हूँ पायमाल[3] उसे

(९)

इधर तो दस्ते-तग़ाफ़ुलमें[4] अख़्तियार हुआ
उधर सुनो कि बहुत दिलका हाल ज़ार हुआ
तमाम रात न आया ज़रा भी ख़्वाब उसे
लगी न आँख कुछ ऐसा था पेच-ओ-ताब उसे
वो ज़ख़्मे-तीरे-अदाके असरसे रोता था
बहुत जुदाइये-क़ल्ब-ओ-जिगरसे रोता था
रहा गया न जब उससे तो दर्दसे बोला
पुकारकर ये ग़मे-हमनवर्दसे[5] बोला
कि ए लईं[6] न रवानी पसन्द की तूने
दयारे-ग़ैरमें जो राह बन्द की तूने
निगा[illegible]में अबतक न था उभरके चला
हमारे पाँवमें जंजीर क्यों तू भरके चला

[1]परेशानी [2]चिन्ता [3]पददलित [4]तग़ाफ़ुलके हाथमें अधिकार आया
[5]अपनेसे लड़नेवाले ग़म [6]लानत, धिक्कारने योग्य

तू ऐ लईम[१] ग़मे-दिलफ़िगार[२] ग़ारत[३] हो
बुरी बला तेरा बोस-ओ-किनार ग़ारत हो
क़दम-क़दम पै हूँ पामाल बख़्त[४] सोता है
घड़ी-घड़ी पै मेरा वक़्त मुझको रोता है
ख़िज़ाँ झपटती है यारब[५] बहारपर मेरी
किसीको भेज मददको पुकारपर मेरी
ये कहके वक़्तेसहर[६] कारज़ारसे[७] उट्ठा
मिसाले-शेर तड़पकर कछारसे उट्ठा
उठा सही पै ये दहशत थी हारकी उसको
पुकारती थी ज़मीं कारज़ारकी उसको

(१०)

अदाके हाथसे वो था जो खाके दाग़ चला
चला उधरको जिधर हुस्नका सुराग़[८] चला
लगी थी जीसे कि फिर हुस्नके मुक़ाबिल हो
जिगरका दाग़ दरख़शन्दगीके[९] क़ाबिल हो
मगर यहाँ तो तग़ाफ़ुलका हो गया था अमल
हर एक तरफ़ थी ख़मोशी—कहीं न थी हलचल
बनाया वाँ था तग़ाफ़ुलने एक हिसार[१०] ऐसा
नज़र जो दूरसे आता था कोहसार[११] ऐसा
किया था दिलको मुक़ैयद[१२] वहाँ तग़ाफ़ुलने
मिला दिया था ज़मीन आसमाँ तग़ाफ़ुलने

[१]कमीने [२]दिल फाड़नेवाला ग़म [३]बरबाद [४]भाग्य
[५]हे ईश्वर [६]प्रातःकाल [७]रणक्षेत्र [८]पता [९]चमकने
[१०]घेरा [११]पर्वत [१२]क़ैद

वहाँसे दिल न निकलनेकी राह पाता था
तड़प-तड़पके वहीं जिन्दगी गँवाता था
सर-ओ-दिमाग़में सौदा[१] समा गया उसके
हवास-ओ-होशमें भी फ़र्क़ आ गया उसके
किया नसीबने उसके बहुत ज़बूँ[२] उसको
ख़लल दिमाग़में आया, हुआ जूनूँ[३] उसको

(११)

अज़ीज़[४] दिलकी कहींसे ख़बर न आई जब
किसीने गुमशुदगीकी[५] ख़बर सुनाई जब
तो रूह[६] दर्दे-जुदाईसे बेक़रार हुई
असरसे उल्फ़ते-फ़ितरीके[७] अश्कबार[८] हुई
न पहुँची कानोंमें जब बन्दोबस्तकी आवाज़
तमाम शह्रमें गूँजी शिकस्तकी[९] आवाज़
ये बेक़रार थी लख़्ते-जिगरके[१०] खोनेसे
पड़ी थी शह्रमें एक खलबली-सी रोनेसे
पए-तसल्लीयें-ख़ातिर[११] न कुछ दवा निकली
जिगरमें दर्द समाया तो ये सदा[१२] निकली
मुझे नहीं क़लक़े-बख़्त आज़माई[१३] है
पै ये सितम है कि फ़रज़न्दकी[१४] जुदाई है
जो मेरी गोदमें फैलाके पाँव सोता था
जो मेरी आँखसे एकदम जुदा न होता था

[१]पागलपन [२]ख़राब हाल [३]पागलपन [४]प्यारे [५]खो जाने [६]आत्मा [७]प्राकृतिक प्रेम [८]आँसू बहाने लगी [९]पराजय [१०]जिगरके टुकड़े [११]संतोष दिलानेवाली [१२]आवाज़ [१३]भाग्य परीक्षाका क्लेश [१४]पुत्र, सन्तान

समझती गोशए-दिलका[1] जिसे क़रार थी मैं
मुराद जिसको समझकर उमीदवार थी मैं
जिगरके साथ तअल्लुक़ने[2] जिसके राह थी की
लगा-लगाके कलेजेसे जिसकी चाह थी की
वही निगाहसे मेरी निहाँ[3] था होनेको
ग़लत ख़बर, वही पैवन्दजाँ[4] था होनेको
अभी निकलनेके क़ाबिल तो उसका दिन भी न था
फ़साना तूल[5] खिंचा वो दराज़ सिन[6] भी न था
कहाँ गया नहीं मिलता है कुछ सुराग़ उसका
ज़मीं पै है कि फ़लकपर चढ़ा दिमाग़ उसका
खिंचा वो किससे किधर जज़्बे-आब-ओ-दाना[7] हुआ
भुलाया किसने उसे—किसका वो बहाना हुआ
मकान-ओ-बाग़ नहीं मुझको आज भाता है
निकल गई है ख़ुशी और ग़म समाता है
जहाँ उमीद मचलती थी वाँ पै यास है अब
उगा था सब्ज़ा जहाँ वाँ पै सूखी घास है अब
पता अज़ीज़का ला दो कोई ख़ुदाके लिये
हमारी चीज़ दिला दो कोई ख़ुदाके लिये
शिकस्ता दिल मेरा यारब क़रार पा जाये
हवाके साथ लपटकर बहार आ जाये

(१२)

बहुत जो रूहका शोर-ओ-फ़ुग़ाँ[8] बलन्द हुआ
तो सल्तनतका हर एक कार-ओ-बार बन्द हुआ

[1]दिलके कोने [2]सम्बन्ध, लगाव [3]निहित [4]जानका पैवन्द [5]कहानी लम्बी हो गई [6]लम्बी आयु [7]अन्न-जलमें खो गया [8]रुदन

अजब मची हुई हल-चल थी क़स्रे-शाहीमें[1]
कि जान-ओ-माल ये सब आ गया तबाहीमें
तमाम शह्रके छोटों बड़ोंमें रोना था
तमाम ऊँचे घरों भोपड़ोंमें रोना था
दिल-ओ-जिगर न थे क़ाबूमें बेक़रार थे सब
हो क्यों न ग़म कि बहीख़्वाहे-शह्रयार[2] थे सब
वह कौन था, नहीं जिसको ग़मे-हुज़ूरी[3] था
हर एक यासमें मिन्नत-कशे-सबूरी[4] था
किसीको ख़ुश[5] नहीं आती थी वाँकी चीज़ कोई
कि था निगाहोंसे उनकी छिपा अज़ीज़ कोई
किसीकी कुछ नहीं चलती थी बदहवास थे सब
थी बात-बातमें हसरत बहुत उदास थे सब
हवा हुए थे हवास ऐसे होशियारोंके
ख़िज़ाँमें रंग उड़ें जैसे सब्ज़ाज़ारोंके[6]
पड़ी थी जीक़में[7] यूँ जानें ग़मगुसारोंकी[8]
हो जैसे उठते धुएँमें लपट शरारोंकी
ख़लल पड़ा हुआ हर एक इन्तज़ाममें था
कि बख़्ते-बदका[9] असर उनके सुब्ह-ओ-शाममें था
सदा ख़राबीकी आती थी बन्द-ओ-बस्तोंसे
ग़म-ओ-अलमकी थी आमद ख़ुशीके रस्तोंसे
भरे अगर्चे सभोंने दम आशनाईके[10]
मगर गिले थे नसीबोंकी नारसाईके[11]

[1]शाही महल [2]बादशाहके शुभचिन्तक [3]हुज़ूरका, बादशाहका ग़म, रंज [4]सब्र, संतोषकी शरण में था [5]भली नहीं लगती थी [6]हरे भरे मैदानों [7]उलझन, परेशानी [8]सहानुभूति रखनेवालों [9]दुर्भाग्य [10]मेल जोल [11]भाग्यकी पहुँच न होनेके शिकवे, शिकायतें

उड़ा था गर्दिशे-गर्दू[1] से उनका रंग बहुत
फ़लककी चालसे आये हुए थे तंग बहुत
पए-तलाश गये गो सिपाह मर्द बहुत
पै सख़्त राहोंसे फिर आये होके गर्द बहुत
जो ग़मने तल्ख़ किया उनके आब-ओ-दानेको
हवास-ओ-होश गये अक़्लके बुलानेको

(१३)

वो अक़्ल कौन जो सच्चा मशीररूहका[2] था
नमकहलाल मुदब्बिर[3] वज़ीर रूहका था
जो देखा कारगुज़ारोंको मुन्तशिर[4] हैं तमाम
हवासबाख़्ता बिखरे इधर-उधर हैं तमाम
क़लक़ हुआ उसे बर्बादी-ओ-तबाहीका
कि मुन्तज़िम था वही बारगाहे-शाहीका
ये देखता वो महलकी तरफ़ शताब[5] आया
हरीमे-रूहमें[6] बादीदए-पुर-आब[7] आया
यहाँ जो देखा तो मलका थी दर्दमन्द बहुत
चढ़ा था नाला[8] बलन्दी पै थी कमन्द[9] बहुत
मलूल रूहको जो उसने इस तरह पाया.
तो बात ये पये-तसकीं[10] ज़बानपर लाया
कि वाक़ई सितमे-जाँगुदाज़[11] टूटा है
ख़ुशीके नग़मए-दिलकशका[12] साज़ टूटा है

[1]आकाशके चक्र [2]राय देनेवाला सलाहकार [3]तदबीरवाला, बुद्धिमान [4]बिखरे हुए हैं [5]तुरन्त [6]आत्माके निवास स्थान [7]सजल नेत्रोंके साथ [8]फ़रियाद, रुदन [9]रस्सी, जिसके सहारे ऊपर चढ़ते हैं [10]तसल्ली देनेके लिये [11]जानको, आत्माको घुलानेवाला [12]मनोहर संगीत

ज़मीन-ओ-चर्ख़ने[१] कुछ ऐसे ही पसन्द किया
छिपाके दिलको जो हर एकको दर्दमन्द किया
हैं माह-ओ-सालके चक्कर जो दमबदम होते
तो हैं हज़ारों निशात[२] और ग़म बहम[३] होते
कभी वो दिन थे कि हर रोज़ ईद देखते थे
सरों पै सायए-बख़्ते-सईद[४] देखते थे
ख़ुशी-ख़ुशीसे बदलते थे सुब्ह शामके साथ
बहुत था बिस्तरे आराम थोड़े कामके साथ
झलक थी माह निमत[५] बख़्तके सितारोंमें
थे चलते काम बहुत ज़ोरके सहारोंमें
कभी बला नहीं टूटी थी बन्द-ओ-बस्तोंपर
कभी न दाग़ लगा था वफ़ा परस्तोंपर
चहार सम्तसे हर दम ख़ुशी बरसती थी
ज़मीने ख़ुल्दे-बरींमें[६] यहाँकी बसती थी
और अब है रंज-ओ-मुसीबतका सामना सबको
कठिन हुआ है बहुत दिलका थामना सबको
बुरे दिनोंमें मुक़द्दर ख़राब होता है
हर एक काममें नाकामयाब होता है
किसे नहीं है क़लक़ वक़्तकी बुराईका
घड़ी-घड़ी पै तो खटका है बेवफ़ाईका[७]
निराली तर्ज़ है क़ुदरतके कारख़ानेकी
नहीं है एक चलनपर रविश ज़मानेकी

[१]आकाश [२]आनन्द [३]एक जगह होते [४]अच्छे भाग्यकी छाया [५]चाँद जैसी [६]स्वर्ग [७]विश्वासघात

बलाए-ग़म कभी आई—कभी ख़ुशी आई
इन उलझनोंकी कशाकशमें ज़िन्दगी आई
किसी तरहसे नहीं याँ क़रार मिलता है
उमीद-ओ-बीमसे[1] हर दम जहान हिलता है
है इस जहानकी आब-ओ-हवा सराबकी[2] तरह
धुवाँ है जो नज़र आता है मौजे-आबकी[3] तरह
ज़मीं पै ख़ाक फ़लकपर धुवाँ, ख़ुशी कैसी
हज़ूर होशमें आयें ये बेहुशी कैसी
अगरचे एक घड़ी भी बुरी फ़िराक़की है[4]
मगर करे कोई क्या बात इत्तफ़ाक़की है
इस इत्तफ़ाक़की आमदमें रोक थाम नहीं
गुज़रती एक तरह पर है सुब्ह-ओ-शाम नहीं
जब आके टुकड़े सियह[5] बादलोंके छाते हैं
तो आसमानपर अन्धेर एक मचाते हैं
तहस-नहस है सितारोंका ग़ोल हो जाता
है दममें जलवये-ख़ुरशीद-ओ-माह[6] खो जाता
मगर घड़ीमें जो देखो तो आसमाँ है वही
वही सितारोंकी है रोशनी समाँ है वही
ग़रज़ कि यूँ ही बलाओंका आना जाना है
इस इत्तफ़ाक़के हाथोंमें आब-ओ-दाना है
बशरको चाहिये वो सब्र और शकेब[7] करे
उमीदका न मुसीबतमें खाली जेब करे

[1]आशा निराशा [2]मृगतृष्णा [3]पानीकी लहर [4]वियोग
[5]काले [6]सूर्य और चाँद [7]ढाढ़स

ख़ुदा वो है जिसे सब कारसाज़ कहते हैं
ग़रीब परवर-ओ-बन्दानवाज़ कहते हैं
हुज़ूर दरसे कभी उसके नाउमीद न हों
बहुत न रोइए आँखें कभी सफ़ेद न हों
नहीं है फ़ायदा इस वक़्त रंज करनेसे
ज़ियादा होगी जलन ठंडी आह भरनेसे
पए-सुराग़[१] मैं निकलूँगा सुब्ह दम घरसे
तलाशे-दिलमें उठेगा मेरा क़दम घरसे
ख़ुदाने चाहा तो इसका पता लगाऊँगा
जहाँपै होगा मेरा दिल वहीं मैं जाऊँगा

(१४)

दिखाया अक़्लने ग़ुर्रा[२] जो ज़ोरे-बाज़ूका
तो संग[३] मोम हुआ रंजकी तराज़ूका
सँभल-सँभलके हर एक शख़्सको क़रार हुआ
ठहर-ठहरके शिकस्त आँसुओंका तार हुआ
उठाया रूहने भी हाथ आह्-ओ-ज़ारीसे[४]
जिगरको थामके की बात बुर्दबारीसे[५]
मेरे वज़ीर तेरे दमसे शादमानी[६] है
हरी ज़मींपै तू एक नूरे-आसमानी है
पहुँचती ग़ैबसे[७] हर वक़्त है मदद तुझको
दिखाई देता है दुनियाका नेक-ओ-बद तुझको

[१]पता लगानेके लिए [२]अभिमान [३]पत्थर [४]आहें खींचना और रुदन करना बन्द कर दिया [५]गंभीरतासे [६]ख़ुशी [७]दैवी रूपसे, गुप्त रूपसे

तुझीसे आदमी चलता है नेक राहोंपर
जो तू रहे न तो पर्दा पड़े निगाहोंपर
है रहबरी[1] तेरी मुश्किलगुज़ार रस्तोंमें
तुझीसे जान पड़ी है वफ़ा परस्तोंमें
तेरे ही दमसे हवा सुलह-कुल[2] की चलती है
तुझीसे शमए-मुहब्बत दिलोंमें जलती है
तेरे ही हुस्ने-अमलसे है इत्तफ़ाक़ यहाँ
बिगड़के देख ले पड़ता है क्या निफ़ाक़[3] यहाँ
हवास-ओ-होश न ठहरे जो तू न ठहराये
हवासे-ख़म्साका[4] चेहरा अभी उतर जाये
घरोंमें आयें नज़र आदमी बहायमसे[5]
सियाह नामए-आमाल हो जरायमसे[6]
वफ़ाशआर सुबुकरूह बातमीज़[7] है तू
अजायबाते-ख़ुदा[8] है मुहिब्ब[9] चीज़ है तू
अजीब चीज़ है तू बख़्शिशे-इलाहीसे[10]
ख़ुदा दे अक़्ल तो बढ़कर है बादशाहीसे
अलम[11] बलन्द तू रखता है ख़ैरख़्वाहीका
वफ़ापरस्त तू नौकर है बादशाहीका
दरे-बलन्दसे रुत्बा बलन्द पाया है
तमाम शह्रका अफ़सर तुझे बनाया है
सँभाली तूने हकूमत है होशियारीसे
हुआ है तख़्तका सरताज हक़गुज़ारीसे[12]

[1]पथप्रदर्शन [2]शान्ति [3]फूट [4]पाँचों इंद्रियां [5]भूत-प्रेतोंसे [6]अपराधों [7]तमीज़दार, शिष्ट [8]ईश्वरीय चमत्कार [9]प्यारा ईश्वरीय देन [10]ध्वज [11]रंज [12]सच्चा राज्य करनेसे

जो तू न हो तो तबाहीमें कुछ कलाम[१] नहीं
तू ख़ैरख़्वाहे-हक़ीक़ी है कुछ ग़ुलाम नहीं
मेरी निगाहोंमें तारीक[२] सब ख़ुदाई है
जिगरकी चोट है, फ़रज़न्दकी जुदाई है
जिगर है चाक कलेजा है पाश पाश[३] मेरा
किया है दिलकी जुदाईने राज़ फ़ाश[४] मेरा
बजा न होश, ठिकाने न है तमीज़ मेरी
नज़रके सामनेसे घूमती है चीज़ मेरी
गया वो जबसे मुझे एक दम क़रार नहीं
उजाड़ घर है चमनमें मेरे बहार नहीं
मेरे अज़ीज़की आरामगाह[५] सूनी है
ज़ियादा इससे कोई बख़्तकी ज़बूनी[६] है
मैं क्या कहूँ कि मेरे दिल पै क्या गुज़रती है
मेरी उमीदकी खेतीको यास[७] चरती है
क़लक़ नहीं मुझे उसका निशाँ न पानेका
दयारे-ग़ैरमें[८] डर है सताये जानेका
कड़ी मुसीबतें झेलेगा सख़्त राहोंमें
समा न जाय कहीं वो बुरी निगाहोंमें
मुसीबतोंका है उड़ता ग़ुबार ग़ुरबतमें[९]
नहीं है घरकी तरहसे बहार ग़ुरबतमें
गली-गलीमें ख़तर रहज़नोंसे[१०] जाँका है
चमन-चमन है बयाबाँ[११] कि डर ख़िज़ाँका है

[१]कसर [२]अँधेरी [३]टुकड़े टुकड़े [४]भेद प्रकट किया [५]आरामकी जगह [६]ख़राबी [७]निराशा [८]ग़ैरकी बस्ती [९]ग़रीबी [१०]चोरों, डाकुओं [११]जंगल

वो लोग हैं जो बहुत कुछ ज़माना देखे हुए
तरह-तरह कशिशे-आब-ओ-दाना देखे हुए
सफ़रके नामसे कानों पै हाथ धरते हैं
कशाकशे-सह्र-वो-शामसे बिखरते हैं
हज़ार हैफ़[1] मेरा दिलने साथ छोड़ा है
निकलके दूर मुहब्बतका तार तोड़ा है
मुझे तो अब किसी सूरत यहाँ क़रार नहीं
मैं क्या करूँ मेरा जाँदादए-बहार[2] नहीं
पता तू दिलका लगाके क़रार दे मुझको
नसीमे-वक़्त-नवेदे-बहार[3] दे मुझको

(१५)

ये कहके रूह जो चुप हो गई तो अक़्ल उठा
महलसे रूहके अपने मकानपर आया
नशिस्तगाहमें[4] अपनी वो आके बैठ गया
हर एकको पाससे अपने उठाके बैठ गया
हज़ार फ़िक्रसे बैठा नशिस्तगाहमें था
कि सुब्ह दम उसे चलना सफ़रकी राहमें था
गई जो रात ज़ियादा वो आके लेट रहा
महलमें बिस्तरे-राहत पै जाके लेट रहा
रहा वो ख़्वाबमें लेकिन न उसको नींद आई
हज़ार शक्लसे दहशत[5] भरी उमीद आई
तफ़क्कुरातसे[6] पिछले पहरको घबराया
सफ़रसे पेश्तर अन्देशए-सफ़र[7] आया

[1] अफ़सोस [2] बहारका प्रेमी, बहारपर जान देनेवाला [3] बसन्तका निमन्त्रण [4] बैठक [5] भयभीत [6] चिन्ताओं [7] यात्राकी आशंका

अलस्सबाह उठा ख़्वाबगाहसे अपनी
ख़ुदाका नाम लिया सच्ची चाहसे अपनी
जो नश्शे जज़्ब हुए सरमें हक़गुज़ारीके
तो उसके मुँहसे झड़े फूल हम्दे-बारीके[१]

(१६)

तू ए ख़ुदा कस-ओ-नाकसका[२] पालनेवाला
सरोंसे आई बलाओंका टालनेवाला
खुला न हाल तेरा वो बड़ा सबब है तू
घटा न वक़्त तेरा ऐसा रोज़-ओ-शब है तू
अगरचे वहम-ओ-गुमाँने[३] किया ख़याल बहुत
तेरे लिये हुई हर चन्द क़ील-ओ-क़ाल[४] बहुत
कोई भी तेरी हक़ीक़त बयान कर न सका
न कर सका शरहे-दास्तान[५] कर न सका
मगर जिन्होंने तेरा फ़ैज़[६] कुछ उठाया है
वो जानते हैं कि तूने ही सब बनाया है
तेरी ही ज़ातसे है सबका सब जहाँ क़ायम
तुझीसे हैं ये ज़मीन और आसमाँ क़ायम
चमकसे तेरी ही सारा जहाँ उजाला है
डपटसे तेरी ही दुनियामें बोलबाला है
तेरे ही जल्वेके सब तारे आसमानमें हैं
तेरे ही रंगकी नैरंगियाँ[७] जहानमें हैं

[१] ईश्वर प्रार्थना [२] बड़ों छोटों, प्राणीमात्र [३] विचार, कल्पना [४] वादविवाद, बहस तकरार [५] कहानीकी टीका, व्याख्या [६] तुझसे लाभ उठाया है [७] तिलिस्म जादू, तमाशे

हवाके दोश पै[1] उड़ते परिन्द जितने हैं
ज़मींकी गोदमें मरदम चरिन्द[2] जितने हैं
पड़े हैं अमन-ओ-अमाँ[3] से तेरी पनाहमें सब
उछलते कूदते जाते हैं तेरी राहमें सब
ये आसमान कि ख़ुरशीद-ओ-माह हैं जिसपर
ये सरज़मीन गदा[4] और शाह हैं जिसपर
ये आफ़ताब कि दिनमें है रोशनी जिसकी
ये माह रातको बिछती है चाँदनी जिसकी
ये आदमी जो बना एक मुश्ते-ख़ाकसे[5] है
मदाम[6] खलबली जिसको उमीद-ओ-बाकसे[7] है
जो झाड़ता है गरेबाँ[8] वो नाउमीदीसे
नहीं समाता जो जामेमें ख़ुशनवेदीसे[9]
नहीं समझता इबारत जो सरनविश्तोंकी
अगरचे आँख झपक जाती है फ़रिश्तोंकी
शऊर-ओ-अक़्लसे[10] जिसका दिमाग़ रोशन है
तमाम ख़ल्क़में जिसका चराग़ रोशन है
है जिसके हाथमें दुनियाका इन्तज़ाम तमाम
बशर न हो तो अभी हो जहाँका काम तमाम
चराग़ गुल अभी हो जाय सारी बस्तीका
रहे न ग़ुलग़ुला[11] बाक़ी ख़ुदारपस्तीका[12]
बशरका कोई जहाँमें नहीं मुक़ाबिल है
अगर्चे तंगिए-सीनासे[13] ज़ीक़में[14] दिल है

[1]कंधे [2]हिंसक पशु [3]शान्ति [4]भिखारी [5]मुश्त=मुट्ठी, ख़ाक=मिट्टी, मुट्ठी भर मिट्टी [6]सदा, हर समय [7]आशा, निराशा [8]कुरतेका गला [9]सुख सम्वाद सुनकर [10]चेतना और बुद्धि [11]धूम-धाम [12]ईश्वरोपासना [13]छाती [14]परेशानी, उलझन

नसीब-ओ-बख़्त न इसका अगर कमी करता
तो फिर जहानमें क्या कुछ न आदमी करता
हर एक तरहका जज़्बा है इसके सीनेमें
ये मौज मारता है उम्रके सफ़ीनेमें[१]
उठाये बोझ है सरपर तमाम हस्तीका
बलन्द गुलगुला है आशनापरस्तीका[२]
है एकको एकसे मतलब जहाने-फ़ानीमें[३]
इसीसे लुत्फ़ है दो दिनकी ज़िन्दगानीमें
ये मुख़्तसरसा[४] करिश्मा है सारी दुनियाका
अजीब चीज़ है प्यारा है प्यारी दुनियाका
बशर नहीं है तो सारा जहान सूना है
सो वो भी तेरी ही क़ुदरतका एक नमूना है
बजुज़[५] बशरके भी जो है जहानमें पैदा
ज़मीं, ज़मानामें और आसमानमें पैदा
हर एक चीज़ तुझीसे हुई वजूद-पज़ीर[६]
तेरी ही ज़ातसे सब कुछ है ऐ ख़ुदाए-क़दीर[७]
रवाँ हैं तेरी ही लहरें जहानेफ़ानीमें
तू ही है मौजज़न[८] इस एक बूँद पानीमें
हर एक शैसे है इज़हार तेरी क़ुदरतका
है आफ़ताब[९] नमूदार[१०] तेरी क़ुदरतका
फ़क़त न बख़्त है ख़ुरशीद-ओ-माह[११]का रोशन
है ज़र्रा-ज़र्रा तेरी जलवागाहका[१२] रोशन

[१]नौका [२]परिचितोंकी पूजा [३]मृत्युलोक [४]संक्षिप्त
[५]सिवाय [६]पैदा हुई [७]क़ुदरत रखनेवाला, सर्वशक्तिमान
[८]हिलोरें लेता [९]सूर्य [१०]प्रकट [११]सूर्य और चाँद
[१२]दर्शन स्थान

है तेरे नूर पै ख़ुद रोशनी गवाह तेरी
वो चश्मकोर है पाती नहीं जो राह तेरी
मेरी तो आँख खुली है तेरी हक़ीक़तसे
नहीं-नहीं मुझे इन्कार तेरी क़ुदरतसे
अगर तू चाहे तो ग़ारत अभी जहाँ कर दे
ज़मींको चाहे तो बालाये आसमाँ[1] कर दे
टपक-टपकके हर एक क़तरा बह्रे-आब बने
चमक-चमकके हर एक ज़र्रा आफ़ताब बने
ग़ज़बकी धूल चढ़े और कुछ पता न मिले
कहीं ज़मीं-वो-ज़मानेमें रास्ता न मिले
उड़े वो ख़ाक कि नक़्श-ओ-निगार[2] खो जायें
ज़मींके हाल पै सात आसमान रो जायें
ग़रज़ अयाँ-ओ-निहाँ[3] सब तेरी सफ़ातमें[4] हैं
ग़ज़ब व लुत्फ़[5] ख़ुदावन्द तेरी ज़ातमें हैं
तमाम ख़ल्क़की रौनक़ बहार तू ही है
जो कुछ भी है मेरे परवरदिगार[6] तू ही है
तेरे ही दमका भरोसा है जानदारोंको
सँभालता है तेरा लुत्फ़ बेक़रारोंको
उमीदगाह है तू ही तमाम जानोंकी
तू ही ज़मीन है इन सात आसमानोंकी
हर एकको नाज़ है बन्दानवाज़ियोंपै तेरी
गवाह ख़ल्क़ है सब कारसाज़ियोंपै तेरी

[1] आकाशसे ऊँचा [2] नक़्श और चित्र [3] प्रकट और गुप्त
[4] गुणों [5] कृपा [6] पालनहार

मुसीबतोंमें दिलोंको टटोलता है तू
गिरहको नाख़ुने-हिकमतसे[१] खोलता है तू
जब आके आफ़तें अपना असर दिखाती हैं
बुरी बलाओंकी काली घटाएँ छाती हैं
हवायें चलती हैं हर सम्तसे ख़राबीकी
जिगरपै बैठती है गर्द इज़्तराबीकी[२]
हवाए-ग़मसे परेशाँ दिमाग़ होता है
नहीं है सूझता कुछ गुल चराग़ होता है
नज़रके सामने छा जाता है अँधेरासा
मकाने-ऐश है बन जाता एक घेरासा
तड़प-तड़पके जुदा बन्द-बन्द होता है
जिगरकी चोटसे दिल दर्दमन्द होता है
पुकारते हैं मददके लिये हज़ारोंको
मगर कोई भी तो सुनता नहीं पुकारोंको
अज़ीज़-ओ-ख़्वेश[३] हर एक अपना मुँह छिपाता है
ये सच है कौन मुसीबतमें काम आता है
हजूमे-याससे[४] खाते हैं पेच-ओ-ताब बहुत
बशरको करती है बेचारगी ख़राब बहुत
तो खोल देता है परचम तू मेहरबानीका
चराग़ गुल नहीं होता है ज़िन्दगानीका
है क्या अजब तेरी बख़्शिशसे शादकाम[५] हूँ मैं
कि बारगाहे-करीमीका[६] एक ग़ुलाम हूँ मैं

[१] विद्वताके नाख़ून [२] व्याकुलता [३] सगे सम्बन्धी
[४] निराशाकी भीड़ [५] प्रसन्न, फलीभूत [६] दयालु ईश्वरके दरबार

रगोंमें ख़ून भरा है तेरी मुहब्बतका
कि है तू पालनेवाला तमाम ख़िलक़तका[1]
सलामती है हमेशा तेरी सलामीमें
कटी है उम्र अभी तक तो नेकनामीमें
तेरे करमसे न अब तक कोई ज़वाल[2] आया
कटे न दिन कभी ऐसा न माह्-ओ-साल आया
मगर ये वक़्त पड़ा सख़्त आज़माइशका
बहुत है डर मुझे कमबख़्त आज़माइशका
कहीं किसीको ज़रा एक दम क़रार नहीं
उमीदपर भी किसीको अब एतबार नहीं
सरश्के-ग़म है रवाँ सारी बादशाहीमें
मदद कर अब कि है कश्ती पड़ी तबाहीमें
पड़ा है वक़्त कठिन जो वो आशकारा[3] है
तेरे करमके सिवा और क्या सहारा है
तेरे करमकी हमेशा उमीद रखता हूँ
जो सोये गोदमें तेरी वो नींद रखता हूँ
मदद कर अब तो मेरी जिससे कामयाबी हो
सफ़रकी राहमें बरपा न कुछ ख़राबी हो
मेरी मुरादपै पहुँचा मुझे सलामतसे[4]
बचाइयो मेरे परवरदिगार आफ़तसे

(१७)

निकलके चर्ख़पै रोशन जब आफ़ताब हुआ
सहरके हाथमें जब वक़्तका हिसाब हुआ

[1] प्राणीमात्र [2] पतन [3] प्रकट [4] सलामतीसे

सबाने[1] आके वरक़ कार-ओ-बारका उलटा
नसीबे-ख़ुफ़्ताने[2] दफ़्तर ख़ुमारका[3] उलटा
हर एक हाथमें गुज़रा हयातका[4] पर्चा
उठो-उठोका हर एक सम्त हो गया चर्चा
गिरी सुनहरी किरन हर तरफ़ ज़मानेमें
उजाला हो गया क़ुदरतके कारख़ानेमें
ज़माना किरनोंकी जगमगसे ग़र्क़े-नूर[5] हुआ
हुआ उजाला तो ज़ाहिर क़रीब-ओ-दूर हुआ
ज़मींपै नक़्श[6] हुआ हर्फ़-हर्फ़ हस्तीका
ख़ुबा[7] निगाहोंमें आलम बलन्द-ओ-पस्तीका
ख़याले-रिज़क़से[8] हलचल पड़ी दिमाग़ोंमें
नसीमे-फ़िक्र[9] चली ज़िन्दगीके बाग़ोंमें
पड़ी शुआओंके[10] पड़नेसे जान ज़र्रोंमें
लगे परिन्द[11] उभरने हवाके भर्रोंमें
बशरके दिलमें तर-ओ-ताज़गी से जोश हुआ
गुज़ारा वक़्त जो ग़फ़लतमें इसका होश हुआ
ज़बाने-पाकसे तब अक़्ल इल्तजा[12] करके
नशिस्तगाहसे उट्ठा ख़ुदा-ख़ुदा करके

(१८)

और आके दरपै सदा यूँ हवास-ओ-होशको दी
उठो-उठो करो तैयारीये-सफ़र जल्दी
उठो और उठके करो इन्तज़ाम चलनेका
न आये ताकि कभी वक़्त हाथ मलनेका

[1] पवन [2] सोये भाग्य [3] नशा [4] ज़िन्दगी [5] प्रकाश, ज़्योतिमें डूब गया [6] अंकित [7] समा गया [8] जीविकाके विचार [9] चिन्ताकी हवा [10] किरनों [11] पक्षी [12] प्रार्थना

ज़रासी देरमें दिन भर ख़राब होता है
करो ख़याल तपाँ[1] आफ़ताब होता है
दरंग[2] सुब्हसे होती है शाम रस्तोंमें
तपिश जो होगी तो होगा मुक़ाम रस्तोंमें
सहरका कूच सफ़रके लिये मुबारक[3] है
ये वक़्त आठ पहरके लिये मुबारक है
हर एक चीज़ मुहय्या करो सफ़रके लिये
जो कुछ कि हो तुम्हें करना करो सफ़रके लिये
सवेरे चल दो कि चलना दराज़[4] रस्ता है
दयारे-ग़ैरका[5] सीना गुदाज़[6] रस्ता है
ख़बर दो जाके अभी फ़ौजे-बादशाहीमें
दुरुस्त होके सब आ जायँ क़स्रेशाहीमें[7]
हमारे शह्‌के ख़िदमतगुज़ार जितने हैं
बजान शेफ़्तए-शह्‌यार[8] जितने हैं
जिन्होंने उम्र गुज़ारी है ख़ैरख़्वाहीमें
न जिनकी वजहसे बेड़ा पड़ा तबाहीमें
है रज़्म-ओ-बज़्मका[9] जिनपर मदाम दार-ओ-मदार[10]
जो हैं फ़राज़-ओ-नशेबे-जहाँसे[11] वाक़िफ़कार
कहो हज़ूरमें तैयार होके हाज़िर हों
ज़रा न हुक्म बजा आवरीमें क़ासिर[12] हो
ये कहके अक़्ल समाया लिबास ख़ानेमें
और उसके हुक्मने बाँधी हवा ज़मानेमें

[1]गर्म, तपता [2]देर [3]शुभ [4]लम्बा [5]पराई बस्ती [6]छाती पिघलानेवाला [7]राजभवन [8]संसारके बादशाह पर जान देनेवाले [9]युद्ध और राग रंग [10]हर समय निर्भर [11]ऊँच-नीच [12]असमर्थ

(१९)

हवास-ओ-होश जो उसके बड़े थे कारगुज़ार
बड़े दिलेर, बड़े कारकुन[१] बड़े हुशियार
ये हुक्म सुनके ख़बरदार हो गये दोनों
कमरको बाँधके तैयार हो गये दोनों
उड़े हवासे भी वो तेज़तर ख़यालकी तरह
फिरे घड़ीकी तरह वो न माह-ओ-सालकी तरह
मिसाले-निर्द[२] समाये घरोंमें जा-जाके
दिलोंमें पड़ गई हलचलसी सब रिआयाके
हर एकका दश्ते-कशाकशमें[३] आब-ओ-दाना[४] हुआ
हर एक जानिब क़स्रे-शही[५] रवाना हुआ
तमाम जमा हुए आस्ताने-मल्कापर[६]
सब आ गये दरे-जन्नत-निशान मल्कापर
दुरुस्त बहरे-सफ़र जब तमाम काम हुए
पराजमाके[७] खड़े सफ़-ब-सफ़[८] गुलाम हुए
लिबासख़ानामें तब अक़्ल ज़र्क़-बर्क़ हुआ
वो चाक़-ओ-चुस्त वहाँ पासे ता-ब-फ़र्क़[९] हुआ
फिर एक समन्दपै[१०] जो था सुबुक ख़राम[११] बहुत
बहुत सुडौल, बहुत शोख़, तेज़गाम[१२] बहुत
हिरनकी तरहसे जिसका क़दम उभरता था
घड़ीमें सैकड़ों फ़रसंगसे[१३] गुज़रता था

[१]कार्यकर्ता [२]निर्द या नर्द चौसरकी गोटको कहते हैं [३]खींचातानीके जंगल [४]दाना पानी [५]राजमहल [६]मलिकाके महल [७]भीड़ लगाकर [८]पंक्तिबद्ध हो [९]पाँवसे सिरतक [१०]घोड़ा [११]सुबक चाल, हलकी चाल चलनेवाला [१२]तेज़ चलनेवाला [१३]मील

हुआ सवार बड़े कर्र-ओ-फ़र्रके[१] साथ चला
नसीब ठोंकके फ़तह-ओ-ज़फ़रके[२] साथ चला
समन्द तेज़ हुआ उसका सूरते-सरसर
पहुँच गया वो दरे-क़स्रे बादशाहीपर
जब आया अक़्ल तो सब बख़्तके ग़ुलाम उठे
सरे-अदबको झुकाये पए-सलाम उठे
वहाँ जो अक़्लने हाज़िर हर एकको पाया
उतरके ज़ीनसे नीचे ज़मीनपर आया
हवास-ओ-होशसे इस तरह हमकलाम[३] हुआ
बताओ कारगुज़ारी सब इन्तज़ाम हुआ ?
दिया जवाब उन्होंने कि ठीक-ठाक है सब
हरएक पाँवको चल देनेको ही ताक है अब
कहा ये अक़्लने दरबारमें चलो बैठो
हर एक अंजुमने-कारमें[४] चलो बैठो
ये सुनते ही गये दरबारमें सग़ीर-ओ-कबीर[५]
जगह-जगहपै हर एक जाके हो गया जागीर[६]
तब आया अक़्ल दरे-ख़्वाब-गाहे-शाहीपर
पड़ी थी नींद जहाँ बिस्तरे-तबाहीपर

(२०)

वहाँकी सुब्ह उदासीमें मिस्ले-शामके थी
पड़ी ख़राबी वहाँ साथ इन्तज़ामके थी
बहार सुब्हकी खुबती न थी निगाहोंमें
शुआएँ[७] आग लगाती थीं और आहोंमें

[१]शानशौकत ठाठबाट [२]विजय [३]वार्तालाप करने लगा [४]कामकी महफ़िल, कार्यकी सभा [५]छोटे बड़े [६]जमकर, जगह लेकर [७]किरनें

उजाड़ घरसे भी बदतर वहाँकी रौनक़ थी
वही रहा नहीं जिससे मकाँकी रौनक़ थी
पड़ी थी रूह वहाँ सोगवार[१] बिस्तरपर
फ़िराक़े-दिलसे[२] थी वो बेक़रार बिस्तरपर
गुज़र गये थे कई रोज़ आह-ओ-ज़ारीमें[३]
था आबदाना पड़ा मौजे-अश्कबारीमें[४]
जिगर था दिलकी जुदाईसे दर्दमन्द उसका
बिलकके रोती थी नाला न था बलन्द उसका
वो नूरचश्म जो माँकी नज़रका तारा हो
न जब रहे तो कहो किस तरह गुज़ारा हो
ग़रज़ कि रूहको सुध-बुध न सुब्ह-ओ-शामकी थी
दिन और रात लगी रट पिसरके[५] नामकी थी
तबाह हाल वहाँ इसने रूहको पाया
अदबके साथ अकेला महलमें अक़्ल आया
अदबसे खोली फिर उसने ज़बाने-गोयाई[६]
सहर हुई, हुआ वक़्ते-सरीर आराई[७]
पड़ी है खलबली क़ुदरतके कारख़ानेमें
उठें हज़ूर कि सब उठ गये ज़मानेमें
ये सुनके रूह उठी बिस्तरे-मुसीबतसे
और आई बज़्ममें[८] शाहाना शान-ओ-शौकतसे
सँभलके कुर्सिये-ज़र्रींपै आके बैठ गई
तमाम बज़्मकी इज़्ज़त बचाके बैठ गई

[१]शोकाकुल [२]दिलके वियोग [३]रोने धोने [४]आँसूकी वर्षाकी लहरमें [५]पुत्र [६]बोलनेके लिये ज़बान [७]सिंहासनारूढ़ [८]सभा

वज़ीरे-अक़्ल फिर उट्ठा मियाने-जम्मे-ग़फ़ीर[1]
और अह्ले-बज़्मसे यूँ वा किया लबे-तक़रीर[2]
नमकहलाल ग़ुलामो दयारे-शाहीके
तुम्हारे हाथमें सब कार-ओ-बार शाहीके
जहाँपनाहके तुम सब हो ख़ैर-ख़्वाहोंमें
जगह मिली है ये सोचो तो किन निगाहोंमें
ज़हे-नसीब[3] कि तुम ख़ैरख़्वाहे-मलका हो
शरीफ़े-शह्र शराफ़त पनाहे-मलका[4] हो
हमें जो रंज है दुश्मनको भी नसीब न हो
ख़ुदा करे मेरे दिलका कोई रक़ीब[5] न हो
दिल-ओ-जिगरपै हर एकके क़लक़[6] गुज़रता है
पै क्या करें कि ये सब इत्तफ़ाक़ करता है
अबस[7] है गिरया-ओ-ज़ारी अबस है आह-ओ-बुका
कोई मिटा नहीं सकता लिखा नसीबोंका
हवाए-ग़मसे न बरबाद अपना रँग करो
बहुत उमीदमें वुसअत[8] है दिल न तंग करो
यहाँके कामसे ग़ाफ़िल कभी न होना तुम
न भूलकर कभी ग़फ़लतकी नींद सोना तुम
न आये अबतरी कोई बदइन्तज़ामी से
न होने पाये कोई मुनहरिफ़[9] ग़ुलामीसे
पलटके आऊँ न जबतक दयारेशाहीमें
रहो रईयत-ओ-मलकाकी[10] ख़ैरख़्वाहीमें

[1] भारी भीड़के बीच [2] सभामें एकत्रित लोगोंसे बात करनेको मुँह खोला [3] अहोभाग्य [4] रानी, मलकाके नगरके सज्जन नागरिक [5] प्रतिद्विन्द्वी [6] व्यथा [7] व्यर्थ [8] फैलाव, उदारता [9] ग़ुलामीसे इनकार न करे [10] प्रजा और रानी

ये कहके अक्लने तक़रीर ख़त्मकी अपनी
उठी जो बज़्म तो हर एकने राह ली अपनी

(२२)

सुना चुके तुम्हें हम कैफ़ियत ज़मानेकी
अब आओ सैर कर आयें निगारख़ानेकी
बहुत वसीअ था मैदाँ निगारख़ानेका
दरअस्ल एक नमूना था वो ज़मानेका
कहीं चमन था दहकता लपटसे फूलोंकी
कहीं था बाग़ दिखाता बहार झूलोंकी
बिछा था फ़र्श कहीं सब्ज़-सब्ज़ घासोंका
जहाँ मिज़ाज बदल जाता था उदासोंका
कहीं-कहीं नज़र आता था झुंड केलोंका
लिए हों जैसे सिपाही हरा-हरा झंडा
बड़े-बड़े वो शजर[1] पीपल और बरगदके
खड़े थे दश्तमें गोया कि शर्त बद-बदके
थे ऊँचे-ऊँचे बहुतसे दरख़्त ताड़ोंके
खड़े थे ऐसे कि टीले हों कुछ पहाड़ोंके
कहीं-कहीं थी शफ़ाबख़्श[2] छाँव नीमोंकी
जहाँ न होती थी हाजत कभी हकीमोंकी
घना था पत्तोंसे हर एक सायादार दरख़्त
लदा फलोंसे था हर एक बारदार[3] दरख़्त
कहीं थीं नहरें, कहीं पोखरे, कहीं तालाब
थे पौदे जिनसे कि सरसब्ज़ और ज़मीं शादाब[4]

---

[1]पेड [2]स्वास्थ्यप्रद [3]फलदार [4]तर

किसी मुक़ामपै मुश्किल गुज़ार जंगल था
कहीं घना था कहीं ख़ारदार[1] जंगल था
फ़लकनुमा थे हज़ारों दरख़्त साखूके
कुलाँचते थे जहाँ आके झुंड आहू[2] के
जमे हुए था वहाँ जा-बजा बबूल बहुत
बिखर गये थे जहाँ गिरके ज़र्द फूल बहुत
ज़मीन सब्ज़ीसे हर सू हरी थी जंगलकी
चमनसे कम नहीं कुछ सीनरी थी जंगलकी
तरह-तरहके थे वाँ तायराने-ख़ुश अलहान[3]
चहक-चहकके जो दिखाते थे जो ख़ुदाकी शान
थे सब्ज़ तोते कहीं जिनके सुर्ख़-सुर्ख़ थे ढोर
दिखाते कौवे कहीं अपने इत्तफ़ाक़[4] का ज़ोर
कहीं दरख़्तोंसे उठदेख[5] कुछ दिखाती थी
कहीं पपीहेकी आवाज़ दिल हिलाती थी
कहींसे आती थी पुरदर्द कूक कोयलकी
जिगर पकड़के सुने मर्द कूक कोयलकी
बइश्क़े-माह[6] कहीं आग फाँकता था चकोर
घटाको देखके जंगलमें नाचता था मोर
अजब बहार दिखाता था पुरफ़िज़ा-मैदाँ
रहे न देखके जिसको बहिश्तका अरमाँ
हर एक सिम्त अयाँ था करिश्मा क़ुदरतका
हर एक शैसे टपकता था हुस्न फ़ितरतका[7]

[1]कँटीला [2]हिरन [3]मधुर बोलियाँ बोलनेवाले पक्षी [4]एकता [5]एक चिड़िया [6]चाँदके प्रेममें [7]प्रकृतिके सौन्दर्य

(२३)

लगा था दश्तमें नैरंगशाहका इजलास
किसीको लगती थी दहशतसे इसकी भूक न प्यास
मुक़द्दमे थे वहाँ पेश अश्कबाज़ोंके
हज़ूरेशाहमें दफ़्तर खुले थे राज़ोंके
हर एक शख़्सकी रूदाद[१] शाह सुनता था
हर एक के लिए वाजिब सज़ा वो चुनता था
हर एक घड़ी वाँ ताज़ा शगूफ़ा[२] खिलता था
नतीजा फ़ेलका[३] अपने हर एकको मिलता था

(२४)

निगारख़ानेकी अब ख़त्म सब बहार हुई
हज़ूरे शाह दिले-ज़ारकी[४] पुकार हुई
अख़ीर हुक्म सुनानेको फिर अजल[५] आई
सज़ाए-मौत दिले-नामुरादने पाई
वज़ीरे अक़्ल इसी दरमियाँमें आ पहुँचा
वो दिलको बाग़-ओ-बयाबाँमें ढूँढ़ता पहुँचा
ये हाल देखके वो बह्रे-ग़ममें[६] डूब गया
और उसके साथ ही 'इबरत'का भी पता न मिला

[१]हाल, विवरण [२]नई घटना घटती थी [३]कार्य [४]बेचारे दिलकी [५]मृत्यु [६]दुख-सागर

गोरे-ग़रीबाँ

अल्लामा तबातबाई

अलीगढ़में जिन लोगोंने अंजुमन तरक़्क़ी उर्दूकी नींव डाली उन्होंने शायरोंको दूसरी क़िस्मकी नज़्मोंकी तरफ़ मुतवज्जह करनेके लिए यह एक प्रशंसनीय सुझाव पेश किया कि अंग्रेज़ी नज़्मोंका अनुवाद करके उर्दू भाषाके ग़ज़ल कहनेवालोंके सामने पेश किया जाय और उन सब नज़्मोंमें पहले वह मर्सिया अनूदित करनेके लिए चुना जो इंगलैंडके नामी कवि ग्रे(Gray)ने देहातियोंके क़ब्रिस्तानके ऊपर पढ़ा था। उसका अनुवाद अंजुमने-उर्दूके अनेक मेम्बरोंने किया लेकिन अस्वीकृत कर दिया गया। ग्रेने जो नक़शा खींचा था वह उर्दूमें किसीसे नहीं खिंच सका। अन्तमें मौलवी ग़ुलामुस्सक़लैन बी० ए० मरहूमका अनुवाद गद्यमें छापा गया। उसकी कापियाँ हैदराबादके उर्दूके शुभचिन्तकोंके पास भी भेजी गई जिनमे मौलवी अज़ीज़ मिर्ज़ा साहब मरहूम बी० ए०, जो एक प्रसिद्ध और जोशसे भरे हुए साहित्यकार थे, उसका अनुवाद गद्यमें देखकर बहुत प्रसन्न हुए और यहाँके बहुतेरे शायरोंको वह गद्य देकर नज़्म कर देनेकी फ़र्माइश की। लोगोंने नज़्ममें उन विषयोंको बाँधा लेकिन ग्रेके मुक़ाबिलेमें पूरे न उतरे। आख़िर इस मर्सियाके अनुवादसे सब लोग निराश हो गये, और यह मालूम हुआ कि शेरका शेरमें अनुवाद एक बहुत कठिन काम है। यह ऐसे शख़्स-का काम है जिसे साफ़ निखरी-सुधरी भाषाके नोक-पलकपर[१] अधिकार हो और उसके साथ ही कवितापर भी पूरा-पूरा अधिकार हो। सबकी

[१] नाक और कानकी ख़ूबसूरती बहुधा नख शिखमें शामिल

आँख अल्लामा तबातबाईपर पड़ती थी। उनसे फ़र्माइश की गई और उन्होंने इस फ़र्माइशको बड़ी सुन्दरताके साथ पूरा किया।

मौलवी अज़ीज़ मिर्ज़ा मरहूमने उस अनुवादके परखनेके लिए उर्दूके शुभचिन्तकोंका एक सम्मेलन बुलाया जिसमें उर्दूके अनेक पंडित और अलीगढ़ कालेजके ग्रेजुएट शामिल थे। पहले ग्रेका एक-एक बन्द पढ़ा जाता था, फिर उसका अनुवाद आलोचनाके लिए पेश किया जाता था। सारे अदीब और साहित्य-प्रेमी इस महफ़िलसे सन्तुष्ट होकर उठे। मौलवी अब्दुल हलीम साहब 'शरर' और मि० ज़फ़र अली ख़ाँ बी० ए० दोनों मुल्कके बड़े साहित्यिक भी इस बैठकमें शरीक थे। उन्होंने चाहा कि मासिक 'दिलगुदाज़' और 'दकन रिव्यू'में इसे छापें। मौलाना 'शरर'ने अल्लामा तबातबाईसे इजाज़त लेकर सबसे पहले 'दिलगुदाज़'में ग्रेके जीवनका एक विस्तृत विवरण देकर इस 'फ़िक़रा'के साथ शाया किया कि हम "अल्लामए वाजिबुत्ताज़ीम मौलवी अली हैदर साहब तबातबाईका तर्जुमा पब्लिकमें पेश करते हैं।" इस अनुवादके छपनेके बाद बहुत लोगोंने ज़बानी याद किया। कुछ लोगोंने सुन्दर लिखनेवालोंसे लिखवाकर फ्रेममें लगवा दिया। यहाँ तक कि हिन्दुस्तानके एक विद्वानने इंगलैंडके शाही मदरसा "अमेटन कालेज" (ग्रे जहाँका प्रोफ़ेसर था) इस नज़्मको एक सुनहरी फ्रेममें लगा हुआ देखा और उसको इसके बयानके जादूपर निहायत हैरत हुई। उन्होंने इंगलैंडसे रिसाला "असमत" दिल्लीमें इस अनुवादकी बड़ी प्रशंसा की। उनका यह कथन है कि "जिस तरह इंगलैंडवालोंको इस नज़्मपर नाज़ है उसी तरह मौलवी तबातबाईके इस तर्जुमापर ज़बाने-उर्दूको हमेशा नाज़ रहेगा—रऊफ़।"

रऊफ़ साहबके इस कथनको नक़ल करके 'असमत'में इस नज़्मको फिर छापा गया था। इस अनुवादमें तबातबाई साहबने इस दृष्टिकोणका हमेशा ख़याल रखा है कि कविताका रूप (form) कवितापर काफ़ी असर डालता है, उस रूपको उन्होंने अपने अनुवादमें सुरक्षित रखा है और

उर्दूमें स्टैंज़ा (Stanza) लिखनेका चलन इस अनुवादके बादसे शुरू होता है। और अब तो बहुत लोग इस रास्तेपर चल रहे हैं। और लोगोंने जो अनुवाद किये थे किसीने मसनवीको अपनाया और किसीने क़ता वग़ैरः-की सूरतमें ढाला था। उर्दूमें स्टैंज़ा कहनेके अगुआ अल्लामा तबातबाई हुए।

ग्रे ईसाइयोंके कफ़न-दफ़नमें जो रस्में होती हैं उनकी तरफ़ इशारा करता है जो दुआएँ पढ़ी जाती हैं, उनका नाम लेता है। मौलानाने चराग़ाँ, और सन्दल और कलमा शहादत, फ़ातहा और क़ुरानका अनुवाद करके किस क़दर उसमें अपनत्व भर दिया।

ग्रे ख़ाकके नीचे सोनेवालोंको कभी मिल्टन कहता है कभी क्रामवेल। फ़र्क़ यह बताता है कि इनकी प्रसिद्धि नहीं होने पाई और इनके दामनपर हमवतनोंके ख़ून का धब्बा नहीं लगने पाया। मौलानाने इस रूपकको इस तरह उलट दिया है :—

वो फ़िरदौसी ये हैं जिनकी ज़बाँ खुलने नहीं पाई
वो रुस्तम हैं नहीं सोहराबका ख़ूँ जिनकी गर्दनपर

यहाँ अगर मिल्टन और क्रामवेलका नाम लेते तो यह लुत्फ़ न पैदा होता। अक्सर जगह ज़बानकी ख़ूबी और नज़्मकी ख़ुश अस्लूबी (आकर्षक शैली) ग्रेको दाद देनेके लिए पुकार रही है। कहते हैं :—

न ज़ोरे-मरदम आज़ारी न शोरे फ़ितना अंगेज़ी
न की ख़ल्क़े-ख़ुदाके साथ बेरहमी वो ख़ूँरेज़ी

एक बूढ़े किसानकी तक़रीर देखिये :—

वो कुछ कम दिन रहे उसका लबेजूकी तरफ़ जाना
वो उसका मुस्कराना, देखकर शोर आबशारोंमें
तुम्हें पढ़ना तो आता होगा आओ पाससे देखो
ये उसकी क़ब्र है और ये किताबा संगे तुरबतका

बाज़ शेर ऐसे हैं जिनकी तारीफ़के लिए लफ़्ज़ नहीं मिलते :—

दिया दस्ते-तहीके साथ तोनतमें करम यारब
मैं तेरी शानके क़ुर्बान क्या अच्छी तलाफ़ीकी

और इस नज़्मके क़बूल होनेकी बड़ी वजह यही मालूम होती है कि यह तर्जुमा, तर्जुमा नहीं मालूम होता बल्कि उर्दूकी एक निहायत पवित्र नज़्म मालूम होती है फिर भी इसका लुत्फ़ ग्रेकी नज़्मका मुक़ाबला करनेमें ज़्यादातर मिलता है और अंग्रेज़ीके विद्यार्थियोंके लिए इससे अनुवाद करनेका तरीक़ा मालूम होता है। इस वजहसे हमने ग्रेके हर बन्दके नीचे मौलानाए मौसूफ़का बन्द लिखा है।

ELEGY WRITTEN IN A COUNTRY CHURCHYARD

The curfew tolls the knell of parting day,
  The lowing herd winds slowly o'er the lea,
The plowman homeward plods his weary way,
  And leaves the world to darkness and to me.

गोरे ग़रीबाँ

(क़ब्रिस्तान)

विदाए-रोज़े-रोशन है गजर शामे ग़रीबाँका
चरागाहोंसे पलटे क़ाफ़िले वो बेज़बानोंके
क़दम घरकी तरफ़ किस शौक़से उठता है दहक़ाँका[1]
ये वीराना है मैं हूँ और तायर[2] आशियानोंके

2

Now fades the glimmering landscape on the sight,
  And all the air a solemn stillnes holds,
Save where the beetle wheels his droning flight,
  And all the air a solemn stillness holds,

[1]देहातीका [2]पक्षी

अँधेरा छा गया दुनिया नजरसे छिपती जाती है
जिधर देखो उठाकर आँख उधर एक हू[1] का है आलम
मगस[2] लेकिन किसी जा भैरवीं बेवक़्त गाती है
जरस[3] की दूरसे आवाज आती है कभी पैहम[4]

3

Save that, from yonder ivy-mantled tow'r,
The moping owl does to the moon complain,
Of such as, wand'ring near her secret bow'r,
Molest her ancient solitary reign.

कहीं एक गुम्बदे-कुहना पै बूमे-ख़ानुमाँ वीराँ[5]
फ़लकको देखकर शिकवोंका दफ़्तर बाज़[6] करता है
कि दुनियासे अलग एक गोशये-उजलतमें[7] हूँ पिनहाँ[8]
कोई फिर क्यों क़दम इस कुंजे-तनहाईमें धरता है

4

Beneath those rugged elms, that yew-trees shade,
Where heaves the turf in many a mouldring heap,
Each in his narrow cell for ever laid,
The rude forefathers of the hamlet sleep.

क़तार एक सामने है मौलसिरियोंके दरख़्तोंकी
वहाँ क़ब्रें हैं कुछ मिट्टीके जैसे ढेर होते हैं
हर एकने मरके बस दो गज कफ़न गज भर जमीं पाई
बसानेवाले जो इस गाँवके थे सब वो सोते हैं

---

[1]सन्नाटा [2]मक्खी [3]घंटा [4]बार-बार [5]कुहना=पुराना बूम=उल्लू ख़ानुमाँ वीराँ=वीरान घर, घर बर्बाद और उजाड़ करनेवाला उल्लू किसी पुराने गुम्बदपर बैठा हुआ [6]दफ़्तर खोलता है [7]एकान्तके कोनेमें [8]छिपा हुआ

5

The breezy call of incense-breathing Morn,
The swallow twitt'ring from the strawbuilt shed,
The cock's shrill clarion, or the echoing horn,
No more shall rouse them from their lowly bed.

नफ़स बादे-सहरका[1] नालए-पुरदर्द बुलबुलका[2]
हुए बेकार सब इनको उठा सकता नहीं कोई
रही बेफ़ायदा मस्तोंकी हू हक़ शोर क़ुलक़ुलका[3]
हैं ऐसे नींदके माते जगा सकता नहीं कोई

6

For them no more the blazing hearth shall burn,
Or busy housewife ply her evening care;
No children run to lisp their sire's return,
Or climb his knees the envied kiss to share.

न चूल्हे आग है रोशन न अब उनके घड़े पानी
न घरवालोंको अब कुछ काम है फ़िक्रे शबिस्ताँसे[4]
न बीबीको सरे-शाम इन्तज़ार अब है न हैरानी
न बच्चे दौड़ते हैं अब कि लिपटें आके दामाँसे

7

Oft did the harvest to their sickle yield,
Their furrow oft the stubborn glebe has broke ;
How jocund did they drive their team afield !
How bow'd the woods beneath their sturdy stroke !

[1]सुबहकी हवाकी साँस [2]बुलबुलका दर्दसे भरा हुआ रुदन [3]सुराही या किसी पात्रसे शराब ढलनेमें जो आवाज़ होती है [4]सोनेकी जगहकी चिन्ता

वही हैं ये जिन्हें वक़्ते-दरो[1] मुहलत न थी दम भर
वही हैं हाथ चलते रहते ही थे बेश्तर जिनके
वही हैं ये जिन्होंने हल चलाए गीत गा-गाकर
बड़े सरकश दरख़्तोंको गिराते थे तबर जिनके

8

Let not Ambition mock their useful toil,
  Their homely joys, and destiny obscure ;
Nor Grandeur hear with a disdainful smile
  The short and simple annals of the poor.

न देखें हाल उन लोगोंका ज़िल्लतकी निगाहोंसे
भरा है जिनके सरमें ग़ुर्रए नव्वाबी-ओ-ख़ानी[2]
ये उनका कासए-सर कह रहा है कजकुलाहोंसे[3]
अजब नादान हैं जिनको है उज्बे-ताजे-सुल्तानी[4]

9

The boast of heraldry, the pomp of pow'r,
  And all that beauty, all that wealth e'er gave,
Await alike th' inevitable hour,
  The paths of glory lead but to the grave.

नहीं शायान फ़ख़्र-ओ-नाज़ नौबत और नक़्क़ारा
जो नाज़ाँ जाह-ओ-सरवतपर[5] हैं उनपर मौत हँसती है
वो साअत आनेवाली है। नहीं जिससे कोई चारा
कि फ़ानी है जहाँ हर औजका[6] अंजाम पस्ती है

[1]खेती करनेके समय [2]अपनी नवाबी और ख़ानबहादुरीकी शान [3]टेढ़ी टोपी—शान बघारनेवाले [4]ताजका घमंड [5]जो अपनी शान और शौकतपर घमंड करते हैं [6]ऊँचाई

10

Nor you, ye Proud, impute to these the fault,
It Mem'ry o'er their tomb no trophies raise,
Where thro' the long-drawn isle and fretted vault
The pealing anthem swells the note of praise.

नज़र आते नहीं कतबे मज़ारोंपर तो क्या ग़म है
चराग़ाँ और सन्दल और गुल-ओ-रेहाँ न हो तो क्या
नहीं नमगीरा और किमख़्वाबकी चादर तो क्या ग़म है
जो ख़ुश आहंग[1] कोई क़ारिये-क़ुरआँ[2] न हो तो क्या

11

Can storied urn, or animated bust,
Back to its mansion call the fleeting breath ?
Can Honour's voice provoke the silent dust,
Or Flatt'ry sooth the dull cold ear of Death ?

बनाते हूबहू तस्वीर अगर मदफ़न[3] पै रखनेको
पलटकर उससे कुछ निकली हुई साँस आ नहीं सकती
दुआ हो फ़ातहा हो मर्सिया हो आह-ओ-ज़ारी हो
कोई आवाज़ उनके कान तक अब जा नहीं सकती

12

Perhaps in this neglected spot is laid
Some heart once pregnant with celestial fire;
Hands, that the rod of empire might have sway'd,
Or wak'd to extasy the living lyre.

[1]मीठा स्वरवाला [2]क़ुरान पढ़नेवाला [3]क़ब्र

ख़ुदा जाने थे इन लोगोंमें क्या-क्या जौहरे-क़ाबिल
ख़ुदा मालूम रखते होंगे ये ज़ेह्ने-रसा[1] कैसे
ख़ुदा ही को ख़बर है कैसे-कैसे होंगे साहबदिल
ख़ुदा मालूम होंगे बाज़ुए-ज़ोर-आज़मा[2] कैसे

13

But Kowledge to their eyes her ample page
Rich with the spoils of time did ne'er unroll;
Chill Penury repress'd their noble rage,
And froze the genial current of the soul.

ज़मानाने मगर कोई वरक़ ऐसा नहीं उलटा
कि बारे-फ़िक्रसे[3] मुहलत ये पाते सर उठानेकी
मुसीबतने तबीअतकी रवानीको किया पस्पा[4]
कि बार आने न पाई जौहरे ज़ाती दिखानेकी

14

Full many a gem of purest ray serene
The dark unfathom'd caves of ocean bear :
Full many a flower is born to blush unseen,
And waste its sweetness on the desert air.

बहुतसे गौहरे-शहवार[5] बाक़ी रह गये होंगे
कि जिनकी ख़ूबियाँ सब मिट गईं तहमें समुन्दरकी
हज़ारों फूल दश्त-ओ-दरमें ऐसे भी खिले होंगे
कि जिनके मुस्करानेमें थी ख़ुशबू मुश्के-अज़फ़रकी[6]

[1]पहुँचवाले—जिसका दिमाग़ दूर तक पहुँचता हो [2]शक्ति-परीक्षाके लिये उठनेवाले बाज़ू [3]चिन्ताके बोझसे [4]दबा दिया [5]बहुत बड़ा मोती [6]कस्तूरी

15

Some village-Hampden, that, with dauntless breast,
The little Tyrant of his fields withstood,
Some mute inglorious Milton here may rest,
Some Cromwell guiltless of his country's blood.

ये साहब अज़्म[1] हैं गो रज़्म[2] की नौबत नहीं आई
हकूमत अपने क़रियामें की लेकिन दोस्त दुश्मनपर
वो फ़िरदौसी ये हैं जिनकी ज़बाँ खुलने नहीं पाई
वो रुस्तम हैं नहीं सोहराबका ख़ूँ जिनकी गर्दनपर

16

Th' applause of list'ning senates to command,
The threats of pain and ruin to despise,
To scatter plenty o'er a smiling land,
And read their hist'ry in a nation's eyes.

मुक़द्दरने उन्हें मसरूफ़ रक्खा क़ल्बारानीमें[3]
वगरना[4] हुक्मरानीका भी जलवा ये दिखा देते
अजब क्या शोहरए-आफ़ाक़[5] होते ख़ुश बयानीमें
और अपने कारनामे अह्ले-आलमको[6] सुना देते

17

Their lot forbad : nor circumscrib'd alone
Their growing virtues, but their crimes confin'd ;
Forbad to wade thro' slaughter to a throne,
And shut the gates of mercy on mankind,

---

[1]इरादा [2]लड़ाई [3]हल चलाना, खेत जोतना
[4]वरना [5]दुनियामें मशहूर [6]दुनियावालोंको

रहे महरूम नेकीसे बचे हर एक बुराईसे
न ज़ोरे मरदुम आज़ारी[1] न शोरे-फ़ितना-अंगेज़ी[2]
न दौलतकी तमअमें[3] बेगुनाहोंके गले काटे
न की ख़ल्क़े-ख़ुदाके[4] साथ बेरहमी-ओ-ख़ूँरेज़ी[5]

18

The struggling pangs of conscious truth to hide,
To quench the blushes of ingenuous shame,
Or heap the shrine of Luxury and Pride
With incense kindled at the Muse's flame.

न सोहबतमें अमीरोंकी कभी ख़ूने-जिगर खाया
न औटाया लहू अपना कभी झूठी ख़ुशामदसे
न मलकर रोग़ने-क़ाज़ आतिशे-नख़वतको भड़काया[6]
कि जिससे ख़ुदपसन्दोंका तबख़्तर[7] बढ़ चले हदसे

19

Far from the madding crowd's ignoble strife,
Their sober wishes never learn'd to stray;
Along the cool sequester'd vale of life
They kept the noiseless tenor of their way.

अलग हर नेक-ओ-बदसे दूर दुनियाकी मफ़ायदसे[8]
गये बेगानावार[9] और ख़ल्क़में बेगानावार आये
रहे महफ़ूज़[10] अबनाए ज़मानाके मफ़ासदसे[11]
क़दम राहे-तवक्कलसे[12] कभी डिगने नहीं पाये

[1]दूसरोंको दुख पहुँचाना [2]झगड़े खड़े करना [3]लालच [4]जनता [5]ख़ून बहाना [6]रोग़नेक़ाज़=मक्खन लगाना आतिशेनखवत=अभिमानकी आग अर्थात् किसीकी चापलूसी करके दूसरोंके खिलाफ़ ग़ुस्सा पैदा करना [7]अभिमान [8]फ़सादों-झगड़ोंसे [9]बेगानेकी तरह [10]सुरक्षित [11]अबनाए=मफ़ासद दुनियाके लोगोंके झगड़ोंसे [12]सन्तोषकी

20

Yet ev'n these bones from insult to protect
Some frail memorial still erected nigh,
With uncouth rhimes and shameless sculpture deck'd,
Implores the passing tribute of a sigh.

न देख इन अस्तख़्वाँहाए-शिकस्ताको[1] हिक़ारतसे[2]
ये है गोरे-ग़रीबाँ एक नजर हसरतसे करता जा
निकलता है ये मतलब लौहे-तुरबतकी[3] इबारतसे
जो इस रस्ते गुजरता है तो ठंडी साँस भरता जा

21

Their name, their years, spelt by th' unletter'd Muse,
The place of fame and elegy supply :
And many a holy text around she strews,
That teach the rustic moralist to die.

लिखे हैं नाम इन क़ब्रोंपै गो कावाक[4] हर्फ़ोंमें
मगर भूले हुएको ठीक रस्ता ये बताते हैं
ज़ियादा इससे बढ़कर और क्या होगा अगर सोचें
कि जो मरनेसे नावाक़िफ़ हैं रस्ता सीख जाते हैं

22

For who, to dumb Forgetfulness a prey,
This pleasing anxious being e'er resign'd,
Left the warm precincts of the cheerful day,
Nor cast one longing ling'ring look behind ?

[1]अस्थि-पंजर [2]घृणासे [3]क़ब्रपर लगे हुए पत्थर [4]टेढ़े-मेढ़े अक्षरोंमें

जो आया है जहाँमें याँसे जाना है उसे एक दिन
ये होना है कोई चाहेगा दिलसे या न चाहेगा
मगर जाते हुए फिरकर न देखे यह नहीं मुमकिन
दिलोंसे याद भी मिट जाय ये हाशा[१] न चाहेगा

23

On some fond breast the parting soul relies,
Some pious drops the closing eye requires;
Ev'n from the tomb the voice of Nature cries,
Ev'n in our ashes live their wonted fires.

कोई ज़ानू[२] किसीका ढूँढ़ता है दम निकलनेको
कि देखे अश्क गिरते चाहनेवालेके दामनमें
किसीकी है ये ख़्वाहिश दोस्त काँधा दें जनाज़ेको
फिर उसपर फ़ातेहाकी आरज़ू है कुंजे-मदफ़नमें[३]

24

For thee who mindful of th' unhonour'd Dead
Dost in these lines their artless tales relate;
If chance by lonely Contemplation led,
Some kindred spirit shall inquire thy fate,

हक़ीक़त ग़ौरसे देखी जो इन सब मरनेवालोंकी
तो ऐसा ही नज़र आने लगा अंजामकार अपना
उन्हींकी तरह जैसे मिल गए हैं ख़ाकमें हम भी
यूँ ही पुरसाने-हाल[४] आ निकला है एक दोस्तदार अपना

[१]कदापि [२]ज़ानू=जाँघ [३]क़ब्रका कुंज [४]हाल पूछनेवाला

25

Haply some hoary-headed swain may say,
"Oft have we seen him at the peep of dawn,
Brushing with hasty steps the dews away,
To meet the sun upon the upland lawn.

ये उससे एक दहक़ाने-कोहनसाल[1] आके कहता है
कि हाँ हाँ ख़ूब हम वाक़िफ़ हैं देखा है उसे अक्सर
फिर इसके बाद दिल ही दिलमें कुछ ग़म खाके कहता है
कि अब तक फिरता है आँखोंमें फिरना उसका सब्ज़ापर

26

"There at the foot of yonder nodding beech
That wreathes its old fantastic roots so, high,
His listless length at noontide would he stretch,
And pore upon the brook that babbles by.

वो उसका तूरके तड़के इधर गुलगश्तको[2] आना
वो पौ फटनेसे पहले आके फिरना सब्ज़ाज़ारोंमें
वो कुछ कम दिन रहे उसका लबे-जू-को[3] तरफ़ जाना
वो उसका मुस्कराना देखकर शोर आबशारोंमें[4]

27

"Hard by yon wood, now smiling as in scorn,
Mutt'ring his wayward fancies he would rove;
Now drooping, woeful wan, like one forlorn,
Or craz'd with care, or cross'd in hopeless love.

[1]बूढ़ा किसान [2]बाग़ में टहलनेके लिए [3]तालाबके किनारे [4]झरने

कभी ऐसी हँसी लबपर कि ज़ाहिर जिससे कुछ नफ़रत
और उसके साथ ही कुछ ज़ेरे-लब कहते हुए जाना
कभी त्योरी चढ़ाई, मुँह बनाए रंजकी तस्वीर
कि जैसे दिलपै सद्मा है ज़बाँ जिससे है बेगाना

28

"One morn I miss'd him on the custom'd hill,
Along the heath and near his fav'rite tree;
Another came; nor yet beside the rill,
Nor up the lawn, nor at the wood was he;

ग़रज़ क्या-क्या कहूँ एक रोज़का ये ज़िक्र है साहब
कि इस मैदाँमें फिरते सुब्हदम उसको नहीं देखा
हुआ फिर दूसरा दिन और नज़रसे वो हुआ ग़ायब
ख़याबाँमें[1] उसे पाया न दरियापर कहीं देखा

29

"The next, with dirges due in sad array
Slow thro' the church-way path we saw him born.
Approach and read (for thou canst read) the lay
Grav'd on the stone beneath you aged thorn."

फिर उसके तीसरे दिन देखता क्या हूँ जनाज़ेको
लिये आते हैं सब पढ़ते हुए कलमा शहादतका[2]
तुम्हें पढ़ना तो आता होगा आओ पाससे देखो
ये इसकी क़ब्र है और ये किताबा संगे-तुरबतका[3]

[1]बाग़ में [2]सात कलमोंमें से मुसलमानोंका पहला कलमा
[3]क़ब्रके पत्थर

31

Here rests his head upon the lap of Earth,
A youth to Fortune and to Fame unknown :
Fair Science frown'd not on his humble birth,
And Melancholy mark'd him for her own.

अब आग़ोशे-लहदमें[१] सो रहा है चैनसे कैसा
गया अफ़सोस लेकिन ये जवाँ नाकाम दुनियासे
दिखाया जाह-ओ-शोहरतने[२] न भूलेसे भी मुँह अपना
फिर ऐसे नामुरादोंको भला क्या काम दुनियासे

31

Large was his bounty, and his soul sincere,
Heav'n did a recompense as largely send:
He gave to Mis'ry all he had, a tear,
He gained from Heaven ('twas all he wish'd) a friend

हर एकके दर्द-दुखसे इसको रहता था सदा मतलब
हुआ मुमकिन तो यारी की नहीं तो अश्कबारी की[३]
दिया दस्ते-तहीके[४] साथ तीनतमें[५] करम यारब
मैं तेरी शानके क़ुरबान क्या अच्छी तलाफ़ी[६] की

32

No farther seek his merits to disclose,
Or draw his frailties from their dread abode,
(There they alike in trembling hope repose),
The bosom of his Father and his God.

[१]क़ब्रके आलिंगनमें [२]नाम, बड़ाई [३]आँसू बहाना
[४]ख़ाली हाथ [५]प्रकृति [६]पूर्ति

ख़ुदा बख़्शे उसे बस दोस्तका रहता था वह जोया[१]
तो निकला दोस्त एक आख़िर ख़ुदावन्दे-करीम उसका
अब उसके नेक-ओ-बदका ज़िक्र करना ही नहीं अच्छा
कि रोशन है ख़ुदापर आलमे उम्मीद-ओ-बीम उसका

[१] खोजमें

राग-विराग

सम्पादक : प्रो० रघुपतिसहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह संग्रह भी हिन्दी पाठकोंके लिए ही तैयार किया गया है।

उर्दू-कविताओंकी इस फूलमालामें प्रेमकी चुटीली कहानियाँ भी मिलेंगी एवं नीति और वैराग्य-पूर्ण उक्तियाँ भी। भर्तृहरिने जिस प्रकार श्रृंगार-शतक, वैराग्य-शतक और नीति-शतक एक ही सुन्दर ग्रंथमें एकत्रित कर दिये उसी प्रकार इस पुस्तकमें उर्दूकी भी ऐसी ही जगत-प्रसिद्ध कवितायें संग्रह कर दी गई हैं। भूमिका और टिप्पणी भी साथ हैं।

उर्दूकी जगतप्रसिद्ध मसनवियोंको हिन्दीमें टिप्पणी सहित पढ़कर आनन्द लेनेकी यह अनुपम पुस्तक है; जिसमें हर कविता फूलोंकी एक क्यारी है और हर पंक्तिमें कभी प्रेमकी, कभी वैराग्यकी कलियाँ चटकती चली गई हैं। उर्दू ग़ज़लोंमें स्त्रीका चरित्र-चित्रण नहीं मिलता या बहुत कम मिलता है। स्त्रीका चरित्र और उसकी आत्मा देखनेके लिए इस पुस्तकमें संग्रहीत उर्दू, मसनवियोंका पढ़ना अति आवश्यक है।

मूल्य केवल ढाई रुपया

ज़ंजीरें टूटती हैं

सम्पादक : प्रो० रघुपतिसहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी

उर्दू कविताओंके इस संकलनमें लगभग ५० ऐसे उर्दू कवियोंकी रचनाएँ मिलेंगी जिन्होंने नई उर्दू कवितामें इस युगका आत्म-दर्शन कराया है और कलाका दामन कहीं हाथसे छूटने नहीं पाया। हिन्दी पाठकोंको आधुनिक उर्दू कवितासे सम्पूर्णतया परिचय करा देनेवाला यह संग्रह सर्वथा नवीन और प्रगतिशील है। भाषा शुद्ध खड़ी बोली है, और प्रायः सबकी सब कविताएँ पिछले १० वर्षोंमें लिखी गई हैं। इन्हीं दस वर्षोंमें स्वतंत्रताकी प्रचंड लहर दौड़ी और भारतकी दासताकी ज़ंजीरें टूटते-टूटते टूटीं।

वर्तमान जीवनका प्रतिबिम्ब और नवीन विचारधाराओंसे ओत-प्रोत यह संकलन, निराश व निष्प्राण नवयुवकोंको नवजीवन देकर उत्साहित कर सकता है। देशके नवयुवकोंके लिए अनुपम संकलन, भूमिका और टिप्पणी सहित।

मूल्य केवल ढाई रुपया

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.